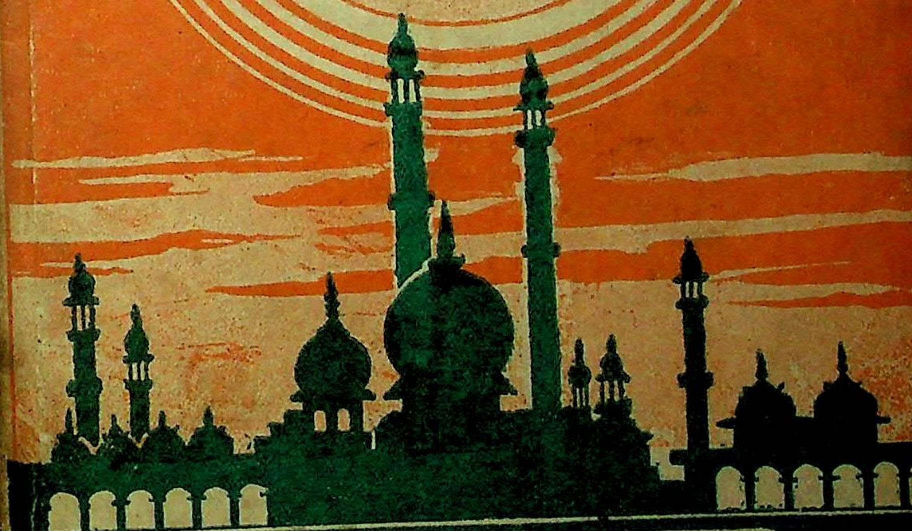
क़ुरआन का परिचय

या

अमपारा म॰ तर्जमा व तश्रीह

अज़

मौलाना अबू मुहम्मद इमामुद्दीन
रामनगरी



इस्लामी साहित्य सदन
रामनगर, बनारस स्टेट।

क़ुर्आन का परिचय

या

अमपारा मऽ. तर्जमा व तशरीह



अज़

मौलाना अबू मुहम्मद इमामुद्दीन

रामनगरी



पब्लिशर

इस्लामी साहित्य सदन

रामनगर, बनारस स्टेट।

क़ीमत १॥)

कुछ ज़रूरी बातें

अरबी इबारत हिन्दी में सहीह नहीं लिखी जा सकती लेकिन सहीह लिखने की जितनी कोशिश हो सकती थी वह की गई है। अगर मेरे पास प्रेस होता और मैं ज़रूरत के मुताबिक़ टाइप बनवा सकता तो इससे भी ज़ियादा सहीह इबारत हो सकती थी लेकिन मेरी माली हालत ऐसी नहीं है कि मैं प्रेस खरीद सकूं इन दिक़्क़तों के होते हुए भी हिन्दी में अमपारा छापने की वजहें यह हैं।

१—बहुत से ग़ैर मुस्लिम भाई क़ुर्आन शरीफ़ की तालीम से वाक़िफ़ होना चाहते हैं ख़ुद हमारा भी फ़र्ज़ है कि हम क़ुर्आन की तालीम को उन तक पहुंचाएं। उनके लिए सिर्फ़ तर्जमा छापना मुनासिब न था, फिर उन में बहुत से ऐसे हैं जो तर्जमा के साथ अस्ल इबारत को भी देखना चाहते हैं, उनके लिए अस्ल इबारत हिन्दी में छापने के सिवा और कोई सूरत न थी

२—इसे मुसलमानों की बद क़िस्मती समझिए या उलमा की ग़फ़्लत कि मुल्क में लाखों मुसल्मान हैं जो न अरबी में क़ुर्आन पढ़ सकते हैं न उर्दू से वाक़िफ़ हैं वह सिर्फ़ हिन्दी जानते हैं और हिन्दी ही में अमपारा, पंजसूरा, दुआ, वज़ीफ़ा और नमाज़ वग़ैरह सब चीज़ें पढ़ते हैं। ऐसे मुसल्मानों के लिए बम्बई, कलकत्ता, देहली, और दूसरे शहरों के ताजिर अमपारा और पंज सूरह वग़ैरह तहरीफ़ की हद तक ग़लत छाप कर बेच रहे हैं। उनको गुनाह से बचाने के लिए इसके सिवा और कोई तरीक़ा नहीं है कि उनकी ज़रूरत की चीज़ें मुम्किन हद तक सहीह हिन्दी में छाप दी जाएं।

३—जैसा कि हम बता चुके हैं अरबी इबारत हिन्दी में सहीह नहीं लिखी जा सकती न हर ज़रूरत के टाइप मौजूद हैं फिर भी जो थोड़ी सी कोशिश हो सकी है वह यह है। अरबी के बहुत से हुरूफ़ हिन्दी में नहीं हैं उन में से कितने हुरूफ़ ऐसे हैं जिनकी

आवाज़ एक दूसरे से मिलती जुलती है, इन सब का फ़र्क़ ज़ाहिर करने के लिए हमें मुनासिब चीज़ें नहीं मिल सकीं। इस सिलसिले में मैं ने थोड़ी सी कोशिश यह की है कि ऐन (ع) हे (ح) ज़्वाद (ض) और तो (ط) की पहचान के लिए अ़, ह़, द़, और त़ के नीचे नुक़्ते लगा दिए हैं। से (ث) सीन (س) और स्वाद (ص) का फ़र्क़ ज़ाहिर करने के लिए सिर्फ़ स्वाद (ص) के नीचे नुक़्ता लगाया गया है। ग़ैन (غ) फ़े (ف) और क़ाफ़ (ق) के ज़ाहिर करने के लिए भी ग़, फ़, क़ के नीचे नुक़्ते लगा दिए गए हैं। ज़ाल (ذ) ज़े (ز) और ज़ो (ظ) का फ़र्क़ ज़ाहिर नहीं हो सका, जहां लफ़्ज़ों के नीचे ऐन (ع) और हम्ज़ा (ء) हैं वहां ऐन के लिए यह निशान ऽ, और हम्ज़ा के लिए ऽ लगाया गया है। हो सकता है कि कहीं कहीं नुक़्ते रह भी गए हों।

छोटी बड़ी मदों के लिए २ और ३ के अदद डाले गए हैं जिस हर्फ़ के सामने २ का अदद हो उसे कुछ खींच कर पढ़ना चाहिए और जिस हर्फ़ के सामने ३ का अदद हो उसे कुछ और भी खींच कर पढ़ें (सूरह 'नबा' में मदों का इंतिज़ाम नहीं हो सका है) दो निशानों के बीच में जो सिलसिलेवार गिन्तियां लिखी हुई हैं वह आयतों का निशान हैं, जिस आयत के आख़िरी हर्फ़ के नीचे हलन्त यानी यह निशान ् लगा हुआ है वहां रुक कर सांस तोड़ देना चाहिए। आयत के इलावा बीच में जिस हर्फ़ पर हलन्त लगा है वह हिन्दी क़ाएदे के मुताबिक़ आधा पढ़ा जाएगा।

४— अरबी न जानने वाले जो मुसल्मान इस पारे से फ़ायदा उठाना चाहें वह एक बार उसे किसी ऐसे शख़्स को सुना लें जो अरबी में क़ुरआन शरीफ़ पढ़ा हुआ है। हर मुसल्मान को अरबी में क़ुरआन शरीफ़ पढ़ने की कोशिश करनी चाहिए, और अपने बच्चों को तो जैसे भी हो अरबी में क़ुरआन शरीफ़ पढ़ाना चाहिए।

❀ बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ❀

दीबाचा

क़ुर्आन शरीफ़ के आख़िरी पारे का जो "अम पारा" के नाम से मशहूर है यह तर्जुमा हिन्दी में छप रहा है। इसलिये इसे वह मुसल्मान भी पढ़ेंगे जो सिर्फ़ हिन्दी ही जानते हैं और हिन्दी जानने वाले वह ग़ैर मुस्लिम भाई भी जो इस्लाम को समझना और क़ुर्आन की तालीम से वाक़िफ़ होना चाहते हैं। ऐसे मुसल्मान और ग़ैर मुस्लिम भाइयों के लिये नीचे लिखी हुई बातों का समझ लेना इस्लाम और क़ुर्आन शरीफ़ की तालीम के समझने में बहुत मदद देगा।

इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ीदे (विश्वास) हैं और इन्हीं तीनों अक़ीदों से बाक़ी अक़ीदे और सारे अहकाम (आदेश) निकले हैं।

ख़ुदा का अक़ीदा :—आस्मान, सूरज, चांद, सितारे, ज़मीन, समुन्दर, पहाड़, आदमी, पेड़ पौदे और दूसरी सारी चीज़ें आप से आप पैदा नहीं हो गई हैं, सब चीज़ों का एक पैदा करने वाला है और वह ख़ुदा है।

ख़ुदा को किसी ने पैदा नहीं किया है, वह हमेशा से है और हमेशा रहेगा, उसमें कोई ऐब और कमी नहीं है। वह ख़ूबी ही ख़ूबी और कमाल ही कमाल है। न वह किसी का मुहताज है और न किसी काम में बेबस, वह सब से बेपर्वा और बेनियाज़ है। वह जो चाहे कर सकता है, और जो चाहता है, करता है। सब कुछ उसी के इख़्तियार से हो रहा है। कोई उसे रोकने टोकने

वाला नहीं। वही सब को रोज़ी देता है और वही सब को जिलाता मारता है। उससे कोई चीज़ छिपी नहीं है न छिप सकती है। उसके लिये खुला और छिपा सब बराबर है। वह दिलों के भेद और आंखों के गुनाह को भी जानता है। कोई उसकी बराबरी का नहीं, न कोई उसके मर्तबे और इख़्तियार में उसका साझी है, वह अकेला है।

ख़ुदा के सिवा कोई पूजा और इबादत के लायक़ नहीं है, उसीने सबको पैदा किया है इसलिये वही इस लायक़ है कि उसकी पूजा और इबादत की जाये और उसके हुक्मों को माना जाये। सारी मख़्लूक़ अपनी फ़ित्रत (प्रकृति) में उसी की हुक्म बर्दार है।

पैग़म्बरी का अक़ीदाः—ख़ुदा ने इन्सान को पैदा करके आज़ाद नहीं छोड़ दिया है कि वह जिस तरह चाहे रहे सहे और उसकी पैदा की हुई चीज़ों को जिस तरह चाहे काम में लाये और उनसे फ़ाइदा उठाये। ख़ुदा ने जिस तरह इन्सान के लिये ज़िन्दगी गुज़ारने का सामान किया उसी तरह उसने इस बात की तालीम और हिदायत का भी इन्तिज़ाम किया कि आदमी दुन्या में कैसे रहे सहे, और उसकी पैदा की हुई चीज़ों को किस तरह काम में लाये ताकि वह आराम, इत्मीनान और इन्सानियत के साथ ज़िन्दगी गुज़ार सके। इसके लिये ख़ुदा ने आदमियों में से कुछ को अपना रसूल और पैग़म्बर बनाया, और अपनी तरफ़ से उनके पास इन्सान के रहने सहने के उसूल और अहकाम (आदेश) भेजता रहा। हज़रत आदम जिन से इन्सान की नस्ल चली ख़ुदा के पहले पैग़म्बर थे, उनके बाद उनकी औलाद में बराबर ख़ुदा के पैग़म्बर और रसूल होते रहे जो दुन्या के हर मुल्क, हर क़ौम और हर

ज़माने में हुए, ख़ुदा के उन पैग़म्बरों ने पूरी सच्चाई और पूरी कोशिश के साथ ख़ुदा के अहकाम और आदेश आदमियों तक पहुँचाये।

हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ख़ुदा के अख़िरी पैग़म्बर हैं, आपके बाद न कोई पैग़म्बर होगा और न ख़ुदा की तरफ़ से कोई किताब आएगी, क्योंकि क़ुर्आन ख़ुदा की आख़िरी किताब है. आप की पैग़म्बरी और क़ुर्आन शरीफ़ सारी दुन्या की क़ौमों के लिये और क़ियामत तक के लिये है। १४०० बरस की दुन्या की तारीख़ गवाह है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद न कोई पैग़म्बर हुआ न ख़ुदा की तरफ़ से कोई किताब आई।

आख़िरत का अक़ीदाः—इस्लाम का तीसरा बुन्यादी अक़ीदा यह है कि एक रोज़ आस्मान और ज़मीन का यह कारख़ाना तहस नहस कर दिया जायेगा, यह बड़ा ही भयानक और डरावना दिन होगा, सूरज चांद और सितारे टूट जावेंगे, समुन्दर खौल उठेंगे, पहाड़ धुनी हुई ऊन की तरह उड़ने लगेंगे, आदमी और सारे जानदार उस दिन की हौलनाकी को सह न सकेंगे और सब के सब मर जायेंगे, एक ख़ुदा की ज़ात बाक़ी रह जाएगी, इसके बाद वह दूसरा आस्मान और ज़मीन पैदा करेगा और हज़रत आदम से लेकर क़ियामत तक जितने इन्सान पैदा होकर मरे होंगे उन सब को दोबारा ज़िन्दा कर देगा और उन सब को अपने सामने बुलायेगा और उन से दुन्या के कामों का रत्ती रत्ती भर हिसाब लेगा, जिन लोगों ने उसकी ख़ुशी का ध्यान रखा होगा और पैग़म्बरों के ज़रीआ उसके भेजे हुए ज़ाब्ते और क़ानून के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारी होगी उन को जन्नत में जगह देगा जिस में आराम और राहत के ऐसे ऐसे सामान होंगे

जो किसी के ख्याल में भी नहीं आ सकते। और जिन लोगों ने उस की ख़ुशी और मर्ज़ी की पर्वा न की होगी, उसके भेजे हुए उसूल और क़ानून को तोड़ कर अपनी पसंद और ख़ाहिश की ज़िन्दगी गुज़ारी होगी उनको इस बग़ावत और बेहुक्मी की सज़ा में दोज़ख़ में डाल देगा, उस में तक्लीफ़ और मुसीबत का ऐसा ऐसा सामान होगा जो किसी के ख्याल में भी नहीं आ सकता।

क़ुर्आन शरीफ़ की पूरी तालीम और हिदायत ऊपर के तीन अक़ीदों पर फैली हुई है और क़रीब क़रीब क़ुर्आन के हर सफ़्हे पर इन तीनों अक़ीदों की बातें मिली जुली पाई जाती हैं।

क़ुर्आन की ख़ास ख़ास बातें यह हैं—

क़ुर्आन की ख़ास ख़ास बातें

१—आस्मान, ज़मीन, सूरज, चांद, सितारे, दिन, रात, हवा, पानी, बादल, बारिश, दरिया, पहाड़, इन्सान, जानवर, अनाज, फूल, फल वग़ैरह से ख़ुदा की हस्ती (अस्तित्व) और उसकी क़ुदरत और हिक्मत की दलीलें और सुबूत, आसमान कैसा साफ़ और मज़्बूत बना हुआ दिखाई देता है ! ज़मीन कैसी फैली और बराबर बिछी हुई मालूम होती है ! सूरज और चांद कैसे हिसाब से निकलते और डूबते हैं ! हवा किस तरह बादल को एक जगह से दूसरी जगह पहुंचा देती है। उन से पानी कैसे बरसता है, पानी से किस तरह अनाज और फूल फल पैदा होते हैं जिन से आदमी और जानवर पलते और जीते हैं। ख़ुद आदमी कितने गन्दे पानी की एक बूंद से पैदा होता है, और वह बड़ा हो कर इल्म और अक़्ल के कितने ऊँचे दर्जे पर पहुँच जाता है। कैसी कैसी चीज़ों का पता लगाता, हिक्मत और साइंस के कैसे कैसे भेद मालूम करता, कैसी कैसी चीज़ें बनाता और कैसे बड़े बड़े काम

करता है।

यह और दूसरी सारी चीज़ें जिन को आदमी जानता है और जिन को नहीं जानता किसी बानाने वाले के बग़ैर नहीं बन गईं और जो इन चीज़ों का पैदा करने वाला है वही आस्मान और ज़मीन के सारे कारख़ाने को चला रहा है, वह अपने हक़ और इख़्तियार में अकेला और अपनी शान और क़ुदरत में निराला है, किसी बात में कोई उसका शरीक और उसकी बराबरी का नहीं।

२—जब सब कुछ ख़ुदा ही का बनाया हुआ है, वही सब का मालिक है, सब जगह उसी का हुक्म चल रहा है और हर चीज़ उसी की मर्ज़ी के मातहत काम कर रही है तो इन्सान को भी उसी का हुक्म बर्दार और उसी का बन्दा बन कर रहना चाहिये, इसी में उसकी दुन्या और आख़िरत की भलाई है।

३—चूंकि ख़ुदा सब का ख़ालिक़ और मालिक है और सारी ही चीज़ें उसकी मख़्लूक़ (पैदा की हुई) और महकूम (अधीन) हैं इस लिये इससे बढ़ कर ग़लत और बुरी बात कोई नहीं हो सकती कि उसके हक़ और इख़्तियार में किसी को शरीक किया जाये, किसी को उसकी बराबरी का माना जाये और उसके साथ किसी और की पूजा बंदिगी की जाये, सूरज हो या चांद सितारे, आग हो या पानी, जानवर हों या दरख़्त, फ़रिश्ते हों या जिन, पैग़म्बर हों या अवतार, इमाम और वली हों या ऋषि मुनि, कोई भी इबादत और पूजा के लायक़ नहीं, ख़ुदा के सिवा किसी और को इस लायक़ समझना क़ुर्आन के नज़्दीक 'शिर्क' है, ख़ुदा को शिर्क से ज़्यादा कोई चीज़ नापसंद नहीं, वह इसे अपने ख़िलाफ़ बग़ावत क़रार देता है। क़ुर्आन शरीफ़ में सब से ज़्यादा ज़ोर ख़ुदा की तौहीद (एकत्व) पर दिया गया है, और सब से ज़्यादा बुराई कुफ़्र और शिर्क की बयान की गई है।

४—पैग़म्बरी और ख़ुदा की तरफ़ से तालीम और हिदायत आने की ज़रूरत पर दलीलें दी गई हैं और ख़ुदा के पैग़म्बरों के हालात बयान किये गये हैं कि वह कितने नेक इन्सान थे और उन को इन्सानों की भलाई और ख़ैरख़ाही की कितनी फ़िक्र थी, फिर यह कि उनको अपनी पैग़म्बरी का कितना सच्चा यक़ीन था, उन्हों ने कितनी लगन और कोशिश से ख़ुदा के पैग़ाम उसके बन्दों तक पहुँचाये, इस फ़र्ज़ के अदा करने में उन्हें कैसी कैसी मुसीबतें झेलनी पड़ीं, लोगों ने उनको झुठलाया, बदनाम किया, हंसी उड़ाई, बुरा भला कहा, उन पर तुहमत लगाई. उनके ख़िलाफ़ गरोह बन्दी की, उनका बाईकाट किया, ढेले पत्थर मारे, बतन छोड़ने पर मज्बूर किया, कितने पैग़म्बरों को जान से मार डाला।

बताया गया है कि हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आपकी क़ौम ने कितना सताया, कितना दुख दिया, किन किन तरीक़ों से आपको झुठलाया, आप पर कैसे कैसे बुहतान बांधे, आपके ख़िलाफ़ लोगों को भड़काया, सारे मुल्क को आपके मुक़ाबिले में खड़ा कर दिया, आप की जान लेने की कोशिश की, यहां तक कि आप अपना वतन छोड़कर मदीना चले गये, फिर भी आप पर चढ़ाई की और बरसों तक आपसे जंग करते रहे। आपने ख़ुदा की राह में सब कुछ झेल लिया, लेकिन अपने फ़र्ज़ से मुंह न मोड़ा, मक्का में जब आप बिलकुल बेबस थे और दुश्मनों का मुक़ाबला न कर सकते थे, और मदीना जाने के बाद भी जब आप थोड़े से मुसल्मानों को साथ लेकर जिनके पास न पेट भर खाने को था न लड़ने के लिये पूरा सामान, दुश्मनों का मुक़ाबला कर रहे थे, ख़ुदा आपको बराबर तसल्ली और दिलासा देता रहा कि कामयाबी आप ही के

लिये है। आख़िर यही हुआ कि ख़ुदा की मदद आना शुरू हुई, मक्का फ़तह हो गया, आपके दुश्मन मर मिट गये या मुसल्मान हो गये और सारे अरब में इस्लाम फैल गया।

५—उन लोगों का हाल जो ख़ुदा और उसके पैग़म्बरों पर ईमान लाये और उनके साथ हर तरह की तक्लीफ़ें और मुसीबतें उठाईं, हज़रत रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सहाबियों (साथियों) को हर तरह की तक्लीफ़ें और मुसीबतें झेल कर भी दीन पर जमे रहने और हज़रत रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का साथ देते रहने की हिदायत, दुनिया में फ़तह और कामयाबी और आख़िरत में निजात और जन्नत की ख़ुश ख़बरी, पैग़म्बरे इस्लाम के साथियों के सच्चे ईमान, उनकी दीनदारी, इबादत, इस्लाम की सच्ची ख़िदमत और जानी व माली क़ुर्बानियों की तारीफ़।

६—उन लोगों के हालात जिन्होंने ख़ुदा और उसके पैग़म्बरों का इन्कार किया, ख़ुदा की तरफ़ से आई हुई तालीम और हिदायत को झुठलाया, और ख़ुदा के पैग़म्बरों और उनके मानने वालों को सताया, इनके बारे में बताया गया है कि यह दुनिया में किन किन सूरतों से ख़ुदा के अज़ाब में गिरफ़्तार हो कर तबाह हुए और आख़िरत में उनको दोज़ख़ के कैसे कैसे अज़ाब भुगतने पड़ेंगे। हज़रत रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के दुश्मनों को डांट फटकार, दुनिया की ज़िल्लत और नाकामी और आख़िरत के अज़ाब की धमकी।

७—क़ियामत का बयान—कि उस रोज़ आसमान, ज़मीन, और दूसरी चीज़ों की क्या हालत होगी, और आदमी कैसी परीशानी और मुसीबत में पड़ा होगा।

८—इस बात की दलीलें कि जिस ख़ुदा ने आसमान, ज़मीन, सूरज, चांद वग़ैरह चीज़ें बना दीं और इन्सान को जब कि पहले वह कुछ न था पैदा कर दिया तो आख़िरत में उसको इन सब का दोबारा पैदा कर देना मुश्किल क्यों होगा ? और इसमें लोगों के लिये अचंभे की क्या बात है ?

९—जन्नत की नेमतों और जहन्नम की तक्लीफ़ों का बयान।

१०—इस बातकी तालीम कि इन्सान को दुन्या की ज़िन्दगी इसी हालत में सुख और शान्ति की ज़िन्दगी हो सकती है जब वह ख़ुदा, रसूल और आख़िरत पर अक़ीदा रखता हो और ख़ुदा की भेजी हुई तालीम और हिदायत के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारता हो। जब तक इन्सान का यह विश्वास न हो कि ख़ुदा मौजूद है, वह हमारे हर ज़ाहिर और छुपे काम को देख रहा है एक रोज़ हमें उसके सामने जाना और अपने रत्तो रत्ती भर काम का हिसाब देना है, और यह कि अगर हमने उसको ख़ुश और अपने हिसाब को पाक और साफ़ न रखा तो हमारी आख़िरत बर्बाद और नष्ट हो जायेगी जिसकी मुसीबतें और विपत्तियां कभी ख़त्म होने वाली नहीं, उस वक्त तक आदमी ज़ुल्म और अत्याचार, फ़साद और उपद्रव, बेईमानी और बदमुआमलगी, ज्यादती और बे'साफ़ी से बाज़ नहीं आसकता, और दुन्या से बेईमानी, बेइन्साफ़ी, लूट खसोट जंग और लड़ाई ख़त्म नहीं हो सकती।

इन्सान की भलाई इसी में है कि वह ख़ुदा को अपना हाकिम और उसके क़ानून को अपनी ज़िन्दगी का क़ानून माने। एक हाकिम और एक क़ानून की हुकूमत ही से इन्सानों में एकता, बराबरी, भाई चारा और अद्ल और इन्साफ़ क़ायम हो सकता है, यही इस्लाम है। हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) से लेकर हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तक

दुन्या की सारी क़ौमों सारे मुल्कों और सारे ज़मानों में आने वाले तमाम पैग़म्बरों ने इन्सानों को यही पैग़ाम दिया कि ख़ुदा को मानो और उसके क़ानून पर चलो, इसलिये ख़ुदा की तरफ़ से सारी दुनिया के इन्सानों के लिये आया हुआ सब से पहला और सच्चा दीन यही इस्लाम है। यह तमाम तालीमें और सारी हिदायतें क़ुर्आन शरीफ़ में इस तरह मिली जुली हैं कि क़ुर्आन शरीफ़ का कोई सफ़हा इनसे ख़ाली न मिलेगा और एक बात की तालीम में दूसरी बातों की तालीमें भी मौजूद होंगी।

क़ुर्आन शरीफ़ में जिस तरह ख़ुदा और उसके रसूल को मानने और उनकी तालीम और हिदायत पर चलने का हुक्म है इसी तरह ख़ुदा और रसूल को मानने और उनकी तालीम और हिदायत पर चलने का नाम ईमान और इस्लाम है, और इसके ख़िलाफ़ जो कुछ है वह कुफ़्र और बेदीनी है।

इन सारी बातों को अच्छी तरह ध्यान में रख कर क़ुर्आन शरीफ़ पढ़ा जायेगा तो ख़ुदा से उम्मीद है कि वह उसके समझने में आसानी पैदा कर देगा।

फ़रिश्ते

क़ुर्आन शरीफ़ में फ़रिश्तों का ज़िक्र आया है, अम पारे की सूरहों में भी आयेगा, इसलिये फ़रिश्तों के बारे में इस्लामी अक़ीदे (विश्वास) को समझ लेना चाहिये। फ़रिश्ते भी ख़ुदा की एक मख़्लूक़ हैं, उनकी पैदाइश नूर (प्रकाश) से हुई है, वह न मर्द हैं न औरत, न उनको देखा जा सकता है और न उनकी हक़ीक़त (वास्तविकता) मालूम की जा सकती है। हमें सिर्फ़ उनके वस्फ़ (गुण) बताये गये हैं, और उन पर अक़ीदा, रखना ज़रूरी ठहराया गया है, वह ख़ुदा के बड़े हुक्म बर्दार बन्दे हैं, उसके हुक्म के ख़िलाफ़ कोई काम नहीं

करते। ख़ुदा के पैग़म्बरों ने फ़रिश्तों के बारे में हमेशा यही तालीम दी, लेकिन मुश्रिक क़ौमें उनको देवी देवता और ख़ुदा की ख़ुदाई में शरीक मानती हैं, और ख़ुदा के साथ उनकी भी पूजा भक्ति करती हैं, हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पहले अरब के लोग भी फ़रिश्तों के बारे में यही अक़ीदा रखते थे और उनकी पूजा करते थे, उनका आम अक़ीदा यह था कि फ़रिश्ते ख़ुदा की बेटियां हैं, क़ुर्आन शरीफ़ में मुश्रिकों के सारे अक़ीदों को ग़लत और शिर्क ठहराया गया है।

ख़ुदा काएनात (विश्व) के इन्तेज़ाम के लिए किसी का मुहताज नहीं, वह ख़ुद सब कुछ कर सकता है लेकिन उसने आस्मान और ज़मीन का जो कारख़ाना बनाया है उसमें हर काम वसीला और ज़रीआ (साधन) से हो रहा है। वह मर्द और औरत के जोड़े के बग़ैर इन्सान पैदा कर सकता था और मां बाप के बग़ैर उसको पाल सकता था। सूरज, चांद, और सितारों के बग़ैर वह सारे काम हो सकते थे जो इनके ज़रीआ होते हैं। बादल के बग़ैर बारिश हो सकती थी और पानी के बग़ैर ज़मीन से नाज और फूल फल पैदा हो सकते थे, लेकिन इन सब कामों के लिये ख़ुदा ने वसीले और ज़रीए मुक़र्रर कर दिए हैं। इसी तरह बहुत से कामों के लिए ख़ुदा ने फ़रिश्तों को ज़रीआ बनाया है और वह काम उन्हीं से ले रहा है। क़ुर्आन और हदीस के मुताबिक़ फ़रिश्तों के काम यह हैं:—

१—सबसे बुज़ुर्ग (महत्तर) फ़रिश्ते हज़रत जिब्रील हैं, ख़ुदा के पैग़म्बरों के पास ख़ुदा के अहकाम (आज्ञाएँ) पहुँचाने का काम इन्हीं के सिपुर्द था, यह कभी कभी पैग़म्बरों के दुश्मनों के मुक़ाबले में पैग़म्बरों की मदद के लिए भी आते थे, और कभी कभी ख़ुदा के नाफ़र्मानों पर इनके ज़रीआ अज़ाब भी भेजा जाता था।

२—कुछ फ़रिश्ते हवा, बादल बारिश, और रोशनी के इन्तेज़ाम पर, कुछ रोज़ी पहुँचाने के इन्तेज़ाम पर और कुछ जान क़ब्ज़ करने पर मुक़र्रर हैं।

३—हर इन्सान के साथ दो फ़रिश्ते रहते हैं, एक फ़रिश्ता नेक काम लिखता है, दूसरा फ़रिश्ता बुरे काम, इनको "किरामन-कातिबीन" कहते हैं ।

४—कुछ फ़रिश्तों के ज़िम्मा इन्सानों की आफ़तों और बलाओं से हिफ़ाज़त करने का काम सिपुर्द है, जिन बूढ़ों, बच्चों, कमज़ोरों और दूसरे लोगों के बारे में ख़ुदा का हुक्म होता है यह फ़रिश्ते उनकी हिफ़ाज़त करते हैं। कुछ फ़रिश्ते नेक इन्सानों के लिये ख़ुदा से भलाई और बख़्शिश की दुआ मांगते हैं और बुरे इन्सानों के लिये बद दुआ करते रहते हैं।

५—कुछ फ़रिश्ते जन्नत के इन्तेज़ाम पर मुक़र्रर हैं और कुछ फ़रिश्ते दोज़ख़ के इन्तेज़ाम पर ।

६—कुछ फ़रिश्ते ख़ुदा के अर्श (सिंहासन) के उठाने वाले हैं (ख़ुदा का अर्श कैसा है और वह किस तरह काम में आता है इसकी हक़ीक़त (वास्तविकता) को हम किसी तरह समझ नहीं सकते)।

७—कुछ फ़रिश्ते ख़ुदा की इबादत और उसकी तस्बीह और तक़दीस (पवित्रता वर्णन) करते रहते हैं।

क़सम

ख़ुदा ने क़ुरआन शरीफ़ में कसमें खाई हैं अमपारे में भी क़समें हैं। बाज़ लोगों का ख़्याल है कि क़सम खाना कुछ अच्छी चीज़ नहीं, क़सम खाने वाला इसी सूरत में कसम खाता है जब वह समझता है कि उसकी बात न मानी जायेगी; यह ख़्याल दुरुस्त नहीं, क़सम खाना इसी सूरत में बुरा है जब बुरी ग़रज़ से क़सम खाई जाये। क़सम अपनी बात पर ज़ोर देने के लिए भी खाई जाती है, बात भी सच्ची होती है और बात कहने वाला भी

सच्चा होता है और वह क़सम खाकर बात कहता है तो बात में ज़ोर पैदा हो जाता है और सुनने वालों पर इस का बड़ा असर पड़ता है।

बाज़ लोग समझते हैं कि क़सम तो अपने से बड़ी चीज़ को खाई जाती है और ख़ुदा तो ख़ुद सबसे बड़ा है फिर उसने क़सम क्यों खाई और इन्सानों की तरह उसे क़सम खाने की ज़रूरत क्या थी ? ऐसा समझना भी दुरुस्त नहीं। मुसल्मानों के सिवा दूसरे लोगों में अपने से छोटी और प्यारी चीज़ों की क़सम खाने का रिवाज है जैसे "अपनी जान की क़सम, तुम्हारे सर की क़सम" वग़ैरह अरब के लोग घोड़े, तलवार, शहर जैसी चीज़ों की क़सम खाया करते थे। क़ुर्आन शरीफ़ इन्सानी ज़बान में उतरा है, इसलिये उन्हीं की बोल चाल का तरीक़ा इस्तेमाल किया गया है।

क़ुर्आन के आलिमों ने क़समों के बारे में जो कुछ लिखा है उसका ख़ुलासा यह है—

१—दूसरी ज़बानों की तरह अरबी ज़बान में भी ज़रूरत के मुताबिक़ क़सम खाकर बात करने का रिवाज था और क़ुर्आन भी अरबी ज़बान में उतरा इसलिये इसी रिवाज के मुताबिक़ क़समें खाई गई हैं।

२—क़ुर्आन की सारी क़समें ताज़ीमी (आदर सूचक) ही नहीं हैं इस्तिदूलाली (प्रमाण सूचक) भी हैं।

यानी जिन चीज़ों की क़सम खाई गई है वह उन चीज़ों की सच्चाई की दलील और सबूत के तौर पर जानदार और बेजान सभी तरह की चीज़ों की क़समें खाते थे। अरबी शाइरी में आस्मान, ज़मीन, हवा, ज़माना, शहर, घोड़े, सवार वग़ैरह की क़समें मौजूद थीं। वही तरीक़ा क़ुर्आन शरीफ़ में भी इख़्तियार

किया गया है। ख़ुद क़सम में शहादत और सबूत का मनशा मौजूद है यानी आदमी क़सम उसी वक़्त खाता है जब उसके पास कोई गवाह या सबूत नहीं होता तो इसका मतलब यही है कि क़सम या गवाही अस्ल में एक ही चीज़ है।

२—बाज़ जगहों पर कुछ चीज़ों की इसलिये भी क़सम खाई गई कि लोग उनकी बड़ाई और फ़ाइदे पर ग़ौर करें और सोचें कि इन चीज़ों का पैदा करने वाला कैसी क़ुद्रत और हिक्मत वाला है।

ख़ुदा ने तीन चीज़ों की क़सम खाई है, एक ख़ुद अपनी ज़ात और सिफ़ात (सत्ता और गुण) की, दूसरे अपनी क़ुद्रत और हिक्मत की, तीसरे अपनी पैदा की हुई चीज़ों की, अगर सोचा जाये तो तीसरी क़िस्म की चीज़ें भी दूसरी क़िस्म में दाख़िल हैं।

जिन चीज़ों के बारे में क़सम खाई गई है वह ख़ास तौर पर तीन हैं, एक ख़ुदा की हस्ती और उसकी तौहीद (सत्ता और एकत्व) दूसरी नुबूवत और 'वही' यानी ख़ुदा का पैग़म्बर होना और उसके पास ख़ुदा का पैग़ाम आना, और तीसरी आख़िरत, ख़ुदा ने जहां अपनी ज़ात और सिफ़ात की क़सम खाई है वह ताज़ीमी हैं और बाक़ी चीज़ों की क़सम इस्तिदलाली।

———:o:———

सूरः नबा

[मक्का में उतरी और इसमें ४० आयतें हैं]

ज़रूरी तश्रीह

मक्का के वह लोग जो इस्लाम के मुख़ालिफ़ थे, क़ियामत का इन्कार करते और इस अक़ीदे की हँसी उड़ाते, कहते क्या वाक़ई क़ियामत आयेगी ? कैसे आयेगी ? क्या सचमुच तमाम मरे हुए आदमी उस रोज़ ज़िन्दा हो जायेंगे ? उनसे उनके आमाल का हिसाब किताब होगा और वह अपने आमाल के मुताबिक़ जन्नत और दोज़ख़ में जायेंगे ?

इस सूरह में उन लोगों को जवाब दिया गया है कि क़ियामत आकर रहेगी । किसी के न मानने और हंसी उड़ाने से क़ियामत का आना झूठ नहीं हो जायेगा, हंसी उड़ाने वाले ज़िन्दगी के थोड़े से दिन पूरे कर लें, मरने के बाद जल्द ही उन पर क़ियामत का मुआमिला खुल जायेगा ।

जिस ख़ुदा ने अपनी क़ुदरत से आस्मान और ज़मीन के इस कारख़ाने को बनाया, उसके लिए उसका बिगाड़ देना और फिर बना देना क्या मुश्किल है ? और जिसने आदमी को इतनी नेऽमतें दीं यह कैसे हो सकता है कि उनको काम में लाने के लिये कोई ज़ाब्ता (नियम) न दे, और आदमी को इस ज़ाब्ते का पाबन्द न बना दे, फिर एक रोज़ यह न देखे कि आदमी ने उसके दिये हुए ज़ाब्ते की कहां तक पाबन्दी की, कहां तक उसकी मर्ज़ी का ध्यान रक्खा, और कहां तक अपनी ख़ाहिशों और दूसरों की मर्ज़ी पर चला ?

क्या आख़िरत का इंकार करने वाले समझते हैं कि उनकी पैदाइश का कोई मक़सद नहा है ? वह खेल तमाशे के तौर पर पैदा कर दिये गये हैं ? वह ख़ुदा की नेऽमतों के जिस तरह चाहें मज़े लूटें उनके बारे

में किसी ज़ाब्ते और पूछ गछ का सिरे से कोई मुआमिला ही नहीं !'

क़ियामत का आना हक़ है, उस रोज़ ख़ुदा के रोब और जलाल का यह हाल होगा कि उसकी मर्ज़ी के बग़ैर कोई ज़बान न खोल सकेगा। दुन्या में ख़ुदा रसूल और आख़िरत का इन्कार करने वाले उस दिन के हाल की सख़्ती देखकर बड़ी हसरत (कामना) के साथ कहेंगे कि क्या अच्छा होता कि हम आदमी न होते मिट्टी होते कि आज के हिसाब किताब और जज़ा सज़ा से तो वास्ता न पड़ता !

इसलिये जो शख़्स अपना भला चाहे, दुन्या में ख़ुदा की बन्दगी और हुक्म बर्दारी कर के आख़िरत के लिये उसके पास अच्छा ठिकाना बना ले।

——०*ॐ*०——

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

अम्म यतसाअलून् (१) अनिन्नबइल् अज़ीमिल् (२) लज़ी हुम् फ़ीहि मुख़्तलिफ़ून् (३) कल्ला सयऽलमून, (४) सुम्म कल्ला सयऽलमून् (५) अलम् नज् अलिल् अर्द मिहादौं (६) वल् जिबाल औतादौं (७) वख़लक़्नाकुम् अज़्वाजौं (८) व जअल्ना नौम कुम् सुबातौं (९) व जअल्नल्लैल लिबासौं (१०) व जअल्नन्नहार मआशा (११) व बनैना फ़ौक़कुम सब अन् शिदादौं (१२) व जअल्ना सिराजौं वह्हाजौं (१३) व अन्ज़ल्ना मिनल् मुऽसिराति माअन् सज्जा जल् (१४) लिनुख़्रिज बिही हब्बौं व नबातौं (१५) व जन्नातिन् अल्फ़ाफ़ा (१६) इन्न यौमल् फ़स्लि

कान मीक़ातँ (१७) यौम युन्फ़ख़ु फ़िस्सूरि फ़तातून अफ़्वाजौं, (१८) व फ़ुतिहतिस्समाउ फ़कानत् अब्वाबौं (१९) व सुय्यिरतिल् जिबालु फ़कानत सराबा (२०) इन्न जहन्नम कानत् मिर्सादल् (२१) लित्ताग़ीन मआबल् (२२) लाबिसीन फ़ीहा अह्क़ाबा (२३) लायज़ूक़ून फ़ीहा बर्दौं वला शराबा (२४) इल्ला हमीमौं व ग़स्साक़न् (२५) जज़ाऔं विफ़ाक़ा (२६) इन्नहुम् कानू लायर्जून हिसा-बौं, (२७) व कज़्ज़बू बिआयातिना किज़्ज़ाबा (२८) व कुल्ल शैइन् अहसैनाहु किताबन्, (२९) फ़ज़ूक़ू फ़लन्नज़ीद कुम इल्ला अज़ाबा (३०) इन्नलिल् मुत्तक़ीन मफ़ाज़न् (३१) हदाइक़ व अऽनाबौं (३२) व कवाइब अतराबौं (३३) व कासन् दिहाक़ा (३४) ला यस्मऊन फ़ीहा लग़्वौं व ला किज़्ज़ाबा (३५) जज़ाअम्मिर्रब्बिक अता अन् हिसाबन् (३६) रब्बिस्समावाति वल्अर्दि व माबैन हुमर्रह्मानि ला यम्लिकून मिन्हु ख़िताबा (३७) यौम यक़ूमुरूहु वल् मलाइकतु स.फ्फ़ल्लायतकल्लमून इल्ला मन् अज़िन लहुर्रह्मानु व क़ाल सवाबा (३८) ज़ालिकल् यौमुल् हक़्क़ फ़मन् शाअत्तख़ज़ इला रब्बिही मआबा (३९) इन्ना अन् ज़र्नाकुम् अज़ाबन् क़रीबय्यौम यंज़ुरुल् मर्उमाक़द्दमत् यदाहु व यक़ूलुल् काफ़िरु या लैतनी कुन्तु तुराबा (४०)

तर्जुमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा ही मेहरबान बहुत रहम वाला है।

(यह लोग) किस चीज़ के बारे में एक दूसरे से पूछ रहे हैं ? (१) क्या उस बड़ी ख़बर (क़ियामत) के बारे में (पूछ गछ कर रहे हैं ?) (२) जिस में यह लोग (मुसल्मानों से) इख़्तेलाफ़ रखते हैं (३) याद रक्खें, यह लोग जल्द ही जान लेंगे (४) फिर याद रक्खें, यह लोग जल्द ही जान लेंगे (५) क्या हम ने ज़मीन को बिछौना नहीं बनाया ? (६) और पहाड़ को मेख़ें नहीं बनाया ? (७) और हमीं ने तुम को जोड़ा जोड़ा पैदा किया (८) और हमीं ने तुम्हारी नींद को आराम की चीज़ बनाया (९) और हमीं ने रात को पर्दा (का ज़रीआ) बनाया (१०) और हमीं ने दिन को कमाने का वक़्त बनाया (११) और हमीं ने तुम्हारे ऊपर सात मज़्बूत (आस्मान) बना दिये (१२) और हमीं ने (सूरज को) एक जगमगाता हुआ चिराग़ बनाया (१३) और हमीं ने पानी भरे हुए बादलों से मूसला धार मेंह बर्साया, (१४) ताकि हम उससे अनाज और घास पात उगाएं (१५) और घने घने बाग़ (१६) बेशक फ़ैसले का दिन मुक़र्रर हो चुका है (१७) (यानी) वह दिन जिस में सूर फूँका जायेगा फिर तुम ग़ोल के ग़ोल चले आओगे (१८) और आस्मान खोल दिये जायेंगे फिर उस में दर्वाज़े ही दर्वाज़े हो जायेंगे (१९) और पहाड़ चला दिये जायेंगे फिर वह चमकती हुई रेत हो जायेंगे (२०) बेशक दोज़ख घात में है (२१) वह शरीर (दुष्ट) लोगों के लौट कर जाने की जगह है (२२) जिस में वह लम्बी मुद्दतों तक पड़े रहेंगे (२३) वह उसमें न तो (किसी क़िस्म की) ठण्डक (राहत) का मज़ा चख पायेंगे और न (किसी) पीने की चीज़ का (२४) सिवाय खौलते

हुए पानी और बहते हुए पीप के (२५) (यह है उनकी शरारतों का) ठीक ठीक बदला (२६) यह लोग (क़ियामत के) हिसाब किताब का खटका नहीं रखते थे (२७) और हमारी आयतों को सरासर झुठलाया करते थे (२८) और हम ने (उनके आमाल में से) एक एक चीज़ को लिख कर गिन रक्खा है (२६) तो (हम उनसे कहेंगे कि अब अपने किये का) मज़ा चखो, हम तो तुम्हारे अज़ाब को बराबर बढ़ाते ही चले जायेंगे (३०) बेशक, (ख़ुदा से)डरने वालों के लिये (आख़िरत में) कामयाबी है (३१) (वहां उनके रहने और खाने के लिये) बाग़ और अंगूर हैं (३२) और बराबर उम्र वाली नौजवान औरतें हैं (३३) और (पाक शराब के) छलकते हुए प्याले हैं (३४) वह लोग न उसमें (किसी के मुंहसे) कोई बेहूदा बात सुनेंगे न झूठ (३५) यह बदला है तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से हिसाब के साथ दिया हुवा (३६) वही आस्मानों का और ज़मीन का और उन दोनों के बीच जितनी मख़्लूक़ है सब का पर्वरदिगार बड़ा रहम वाला है, (क़ियामत के दिन) कोई उससे बोलने की मजाल न रखता होगा (३७) उस दिन जिब्रील और (तमाम) फ़रिश्ते (उसके सामने) परा बांध कर खड़े होंगे, वहां कोई बोल न सकेगा, सिवाय उसके जिसको वह रहमान (ख़ुदा) इजाज़त दे और वह शख़्स बात भी ठीक कहे (३८) उस दिन का आना सच है, तो जो कोई चाहे अपने पर्वरदिगार के पास वापसी का ठिकाना बना रक्खे (३६) बेशक हम ने तुम को (क़ियामत के) क़रीबी अज़ाब से डरा दिया है, उस दिन हर इन्सान (उन कामों को) देख लेगा जो उसने अपने हाथों किये होंगे और काफ़िर कह उठेगा (हाय !) कहीं मैं (आदमी की जगह) मिट्टी हुआ होता ! (४०)

२—सूरः नाज़िआत

(मक्का में उतरी और इसमें ४६ आयतें हैं)

ज़रूरी तश्रीह

इस सूरह के शुरू में क़स्में आई हैं, क़स्मों का बयान दीबाचे में हो चुका है। इस सूरह में एक वाक़िआ का भी मुख़्तसर ज़िक्र है, उसकी ज़रूरी तफ़्सील यह है—

मिस्र में एक बहुत बड़ा शाही ख़ानदान गुज़रा है जिसके बादशाहों का लक़ब (उपनाम) 'फ़िऔन' था, वहां का बादशाह ख़ुदाई का दावा करता था, हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) की क़ौम जो 'बनी इस्राईल' कहलाती है और जो ज़्यादातर यहूदी के नाम से मशहूर है फ़िऔन की गुलामी में पड़ गई थी। फ़िऔन बनी इस्राईल पर बहुत ज़ुल्म करता था, उनके बेटों को पैदा होते ही मार डालता था, और लड़कियों को अपनी क़ौम की ख़िद्मत के लिए ज़िन्दा छोड़ देता था। हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) इसी ग़ुलामी की हालत में पैदा हुए और ख़ुदा का कुछ ऐसा करना हुआ कि फ़िऔन ही के महल में पल कर जवान हुए और फिर फ़िऔन की क़ौम के एक शख़्स को मार डालने की वजह से आपको मिस्र से 'मद्यन' भागना पड़ा। आप वहां के पैग़म्बर हज़रत शुऐब (अलैहिस्सलाम) के पास दस बरस तक रहे और उन्हीं की बेटी से आपने शादी की।

दस साल बाद 'मद्यन' से शाम को जाते हुए 'तूर' पहाड़ के मैदान में जो 'तुवा' कहलाता था ख़ुदा ने हज़रत मूसा को अपना पैग़म्बर बनाया, और उनको अपनी पैग़म्बरी की निशानी देकर फ़िऔन के पास भेजा और फ़र्माया कि तुम फ़िऔन के पास जाओ, और उससे कहो कि वह ख़ुदाई के दावे से बाज़

आये, ख़ुदा की बन्दगी का रास्ता इख़्तेयार करे ख़ुदा के बन्दों पर ज़ुल्म करना छोड़ दे, और बनी इस्राईल को तुम्हारे हवाले कर दे, ख़ुदा के इस हुक्म के मुताबिक़ हज़रत मूसा फ़िर्औन के पास गये, उसको ख़ुदा का पैग़ाम पहुँचाया उसे अपनी पैग़म्बरी की निशानी (मुऽजज़ा) दिखाया, लेकिन फ़िर्औन ने आपकी बात न मानी, उसने मुऽजज़ों को जादू समझ कर अपने जादूगरों को आपके मुक़ाबिले के लिये जमा किया, जादूगरों ने आपका मुक़ाबिला किया वह मुक़ाबिले में हार कर मुसल्मान हो गये।

फ़िर्औन फिर भी अपनी हठ और अपने ख़ुदाई के दावे से बाज़ न आया और बनी इस्राईल पर बराबर ज़ुल्म करता रहा, कई साल इसी तरह गुज़र गये, आख़िर एक रात ख़ुदा के हुक्म से हज़रत मूसा अपनी क़ौम को लेकर मिस्र से चल खड़े हुए, फ़िर्औन को ख़बर हुई तो उसने लश्कर लेकर आपका पीछा किया, सुबह होते होते फ़िर्औन आपके सर पर पहुंच गया, अब आपके आगे 'बहरे अहमर' (लाल सागर) था और पीछे फ़िर्औन, हज़रत मूसा अपनी क़ौम के साथ जैसे ही समुन्दर के किनारे पहुँचे, ख़ुदा की क़ुद्रत से समुन्दर का पानी फट कर बीच में रास्ता बन गया। और रास्ते के दोनों तरफ़ पानी की दीवारें खड़ी हो गईं। हज़रत मूसा अपनी क़ौम को लेकर समुन्दर से पार हो गये उनके पीछे फ़िर्औन भी इसी रास्ते से पानी में दाख़िल हो गया लेकिन उसके पार होने से पहले ही फटा हुआ पानी आपस में मिल गया और फ़िर्औन अपने लश्कर समेत उसी में डूब गया।

अन्दाज़ा है कि जहाँ से हज़रत मूसा ने समुन्दर को पार किया वह स्वेज़ और इस्माईलिया के दर्मियान का मक़ाम था।

ख़ुदा ने फ़िरऔन का हाल बयान करके हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के दुशमनों को ख़बरदार किया है कि उनको फ़िरऔन के वाक़िआ से सबक़ लेना चाहिये, उनका जत्था और ज़ोर कितना ही ज़्यादा सही लेकिन वह फ़िरऔन से बढ़ कर नहीं हैं, अगर वह दुश्मनी से बाज़ न आये तो जिस तरह ख़ुदा ने फ़िरऔन को दुन्या में भी अपने अज़ाब में पकड़ा और आख़िरत में भी ख़ुदा के अज़ाब में पकड़ा जायेगा, इसी तरह यह लोग भी दुन्या और आख़िरत के अज़ाब में गिरफ़्तार होकर रहेंगे। और लोग जो कहते हैं कि क्या हम गली सड़ी हड्डियां हो जाने के बाद भी दोबारा ज़िन्दा किये जायेंगे ? और जो हँसी करते हैं कि ऐसा हुआ तो हम बड़े घाटे में पड़ जायेंगे तो यह हँसी की नहीं सोचने की बात है।

जिस ख़ुदा ने उनके सरों पर इतना ज़बरदस्त आस्मान तामीर (निर्माण) कर दिया है और जिसकी क़ुद्रत की कितनी बड़ी बड़ी निशानियां ख़ुद इसी ज़मीन पर मौजूद हैं उसके लिये इनका दो बारा जिला उठाना कौन सा मुश्किल काम है।

क़ियामत की हंसी उड़ाना और पैग़म्बर से पूछना कि क़ियामत कब आयेगी उसके आने में देर क्यों हो रही है ? बड़ी बदबख़्ती (दुर्भाग्य) की बात है। जिस रोज़ क़ियामत आ खड़ी होगी और लोग उसे अपनी आंखों से देख लेंगे तो जिन लोगों का ख़याल है कि वह हमेशा जीते रहेंगे और दुन्या के मज़े उड़ाते रहेंगे उनको ऐसा मालूम होगा कि वह दुन्या में एक शाम या एक सुब्ह से ज़्यादा नहीं रहे।

क़ुरआन ने क़ियामत के अक़ीदे पर बार बार ज़ोर दिया है ताकि वह अक़ीदा लोगों के दिलों में जम जाये, इस लिये कि इस अक़ीदे के बग़ैर दुन्या में नेकी, इंसानियत, ईमानदारी और इंसाफ़ की ज़िन्दगी गुज़ारी ही नहीं जा सकती।

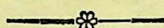
बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम्

वन्नाज़िआति ग़र्क़ौं (१) वन्नाशिताति नश्तौं, (२) वस्साबिहाति सब्हन् (३) फ़स्साबिक़ाति सब्क़न् (४) फ़ल् मुदब्बिराति अम्रा (५) यौम तर्जुफ़ुर्राजिफ़तु (६) ततबउहर्रादिफ़ह् (७) क़ुलूबुंय्यौमइज़िँव्वाजिफ़तुन् (८) अब्सारुहा खाशिअह् (९) यक़ूलून अइन्ना लमर्दूदून फ़िल् हाफ़िरह् (१०) अइज़ा कुन्ना इज़ामन् नख़िरह् (११) क़ालू तिल्क इज़न् कर्रतुन् खासिरह् (१२) फ़इन्नमा हिय ज़ज्रतूं वाहिदह् (१३) फ़इज़ा हुम बिस्साहिरह् (१४) हल्अताक हदीसु मूसा (१५) इज़् नादाहु रब्बुहू बिल् वादिल् मुक़द्दसि तुवा (१६) इज़्हब् इला फ़िर्औन इन्नहू तग़ा (१७) फ़क़ुल् हल्लक इलाऽअन् तज़क्का, (१८) व अह्दियक इला रब्बिक फ़तख़्शा (१९) फ़अराहुल् आयतल् कुब्रा (२०) फ़कज़्ज़ब वअसा (२१) सुम्म अद्बर यस्आ (२२) फ़ हशर फ़ नादा (२३) फ़क़ाल अना रब्बुकुमुल् अऽला (२४) फ़अखज़ हुल्लाहु नकालल् आख़िरति वल्ऊला (२५) इन्न फ़ीज़ालिक ल इब्रतल्लि मँय्यख़्शा (२६) अ अन्तुम् अशद्दु ख़ल्क़न् अमिस्समाउ बनाहा (२७) रफ़अ समूकहा फ़सव्वाहा, (२८) व अग़्तश लैलहा

चअख़्रज .दुहाहा, (२९) वल् अर्द. बऽद ज़ालिक दहाहा, (३०) अख़्रज मिन्हा मा३अहा व मर्आहा (३१) वल् जिबाल अर्साहा, (३२) मताअ़ल्लकुम् वलिअन्आमिकुम् (३३) फ़इज़ा जा३अतित्ता३म्मतुल् कुब्रा (३४) यौम यतज़क्करुल् इन्सानु मा सआ, (३५) व बुर्रिज़तिल् जहीमु लिमँय्यरा (३६) फ़अम्मा मन् तग़ा, (३७) वआसरल् हयातद्दुन्या, (३८) फ़इन्नल् जहीम हियल् मावा (३९) व अम्मा मन् खाफ़ मक़ाम रब्बिही वनहन्नफ़्स अनिल् हवा, (४०) फ़ इन्नल् जन्नत हियल् मावा (४१) यस् अलूनक अनिस्साअ़ति अय्यान मुर्साहा (४२) फ़ीम अन्त मिन् ज़िक्राहा (४३) इला रब्बिक मुन्तहाहा (४४) इन्नमा अन्त मुंज़िरु मँय्यख़्शाहा (४५) कअन्न हुम् यौम यरौनहा लम् यल्बसू२इल्ला अशीयतन् औ दुहाहा (४६) ।



तर्जुमा



(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा ही मेहबान बहुत रहमवाला है ।

क़सम है (बुरे लोगों की जानें) सख़्ती से खींच निकालने वाले फ़रिश्तों की (१) और (नेक लोगों की जानों के बंधन) आसानी से खोल देने वाले फ़रिश्तों की (२) और (ज़मीन आसमान के बीच) तेज़ी से तैरने वाले फ़रिश्तों की (३) फिर दौड़ कर आगे बढ़ जाने वाले फ़रिश्तों की (४) फिर हर काम का बन्दोबस्त करने वाले फ़रिश्तों की (कि क़ियामत आकर रहेगी) जिस दिन हिला देने वाली चीज़ (यानी नरसिंहे की पहली आवाज़ ज़मीन को) हिला डालेगी (६) उसके बाद एक पीछे आने वाली चीज़ (यानी दूसरी फूँक की आवाज़) आयेगी (७) कितने दिल उस दिन दहल रहे होंगे (८) उनकी निगाहें झुकी हुई होंगी (९) (मुन्किर लोग) कहते हैं—क्या हम (मरने के बाद) फिर पहली हालत में लौटा दिये जाने वाले हैं ? (१०) क्या ऐसी हालत में भी जब कि हम सड़ी गली हड्डियाँ बन चुके होंगे ? (११) वह लोग कहते हैं कि तब तो यह वापसी बड़े घाटे की वापसी होगी (१२) तो वह तो बस एक ही (भयानक) आवाज़ होगी (१३) जिसे सुनते ही सब लोग फ़ौरन एक मैदान में एकट्ठे हो जायेंगे (१४) (ऐ पैग़म्बर !) क्या तुम्हारे पास मूसा का क़िस्सा पहुंचा ? (१५) जब उनके पर्वरदिगार ने एक पाक मैदान में जिस का नाम 'तुवा' था, उन्हें पुकारा था (१६) कि 'फ़िऔन' के पास जाओ, वह (शरारत में) हद से बढ़ गया है (१७)

और उससे कहना—"क्या तेरा जी चाहता है कि तू पाक सुथरा बने ? [१८] और मैं तुझे तेरे पर्वरदिगार की तरफ़ रास्ता दिखाऊँ सो तू उससे डरने लगे [१९] (इस हुक्म के मुताबिक़ मूसा फ़िर्औन के पास गये, उसको ख़ुदा का पैग़ाम सुनाया, और अपनी पैग़म्बरी की) एक बड़ी निशानी उसे दिखाई [२०] पर फ़िर्औन ने उन को झुटला दिया और उनकी बात नहीं मानी [२१] फिर उनसे पीठ फेर कर (उनके ख़िलाफ़) दौड़ धूप करने लगा [२२] फिर (अपने आदमियों को) इकट्ठा किया, और उन्हें आवाज़ दी [२३] उसने कहा—मैं ही तुम्हारा सब से बड़ा पर्वरदिगार हूँ [२४] इस पर ख़ुदा ने उसे आख़िरत और दुन्या दोनों के अज़ाब में गिरफ़्तार कर लिया [२५] बेशक इस वाक़िआ में उस आदमी के लिये बड़े सोच की बात है जो अल्लाह से डरता है। [२६]

(ऐ क़ियामत के बारे में शक करने वालो !) क्या तुम्हारा (मरने के बाद) पैदा करना ज़्यादा मुश्किल है या आसमान का, जिसे अल्लाह ने बनाया है [२७] उसकी छत ऊँची बनाई फिर उसे ठीक किया [२८] और उसकी रात अंधियारी बनाई और उसके (दिन) की रोशनी बाहर निकाली [२९] इसके बाद ज़मीन को बराबर बिछा दिया [३०] (और) उसमें से उसका पानी और चारा निकाला [३१] और पहाड़ों को उसमें गाड़ दिया [३२] तुम्हें और तुम्हारे चौपायों को फ़ायदा पहुँचाने के लिये [३३]

फिर जब वह सबसे बड़ी मुसीबत (यानी क़ियामत) आ जायेगी [३४] तो उस दिन आदमी याद करेगा कि उसने (दुन्या में) क्या कुछ किया है [३५] और दोज़ख़ देखने वालों के सामने ज़ाहिर कर दी जायेगी [३६] तो जो शख़्स

(अपनी शरारतों में) हद से बढ़ गया होगा [३७] और (आख़िरत के मुक़ाबले में) दुन्या की ज़िन्दगी को पसंद किया होगा [३८] तो बेशक दोज़ख़ ही (उसका) ठिकाना होगी [३९] और जो शख़्स अपने पर्वर्दिगार के सामने खड़े होने से डरा होगा [४०] और अपने दिल को (बुरी) ख़ाहिशों से रोकता रहा होगा [४१] तो बेशक जन्नत उसका ठिकाना होगी [४२] (ऐ पैग़म्बर) लोग तुमसे क़ियामत के बारे में पूछ रहे हैं कि उसका ठहराव कब होगा [४३] उसका आख़िर (इल्म) कि वह कब आएगी तुम्हारे पर्वर्दिगार ही को है [४४] तुम तो सिर्फ़ उस शख़्स को ख़बरदार कर देने वाले हो जो क़ियामत का डर रखता हो [४५] जिस दिन यह लोग उसे देखेंगे तो उनको ऐसा मालूम होगा जैसे (दुन्याँ में) एक शाम या सुब्ह ही रहे हैं [४६]

३—सूरः अ़बस

(मक्का में उतरी और इसमें ४२ आयतें हैं)

ज़रूरी तश्रीह

इस सूरह के शुरु में एक वाक़िआ़ की तरफ़ इशारा है। इस्लाम को तरक़्क़ी देना और उसे कामयाब बनाना ही हज़रत रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहुअ़लैहि वसल्लम) की ज़िन्दगी का अस्ल मक़सद था इस लिये आप चाहते थे कि मक्का के सरदार जो इस्लाम की मुख़ालफ़त कर रहे हैं मुसल्मान हो जायें तो इस्लाम को बहुत मदद मिले। इस ग़रज़ से आप एक रोज़ मक्का के बड़े बड़े सरदारों से इस्लाम के बारे में बात चीत कर रहे थे, उसी हालत में एक अन्धे सहाबी जिनका नाम हज़रत इब्नेउम्मे मकतूम था, चले आये, उनको पता न था कि कौन

लोग बैठे हैं और क्या बातें हो रही हैं। वह आंहज़रत से क़ुर्आन पूछने लगे, मक्का के सरदारों को अपनी बड़ाई का बड़ा घमण्ड था, वह ग़रीबों और मामूली आदमियों को अपने बराबर बैठाने में अपनी बड़ी बे इज़्ज़ती ख़्याल करते थे, इसलिये हज़रत इब्नेउम्मेमक्तूम का बे मौक़अ़ आना और बातचीत में ख़लल डालना आं हज़रत को बहुत नागवार हुआ, आपने उनकी तरफ़ से मुंह फेर लिया।

ख़ुदाने इसी वाक़िआ के बारे में आं हज़रत (सल्लल्लाहुअलैहि-वसल्लम) को समझाया है कि अंधा जो ख़ुदासे डरता है और जो तुम्हारे पास क़ुर्आन की तालीम हासिल करने आया ताकि उसपर अमल करके अपनी हालत दुरुस्त करले, उसके आने पर तो तुमने त्यूरी चढ़ाली और उन लोगों की फ़िक्र में पड़े हो जिनको अपनी बड़ाई के घमण्ड में दीन की कोई पर्वा ही नहीं है, हालां कि अगर ऐसे लोग तुम्हारी बात न मानें और दीन क़बूल न करें तो तुमपर कोई इल्ज़ाम नहीं।

इसी के साथ ख़ुदाने मक्का के सरदारों को भी डांट फटकार सुनाई है, कि वह अमीरी ग़रीबी और छोटाई बड़ाई नहीं देखता, वह दिल देखता है, उसके नज़्दीक उसी की इज़्ज़त है जिसके दिल में नेकी और ख़ुदाका डर है, चाहे वह कितना ही ग़रीब और नीचे दर्जे का आदमी हो, और जिसके दिल में नेकी और उसका डर नहीं उसके नज़्दीक उसकी कोई इज़्ज़त नहीं चाहे वह कितना ही बड़ा आदमी हो।

ख़ुदाका कलाम इन्सानों के लिये बहुत बड़ी नेमत है, इस नेमत के हक़दार वही लोग हैं जो ख़ुदा को मानते हैं, जो ख़ुदा को नहीं मानते उनका इस नेमत में कोई हिस्सा नहीं। ख़ुदा का कलाम किसी के मानने का मुहताज नहीं, जो इसे मानेगा और इसकी हिदायतों पर अमल करेगा अपने भले के लिये मानेगा। जो इसे न मानेगा और इसकी हिदायतों पर अमल न करेगा अपना ही नुक़सान करेगा।

नुत्फ़े [वीर्य] की एक नाचीज़ और तुच्छ बूंद से पैदा होने वाला

और ख़ुदा की नेमतों पर पलने वाला इन्सान, जिसको एक दिन मर जाना है वह आख़िर घमण्ड किस बातपर करता है ?

दुन्या में ख़ुदा के हुक्म बर्दार बनकर रहने वाले चाहे वह ग़रीब और मुहताज ही हों आख़िरत में उनके चेहरे ख़ुशी से चमकते होंगे। और दुन्या में ख़ुदाकी नाफ़र्मानी करने वाले चाहे वह बड़े ही लोग हों आख़िरत में उनके चेहरों पर गर्द उड़ रही होगी और सियाही छा रही होगी।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम्।

अबस व तवल्ला (१) अन् जा२अहुल्अऽमा (२) वमा युद्रीक लअल्लहू यज़्ज़क्का (३) औयज़्ज़क्करु फ़तन्फ़अहुज़्ज़िक्रा (४) अम्मा मनिस्तग़ना (५) फ़अन्त लहू तसद्दा (६) व मा अलैक अल्ला यज़्ज़क्का (७) व अम्मा मन् जा२अक यस्आ (८) व हुव यख़्शा (९) फ़अन्त अन्हु तलह्हा (१०) कल्ला २ इन्नहा तज़्किरह्, (११) फ़मन् शा२अ ज़करह् (१२) फ़ीसुहुफ़िम्मुकर्रमतिम् (१३) मर्फ़्अतिम्मुतह्हरतिम् बिऐदी सफ़रतिन् (१४) किरामिम् बररह् (१५) क़ुतिलल् इन्सानु मा२अक्फ़रह् (१७) मिन् अय्यि शैइन् ख़लक़ह् (१८) मिन् नुत्फ़ह्, ख़लक़हू फ़क़द्दरहू (१९) सुम्मस्सबील यस्सरहू, (२०) सुम्म अमातहू फ़अक़्

बरहू, (२१) सुम्म इज़ा शा३अ अन्शरह् (२२) कल्ला लम्मा यक़्ज़ि मा२ अमरह् (२३) फ़ल् यन्ज़ुरिल् इन्सानु इला तआमिही (२४) अन्ना सबब्नल्मा३अ सब्बन् (२५) सुम्म शक़क़्नलअर्द शक़्क़न् (२६) फ़ अम्बत्ना फ़ीहा हब्बौं (२७) व इनबौं व क़ज़्बौं (२८) व ज़ैतूनौं व नख़्लौं (२९) व हदा३इक़ ग़ुल्बौं (३०) व फ़ाकिहतौं व अब्बम् (३१) मता अल्लकुम् वलि अन्आमिकुम् (३२) फ़इज़ा जा३अतिस्सा३ख़्ख़ह् , (३३) यौम यफ़िर्रुल् मर्उ मिन् अख़ीहि, (३४) व उम्मिही व अबीहि (३५) व साहिबतिही व बनीह् (३६) लि कुल्लिम् रिइम् मिन्हुम् यौ मइज़िन् शऽनुंय्युग़्नीह (३७) व वुजूहुं य्यौमइ ज़िम्मुस्फ़िरतुन् (३८) ज़ाहिकतुम्मुस्तब्शिरह् (३९) व वुजूहुय्यौमइज़िन् अलैहा ग़बरतुन् (४०) तर्हक़ुहा क़तरह् (४१) उला३इक हुमुल् कफ़रतुल् फ़जरह् (४२)।

तर्जमा

(शुरु) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत ही रहम वाला है।

पैग़म्बर ने त्यूरी चढ़ाली और मुंह फेर लिया (१) इस बात पर कि उनके पास एक अन्धा चला आया (२) और (ऐ पैग़म्बर !) तुम क्या जानते थे शायद अन्धा (तुम्हारी तालीम से) सँवर जाता (३) या नसीहत क़बूल कर लेता और उसको नसीहत

फ़ाएदा पहुंचाती (४) मगर जो शख़्स दीन से बे पर्वाई बरतता है (५) तो तुम उसकी फ़िक्र में पड़ते हो (६) हालांकि अगर वह न सँवरे तो तुम पर इसका कुछ इल्ज़ाम नहीं (७) मगर जो शख़्स तुम्हारे पास (दीन सीखने के शौक़ में) दौड़ा हुआ आता है (८) और वह ख़ुदा से डरता भी है (९) तो तुम उससे बे रुख़ी करते हो (१०) नहीं, नहीं, (ऐसा न करो) यह क़ुर्आन तो एक नसीहत है (११) सो जो चाहे इसे सोचे समझे (१२) क़ुर्आन (ख़ुदा के पास) इज़्ज़त वाले वर्क़ों में (लिखा हुआ) है (१३) ऊंचे दर्जे के पाकीज़ा (वर्क़ों में) (१४) जो उन लिखने वाले (फ़रिश्तों) के हाथों में रहते हैं (१५) जो बुज़ुर्ग और नेक हैं (१६)

बुरा हो इन्सान का, वह कैसा ना शुक्रा है ! (१७) (वह सोचता नहीं कि ख़ुदा ने) उसे किस चीज़ से पैदा किया है ? (१८) एक बूंद ही से तो उसे बनाया, फिर उसके लिये अन्दाज़ा ठैरा दिया (१९) फिर उसके लिये राह आसान करदी (२०) फिर उसे मौत दी और क़ब्र में पहुंचा दिया (२१) फिर जब वह चाहेगा उसे जिला खड़ा करेगा (२२) नहीं, नहीं, ख़ुदा ने इन्सान को जो हुक्म दिया है उसने उसे पूरा नहीं किया (२३) तो इन्सान को चाहिये कि ज़रा अपनी ख़ोराक ही को देख ले (कि हमने उसे किस तरह पैदा किया ?) (२४) (पहले) हमने ज़ोरों का पानी बरसाया (२५) फिर ज़मीन को फाड़ दिया (२६) फिर उससे अनाज उगाया (२७) और अंगूर और तरकारियां (२८) और ज़ैतून और खजूरें (२९) और घने घने बाग़ (३०) और (दूसरे) मेवे और (जानवरों का) चारा (३१) जो तुम्हारे लिये भी फ़ाएदे की चीज़ें हैं और तुम्हारे चौपायों के लिये भी (३२)

फिर (ज़रा उस वक़्त का विचार करो) जब वह कानों को बहरा कर देने वाली चिंघाड़ आ पहुँचेगी (३३) उस दिन

आदमी दूर भागेगा अपने भाई से (३४) और अपनी माँ से और अपने बाप से (३५) और अपनी बीवी से और अपने बेटों से (३६) उस दिन उनमें से हर आदमी ऐसी फ़िक्र में पड़ा होगा जो उसके लिये काफ़ी होगी (३७) कितने चिहरे उस दिन चमक रहे होंगे (३८) हँसते और ख़ुशियाँ मनाते होंगे (३९) और कितने चिहरे उस दिन ऐसे होंगे कि उन पर गर्द पड़ी होगी (४०) (और) सियाही छा रही होगी (४१) यही लोग हैं (हक़ का) इन्कार करने वाले बदकार ! (४२)।

४—सूरः तक्वीर

मक्का में उतरी और इसमें २९ आयतें हैं।

ज़रूरी तश्रीह

इस सूरह में क़ियामत के दिन की हौलनाकियों [भयंकरताओं] का हाल सुनाकर नसीहत की गई है कि क़ुर्आन की हिदायतों पर चलो, इस में तुम्हारी भलाई है। हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम) न पागल हैं न क़ुर्आन कोई शैतानी कलाम है, वह ख़ुदा का कलाम है और ख़ुदा के बुज़ुर्ग फ़रिश्ते जिब्रील के ज़रीआ पहुँचा है जिनको हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहुअलैहिवसल्लम) ने आसमान के खुले किनारे [क्षितिज] पर देखा है।

इस सूरह की कुछ ख़ास बातें यह हैं:—

१—अरब में ऐसे लोग भी थे जो अपनी लड़कियों को ज़िन्दा गाड़ देते थे, उनका ख़ियाल था कि लड़कियों के पालने और उन के खाने कपड़े का खर्च बर्दाश्त करने से क्या फ़ायदा जब यह बड़ी हो कर बियाही जायेंगी और पराये घर की हो जायेंगी। कुछ लोग उनको इसलिये मारडालते थे कि लड़की बियाह कर ससुर बनने को बेइज़्ज़ती की बात समझते थे, इस रस्मको बुरा ठहराया गया है और लोगों को डराया गया है कि क़ियामत के दिन इस नाहक़ ख़ून की पूछ होगी।

इस्लाम ने औरतों पर जो इहसान किये हैं उनमें से एक बड़ा

इहसान यह भी है कि अब से १४०० बरस पहले लड़कियों का क़त्ल बंद करदिया, और मर्दोंकी झूठी शान मिटादी, हालां कि हिन्दोस्तान की कुछ बिरादरियों में कुछ ज़माना पहले तक यह रस्म मौजूद थी।

२—क़ुर्आन शरीफ़ की सच्चाई पर कुछ सितारों की क़सम खाई गई है, यह सितारे ज़ुहल, मुश्तरी, मिर्रीख़, ज़ुहरा और उतारद हैं, यह कभी सीधे चलते हैं, कभी ठिठक कर उलटे फिरते हैं, कभी सूरज के पास जाकर छिप रहते हैं, इन सितारों की क़सम खाकर यह समझाना मक़सूद है कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम से पहले भी ख़ुदाके पैग़म्बर होते रहे हैं, और उनके पास भी ख़ुदा के पैग़ाम और हिदायतें आती रही हैं, कभी बराबर पैग़म्बर होते रहते, कभी यह सिलसिला बन्द हो जाता, मगर उनकी तालीम का असर बाक़ी रहता, फिर कभी ऐसा भी होता कि वह असर भी मिटजाता, हज़रत मुहम्मद [सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम] से पहले भी दुनिया की यही हालत हो गई थी कि बेदीनी की रातका अंधेरा छा गया था, अरब के लोगों को बताया गया कि अब वह रात ख़त्म हो चुकी है, और एक नई सुबह हो रही है।

३—फ़रिश्तों और इन्सानों की तरह जिन भी एक मख़्लूक़ हैं, जो आग से पैदा हुए हैं, उनमें ग़ुरूर और बेहुक्मी का माद्दा बहुत ज़्यादा है, शैतान भी जिन है, वह और उसके पीछे चलने वाले ख़ुद भी ख़ुदा की बेहुक्मी करते हैं और आदमियों को भी बहकाकर ख़ुदाके हुक्म के ख़िलाफ़ चलाते हैं, क़ुर्आनशरीफ़ में उन आदमियों को भी शैतान कहा गया है जो ख़ुद भी बुरे काम करते हैं और दूसरों को भी बुरे कामों में फंसाते हैं।

शैतान दिखाई नहीं देता ऐसी और भी कितनी चीज़ें हैं जिस को इंसानी आंखें देख नहीं सकतीं, एक हवाही है जो इंसान के अन्दर बाहर हर जगह मौजूद होती है लेकिन इंसान उसे देख नहीं सकता

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम् ।

इज़ श्शम्सु कुव्विरत् (१) व इज़न्नुजूमुन्कदरत् (२) व इज़ल् जिबालु सुय्यिरत् (३) व इज़ल् इशारु उत्तिलत् (४) व इज़ल् वुहूशु हुशिरत् (५) व इज़ल् बिहारु सुज्जिरत् (६) व इज़न्नुफ़ूसु ज़ुव्विजत् (७) वइज़ल मौऊदतु सुइलत् (८) बि अय्यि ज़म्बिन् क़ुतिलत् (९) व इज़स्सुहुफ़ु नुशिरत् (१०) व इज़स्समाउ कुशितत् (११) व इज़ल् जहीमु सुइरत् (१२) वइज़ल् जन्नतु उज़्लिफ़त् (१३) अलिमत् नफ़सुम्मा अह्दरत् (१४) फ़लाउक़्सिमु बिल् ख़ुन्नसिल् (१५) जवारिल् कुन्नसि (१६) वल्लैलि इज़ा अस् अस (१७) वस्सुब्हि इज़ा तनफ़्फ़स (१८) इन्नहू लक़ौलु रसूलिन् करीमिन् (१९) ज़ीक़ूवातिन् इन्द ज़िल् अर्शि मकीनिम् (२०) मुताइन् सम्म अमीन् (२१) व मा साहिबुकुम् बिमजनून्, (२२) वलक़द् रआहु बिल् उफ़ुक़िल् मुबीन् (२३) वमा हुव अलल् ग़ैबि बिदनीन् (२४) वमाहुव बिक़ौलि शैतानिर्रजीम् (२५) फ़ऐन तज़्हबून् (२६) इन् हुव इल्ला ज़िक्रुल् लिल् आलमीन्, (२७) लिमन् शाअ मिन्कुम् अँय्यस्तक़ीम् (२८) वमा तशाऊन इल्ला अँय्यशा अल्लाहु रब्बुल् आलमीन् (२९)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत ही रहम वाला है।

जब सूरज लपेट दिया जायेगा [१] और जब सितारे मैले पड़ जायेंगे [२] और जब पहाड़ चला दिये जायेंगे [३] और जब दस महीने की गाभिन ऊँटनियाँ छूटी फिरेंगी (जिन को कोई पूछने वाला न होगा) [४] और जब जंगल के जानवर (घबराहट के मारे एकटठे हो जायेंगे) [५] और जब समुन्दर खौला दिये जायेंगे [६] और जब (मरे हुए लोगों की) जानें (जिस्मों से) मिला दी जायेंगी [७] और जब जीते जी गाड़ी हुई लड़की से पूछा जायेगा [८] कि वह किस गुनाह पर मार डाली गई [९] और जब लोगों के आमाल नामे खोल दिये जायेंगे (ताकि सब अपने अपने आमाल देख लें) [१०] और जब आसमान की खाल उधेड़ दी जायेगी [११] और जब दोज़ख़ दहका दी जायेगी [१२] और जब जन्नत (नेक लोगों के) क़रीब कर दी जायेगी [१३] (उस वक़्त) हर शख़्स जान लेगा कि वह अपने साथ क्या क्या (आमाल) लेकर हाज़िर हुआ है [१४]

तो मैं क़सम खाता हूँ पीछे फिर जाने वाले [१५] सीधे चलने वाले और थम जाने वाले सितारों की [१६] और रात की जब वह ढलने लगे [१७] और सुब्ह की जब वह सांस ले (यानी आने लगे) [१८] कि बेशक यह क़ुरआन (ख़ुदा के) एक बुज़ुर्ग क़ासिद (फ़रिश्ते) का (लाया हुआ) कलाम है [१९] जो ताक़त वाला है, अर्श के मालिक (यानी ख़ुदा) के नज़्दीक मर्तबा पाया हुआ है [२०] वहां (फ़रिश्तों में) उसका कहा माना जाता है और अमानत दार है [२१]।

(और ऐ मक्का के लोगो !) यह तुम्हारे साथी (मुहम्मद) कुछ पागल नहीं हैं [२२] और बेशक इन्होंने उस (फ़रिश्ते) को आसमान के खुले किनारे पर देखा है [२३] और वह ग़ैब की बातें बताने में (जो उन्हें ख़ुदा की तरफ़ से मालूम होती हैं) कुछ बख़ील नहीं हैं [२४] और यह क़ुर्आन किसी धुतकारे हुए शैतान की कही हुई बात नहीं है [२५] फिर तुम किधर चले जा रहे हो [२६] यह तो सारे जहान के लोगों के लिए एक नसीहत की चीज़ है [२७] (ख़ासकर) तुम में से उस शख़्स के लिये जो सीधी राह चलना चाहे [२८] और तुम (कोई बात) नहीं चाह सकते मगर यह कि अल्लाह उसे चाहे जो सारे जहानों का पर्वरदिगार है [२९]

——०❋०——

५—सूरः इन्फ़ितार

(मक्का में उतरी और इस में १९ आयतें हैं)

ज़रूरी तश्रीह

क़ियामत के रोज़ आसमान और ज़मीन की क्या हालत हो जायेगी, इसकी तरफ़ इशारा करके आदमी को नेकी करने और बदी से बचने की हिदायत की गई है और बताया गया है कि आदमी दुन्या में जो कुछ करेगा आख़िरत में उसका नतीजा देखलेगा । ख़ुदा ने हर आदमी के साथ निगरानी करने वाले दो फ़रिश्ते मुक़र्रर कर दिये हैं जो उसके अच्छे बुरे सब काम लिखते रहते हैं, उनके लिखने को कोई झुटला नहीं सकता, ख़ुदा लोगों को उनके अच्छे बुरे आमाल के मुताबिक़ जन्नत और दोज़ख में जगह देगा, किसी की मजाल न होगी कि उसके इख़्तियार में दख़ल दे, इसलिये हर शख़्स को चाहिये कि वह अपने को नेक इन्सान और ख़ुदा का हुक्म बर्दार बनाये ।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम्

इज़स्समा३उन्फ़तरत् (१) वइज़ल् कवाकिबुन्तसरत् (२) वइज़ल् बिहारु फ़ुज्जिरत (३) व इज़ल् क़ुबूरु बुऽ.सिरत (४) अलिमत् नफ़्सुम्मा क़द्दमत व अख़्ख़रत् (५) या२ अय्युहल् इन्सानु मा ग़र्रक बि रब्बिकल् करीमिल् (६) लज़ी ख़लक़क फ़सव्वाक फ़अ़्दलक (७) फ़ी२अयि सूरतिम्मा शा३अ रक्कबक् (८) कल्ला बल् तुकज़्ज़िबून बिद्दीनि (९) वइन्न अलैकुम् लहाफ़िज़ीन (१०) किरामन् कातिबीन् (११) यऽ.लमून मातफ़्-अलून् (१२) इन्नल् अबरार लफ़ी नईमिव् (१३) वइन्नल् फ़ुज्जार लफ़ी जहीमीं (१४) यस्.लौनहा यौमद्दीन (१५) वमाहुम् अन्हा बिग़ा२इबीन् (१६) व मा२ अद्राक मा यौमुद्दीन (१७) सुम्म मा२अद्राक मायौमुद्दीन् (१८) यौम ला तम्लिकु नफ़्सुल्लि नफ़्सिन् शैआ वल् अम्रु यौमइज़िल् लिल्लाह् (१९)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जोबड़ा ही मेहरबान बहुत रहम वाला है।

जब आस्मान फट जाएगा [१] और जब सितारे झड़ जायेंगे [२] और जब समुन्दर फूट पड़ेंगे [३] और जब क़बरें उखाड़ कर तले ऊपर कर दी जायेंगी [४] हर आदमी अपने अगले और पिछले आमाल को जान लेगा [५] ऐ इन्सान ! तुझे किस चीज़

ने तेरे ऐसे करम वाले पर्वरदिगार की तरफ़ से बहका रखा है ? [६] (वह पर्वरदिगार) जिसने तुझे पैदा किया, फिर तुझे दुरुस्त किया, फिर तुझे मोज़ूं बनाया [७] जिस सूरत में भी चाहा तुझे जोड़ दिया [८] नहीं तुम्हें ख़ुदा से बहकाने वाला) कोई नहीं, बल्कि वजह यह है कि तुम (क़ियामत की) जज़ा व सज़ा को झूट जानते हो [९] हालांकि तुम पर निगहबानी करने वाले फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं [१०] जो इज़्ज़त दार और (तुम्हारे आमाल) लिखने वाले हैं [११] तुम जो कुछ करते हो वह उसे जानते हैं [१२] बेशक नेक लोग (जन्नत के) ऐश आराम में होंगे [१३] और बे शुब्हा बुरे लोग दोज़ख़ में होंगे [१४] वह क़ियामत के दिन उसमें दाख़िल होंगे [१५] और वह उससे ग़ायब न हो सकेंगे [१६] और (ऐ इन्सान !) तुझे क्या मालूम कि जज़ा व सज़ा का दिन कैसा है ? [१७] फिर (हम कहते हैं कि) तुझे क्या मालूम कि जज़ा व सज़ा का दिन कैसा है ? [१८] उस दिन कोई शख़्स किसी शख़्स के लिये कुछ भी अख़्तियार न रखता होगा और सारा अख़्तियार उस दिन सिर्फ़ अल्लाह ही के हाथ होगा ! [१९]



६—सूरः तत्फ़ीफ़.

(मक्का में उतरी और इसमें ३६ आयतें हैं)

ज़रूरी तशरीह

ख़रीद फ़रोख़्त और लेन देन में बेईमानी और बद दियानती बहुत बुरी चीज़ है, ख़ुद कुछ लेना तो ठीक नाप तौल से लेना और दूसरों को देना तो नाप तौल में कमी कर देना, यह बुराई का ऐसा

बीज है जिस से बड़ी बड़ी बुराइयां पैदा हो जाती हैं। ज़रूरत की चीज़ों का स्टाक करना, ताकि उनको महंगा कर के बेचें, हद से ज्यादा नफ़ा लेना, चोर बाज़ारी, सूद, सर्मायादारी यह सब उसी ज़हरीले पेड़ के फल हैं। इस्लाम ने ज़ह की इस जड़, नाप तोल में बेईमानी को बहुत बुरा ठहराया है, और बताया है कि यह काम वही लोग करते हैं जो खुदा और आखिरत के अज़ाब और सवाब पर ईमान नहीं रखते, अपने को बड़ा चालाक और होशियार समझते हैं, नेक और ईमानदार लोगों पर हंसते हैं, यह लोग समाज के दुश्मन हैं। ऐसे लोगों को क़ियामत के रोज़ मालूम हो जायेगा कि बेईमानी से दुन्या कमाने और ऐश उड़ाने का नतीजा क्या होता है ?

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम।

वैलुल्लिल् मुतफ़्फ़िफ़ीनल् (१) लज़ीन इज़क्तालू अलन्नासि यस्तौफ़ून् (२) व इज़ा कालू हुम् अव्वज़नू हुम् युख़्सिरून् (३) अला यज़ुन्नु उलाइक अन्नहुम् मब्ऊसून (४) लियौमिन् अज़ीमीं (५) यौम यक़ूमुन्नासु लिरब्बिल् आलमीन् (६) कल्लाइन्न किताबल् फ़ुज्जारि लफ़ी सिज्जीन (७) वमा अद्राक मा सिज्जीन (८) किताबुम्मर्क़ूम् (९) वैलुँय्यौमइज़िल् लिल् मुकज़्ज़िबीनल् (१०) लज़ीन युकज़्ज़िबून बियौमिद्दीन् (११) वमा युकज़्ज़िबु बिहीर इल्ला कुल्लु मुऽतदिन् असीमिन् (१२) इज़ा तुत्ला अलैहि आयातुना क़ाल असातीरुल् अव्वलीन् (१३) कल्ला बल् रान अला क़ुलूबिहिम् माकानू यक्सिबून् (१४) कल्लार इन्नहुम् अँर्रब्बिहिम्

यौमइज़िल्ल महजूबून् (१५) सुम्म इन्नहुम् लसालुल् जहीम् (१६) सुम्म युक़ालु हाज़ल्लज़ी कुन्तुम् बिही तुकज़्ज़िबून् (१७) कल्लार इन्न किताबल् अब्रारि लफ़ी इल्लीयीन् (१८) व मार अद्राक मा इल्लीयून् (१९) किताबुम्मर्कूमुंइ (२०) यश्हदुहुल् मुक़र्रबून् (२१) इन्नल् अब्रार लफ़ी नई.मिन् (२२) अ.लल् अराइकि यंज़ुरून (२३) तऽ.रिफ़ु फ़ी वुजूहिहिम् नद्रतन्नई.म् (२४) युस्क़ौन मिर्रहीक़िम् मख़्तूमिन् (२५) ख़ितामुहू मिस्क, व फ़ी ज़ालिक फ़ल्यतनाफ़सिल् मुतनाफ़िसून (२६) व मिज़ाजुहू मिन् तस्नीमिन् (२७) .ऐनँय्यश्रबु बिहल् मुक़र्रबून् (२८) इन्नल्लज़ीन अज्रमू कानू मिनल्लज़ीन आमनू यद्हकून् (२९) व इज़ा मर्रू बिहिम यतग़ामज़ून् (३०) व इज़नक़लबू इलार अह्लिहिमुन् क़लबू फ़किहीन् (३१) वइज़ा रऔहुम क़ालूरइन्न हाउउलाइइ लदाइल्लून (३२) व माउर्सिलू अ.लैहिम हाफ़िज़ीन् (३३) फ़ल् यौमल्लज़ीन आमनू मिनल् कुफ़्फ़ारि यद्हकून (३४) अ.लल् अराइकि यन्ज़ुरून् (३५) हल् सुव्विबल् कुफ़्फ़ारु माकानू यफ़् अ.लून् (३६)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम वाला है।

बड़ी ख़राबी है (नाप तौल में) कमी करने वालों के लिये

[१] (यानी) उन लोगों के लिये कि जब वह लोगों से (कोई चीज़) नाप कर लेने लगते हैं तो पूरा पूरा लेते हैं [२] और जब उनको नाप कर या तौल कर देने लगते हैं तो घटा कर देते हैं [३] क्या यह लोग ख्याल नहीं करते कि वह (मरने के बाद हिसाब के लिये) उठाये जायेंगे [४] एक बड़े दिन में [५] जिस दिन तमाम लोग सारे जहान के मालिक के सामने खड़े होंगे [६] याद रखो, बदकारों का आमाल नामा सिज्जीन में होगा [७] और तुम को क्या मालूम कि सिज्जीन क्या है ? [८] वह एक लिखा हुआ दफ़तर है [९] उस रोज़ बड़ी ख़राबी है झुटलाने वालों की [१०] जो झुटलाते हैं जज़ा व सज़ा के दिन को [११] और उस को तो वही शख्स झुटला सकता है जो हद से गुज़रा हुआ गुनहगार है [१२] जब उसके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो कहता है कि यह तो अगले लोगों की कहानियां हैं [१३] नहीं नहीं, बल्कि बात यह है कि उनके दिलों पर उनके करतूतों का ज़ङ्ग बैठ गया है [१४] हां, हां, बेशक यह लोग उस दिन अपने पर्वरदिगार (के दीदार) से ज़रूर रोक दिये जायेंगे [१५] फिर बेशक वह ज़रूर दोज़ख़ में दाख़िल होंगे [१६] फिर उनसे कहा जायेगा—यही वह (दोज़ख़) है जिसको तुम झुटलाया करते थे [१७] याद रखो—बेशक नेक लोगों का आमाल नामा 'इल्लीयीन' में होगा [१८] और तुमको क्या मालूम कि इल्लीयीन क्या है ? [१९] एक लिखा हुआ दफ़तर है [२०] जिसको (ख़ुदा से) करीब रहने वाले (फ़रिश्ते) देखा करते हैं [२१] बेशक नेक लोग (जन्नत के) ऐश आराम में होंगे [२२] तख़्तों पर बैठे हुए (वहाँ के मनाज़िर (दृश्य)) देख रहे होंगे [२३] तुम उनके चेहरों में आराम की ताज़गी पाओगे [२४] उन्हें मुहर लगी हुई ख़ालिस शराब पिलाई जायेगी [२५] जिसकी मुहर मुश्क की होगी, तो हिर्स करने वालों

को चाहिये कि इस चीज़ की हिर्स करें [२६] और उस में 'तस्नीम' की मिलावट होगी [२७] जो एक चश्मा है, उसमें से वह लोग पियेंगे जो ख़ुदा के नज़्दीकी होंगे [२८] बेशक जो लोग गुनहगार थे वह (दुन्या में) ईमान लाने वालों के साथ हँसी किया करते थे [२९] और जब उनके पास से गुज़रते थे तो (शरारत से) आपस में आँख मारते थे [३०] और जब अपने घर लौटते उस वक़्त भी (उनके बारे में) हँसी दिल लगी ही करते हुए लौटते थे [३१] और जब उन्हें देखते थे तो कहते थे देखो यही लोग हैं जो गुमराह हो गए हैं [३२] हालांकि वह लोग उन (ईमान वालों) पर कुछ चौकीदार बना कर नहीं भेजे गये थे [३३] तो आज (क़ियामत) के दिन ईमान वाले उन कुफ़्र करने वालों की हँसी उड़ा रहे हैं [३४] तख़्तों पर बैठे हुए (जन्नत के मनाज़िर) देख रहे हैं [३५] सचमुच कुफ़्र करने वालों को उनके करतूतों का ख़ूब बदला मिला [३६]



७—सूरः इंशिक़ाक़

(मक्का में उतरी और इसमें २५ आयतें है)

ज़रूरी तशरीह

इस सूरह में क़ियामत का नक़्शा खींचकर इंसान को ग़फ़लत पर तंबीह की गई है और कहा गया है कि तुझे बहर हाल अपने पर्वरदिगार के पास पहुंचना है इसके लिये तू क्या तैय्यारी कर रहा है ? उस रोज़ हिसाब किताब के बाद नेक लोग ख़ुश ख़ुश लौटेंगे और बदकार लोग मौत मौत चिल्लाते होंगे और जहन्नम में डाले जायेंगे।

इस सूरह में शफ़क़, रात, और चांद की क़सम खाई गई है, इन

चीज़ों की क़सम खा कर जो बात कही गई है उसका मतलब यह है कि रद्दोबदल क़ुद्रत का एक ख़ास क़ानून है, इसलिये जिस तरह ख़ुद इन चीज़ों की हालत में रद्दोबदल होता रहता है इसी तरह इंसान की हालत में भी रद्दोबदल होते हुए दर्जा बदर्जा उसे आख़िरत की मंज़िल तक पहुंचना है। फिर इन्सान को क्या हो गया है कि वह इस बात पर यक़ीन नहीं करता, और जब उसके सामने क़ुर्आन पढ़ा जाता है तो वह ख़ुदा के आगे झुक नहीं जाता।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम्।

इज़स्समाउन् शक़्क़त् (१) वअज़िनत् लिरब्बिहा वहुक़्क़त् (२) वइज़ल्अर्दु मुद्दत् (३) वअल्क़त् माफ़ीहा वतख़ल्लत (४) वअज़िनत् लिरब्बिहा वहुक़्क़त् (५) या अय्युहल् इन्सानु इन्नक कादिहुन् इला रब्बिक कद्हन् फ़मुलाक़ीह (६) फ़अम्मा मन् ऊतिय किताबहू बियमीनिही (७) फ़सौफ़ युहासबु हिसाबँय्यसीरौं (८) व यन्क़लिबु इला अहलिही मसरूरा (९) वअम्मा मन् ऊतिय किताबहू वराअ ज़हरिही (१०) फ़सौफ़ यद्ऊ सुबूरौं (११) व यस्ला सईरा (१२) इन्नहू कान फ़ी अह्लिही मसरूरा (१३) इन्नहू ज़न्न अल् लँय्यहूर (१४) बला इन्न रब्बहू कान बिही बसीरा (१५) फ़ला उक़्सिमु बिश्शफ़क़ि (१६) वल्लैलि वमा वसक़ (१७) वल् क़मरि इज़त्तसक़ (१८) लतर्कबुन्न तबक़न् अन् तबक़ (१९) फ़मालहुम् लायुअमिनून (२०) वइज़ा क़ुरिअ अलैहिमुल् क़ुर्आनु लायसजुदून* (२१)

---

*इस आयत को पढ़ कर सज्दा करना चाहिये।

वलिल्लज़ीन कफ़रू युकज़्ज़िबून (२२) वल्लाहु अऽलमु बिमा यूऊन (२३) फ़बश्शिर्हुम बिअज़ाबिन् अलीमिन् (२४) इल्लल्लज़ीन आमनू व अमिलुस्सालिहाति लहुम् अज्रुन् ग़ैरु मम्नून् (२५)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहीम वाला है

जब आस्मान फट जायेगा (१) और वह अपने पर्वरदिगार का हुक्म सुनलेगा और उसे ऐसा ही करना चाहिये (२) और जब ज़मीन तान दी जाएगी (३) और जो कुछ उसके अन्दर है उसे निकाल बाहर करेगी और ख़ाली हो जायेगी (४) और वह अपने पर्वरदिगार का हुक्म सुन लेगी और उसे ऐसा ही करना चाहिये (५) ए इन्सान! तुझे अपने पर्वरदिगार के पास पहुंचने तक (अपने कामों में) ख़ूब मिहनत करनी है (६) फिर एक दिन उसके सामने हाज़िर होना है (७) तो (उस दिन) जिस शख़्स को उस (के आमाल) का पर्चा उसके दायें हाथ में दिया जायेगा तो उसका हिसाब जल्दही कर दिया जायेगा, बिल्कुल आसान हिसाब (८) और वह हँसी खुशी अपने घर वालों के पास लौट आयेगा (९) लेकिन वह शख़्स जिसको उस के आमाल) का पर्चा उसकी पीठ के पीछे दिया जायेगा (१०) तो वह मौत मौत पुकारेगा (११) और (दोज़ख़ की) दहकती हुई आग में दाख़िल होगा (१२) बेशक वह शख़्स (दुन्या में) अपने घर वालों में मगन रहा करता था (१३) बेशक उसने समझ रक्खा था कि वह कभी (ख़ुदा की तरफ़) लौटेगा ही नहीं (१४) क्यों नहीं (उसे तो लौटना ही था) बेशक उसका पर्वरदिगार उसे ख़ूब देखता था (१५) तो मैं क़सम खाता हूँ उस सुर्ख़ी की जो शाम के वक्त

(आस्मान पर) होती है (१६) और क़सम खाता हूँ रातकी, और उन चीज़ों की जिन्हें रात समेट लेती है (१७) और क़सम खाता हूँ चाँद की जब वह पूरा हो जाये (१८) कि तुम ज़रूर एक हालत से दूसरी हालत में पहुँचोगे (१९) तो इन लोगों को क्या हुआ है कि ईमान नहीं लाते? (२०) और जब उनके सामने क़ुर्आन पढ़ा जाता है जब भी (ख़ुदा के आगे) नहीं झुकते (२१) बल्कि कुफ़्र करने वाले (उल्टा उसे) झुटला रहे हैं (२२) और ख़ुदा ख़ूब जानता है कि यह लोग अपने दिलों में क्या भरे हुए हैं (२३) सो (ऐ पैग़म्बर!) ऐसे लोगों को दुख देने वाले अज़ाब की ख़ुश ख़बरी सुना दो (२४) लेकिन जो लोग ईमान लाये और भले काम किये तो उनके लिये कभी ख़त्म न होने वाला सिला है (२५)

——:o:——

८—सूरः बुरूज

(मक्का में उतरी और इसमें २२ आयतें हैं)

ज़रूरी तश्रीह

बेदीनों ने दीन दारों पर सदा ज़ुल्म ढाये हैं और उनको सताया है। उनके ज़ुल्म के तरीक़ों में से एक तरीक़ा यह भी रहा है कि वह आग जलाकर दीन दारों को उसमें झोंक देते। ख़ुदा के मशहूर पैग़म्बर हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को भी उनके मुल्क के बेदीन बादशाह ने आग में झोंकवा दिया था, ख़ुदा ने उनको अपनी क़ुदरत से बचा लिया।

इस सूरह में इसी तरह के एक वाक़िआ का ज़िक्र है, जो हज़रत रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के ज़माने के पहले के दीन दारों के साथ हुआ था, उनके इलाक़े के बादशाह को पता लगा कि

वह उसके मज़हब के ख़िलाफ़ ख़ुदा पर ईमान रखते हैं और हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) को पैग़म्बर मानते हैं तो उसने शहर में बड़े बड़े गड्हे खुदवाये और उनमें आग जलवाई जब आग ख़ूब भड़क गई तो उसने हुक्म दिया कि लोगों से कहा जाये कि वह अपना दीन छोड़ दें, जो लोग यह हुक्म न मानें उनको आग में झोंक दिया जाए। जो लोग पक्के ईमान वाले थे उन्होंने जल कर मर जाना क़बूल किया मगर दीन को नहीं छोड़ा।

जिस ज़माने में यह सूरह उतरी मक्का के बे दीन लोग वहां के मुसल्मानों पर बड़ा ज़ुल्म कर रहे थे, ख़ुदा ने इस वाक़िआ का ज़िक्र करके मुसल्मानों को समझाया और दिलासा दिया कि यह जो तुम पर ज़ुल्म हो रहा है कोई नई बात नहीं है, दीन दारों पर हमेशा ज़ुल्म हुआ किये हैं, जिस तरह पहले लोग ज़ुल्म सहते रहे और दीन पर जमे रहे उसी तरह तुम्हें भी जमे रहना चाहिये, एक रोज़ सबको ख़ुदा के सामने हाज़िर होना है, उस रोज़ सब अपने अपने अमल के मुताबिक़ दोज़ख़ या जन्नत में जायेंगे। बे दीनों के लिये जहन्नम का अज़ाब और तुम्हारे लिये जन्नत की नेमतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्.मानिर्रहीम्

वस्समाऽइ ज़ातिल् बुरूजि (१) वल् यौमिल् मौऊ़दि (२) वशाहिदिंव मश्हूद् (३) क़ुतिल अस्ह़ाबुल् उख़्दूदिन् (४) नारि ज़ातिल् वक़ूदि (५) इज़्हुम अ़लैहा क़ुऊ़दूँ (६) वहुम् अ़ला मायफ़्अ़लून बिल् मुऽमिनीन शुहूद् (७) वमानक़मू मिन्हुम् इल्लाऽ अंय्युऽमिनू बिल्लाहिल् अज़ीज़िल् ह़मीदिल् (८) लज़ी लहू मुल्कुस्समावाति वल् अर्दि

वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् शहीद् (९) इन्नल्लज़ीन फ़तनुल् मुऽमिनीन वल् मुऽमिनाति सुम्म लम् यतूबू फ़लहुम् अज़ाबु जहन्नम व लहुम् अज़ाबुल् हरीक़् (१०) इन्नल्लज़ीन आमनू वअ़मिलुस्सालिहाति लहुम् जन्नातुन् तज्री मिन् तह्तिहल् अन्हार ज़ालिकल् फ़ौज़ुल् कबीर् (११) इन्न बत्श रब्बिक लशदीद् (१२) इन्नहू हुव युब्दिउ व युईद् (१३) व हुवल् ग़फ़ूरुल् वदूदु (१४) ज़ुल् अ़र्शिल् मजीदु (१५) फ़ऽआलुल् लिमा युरीद् (१६) हल् अताक हदीसुल् जुनूदि (१७) फ़िरऔन व समूद् (१८) बलिल्लज़ीन कफ़रू फ़ी तक्ज़ीबिंव् (१९) वल्लाहु मिंव्वराइहिम् मुहीत् (२०) बल् हुव क़ुरआनुम्मजीदुन् (२१) फ़ी लौहिम् महफ़ूज़् (२२)

तर्जमा

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम वाला है

क़सम है बुर्जों (यानी बड़े बड़े सितारों) वाले आसमान की (१) और क़सम है उस (क़ियामत के) दिन की जिस का वादा हो चुका है (२) और क़सम है (उस दिन की पेशी में) हाज़िर होने वाले की, और उन बातों की जो (उसदिन) देखने में आयेंगी (३) बुरा हो खाइयां खोदने वालों का (४) ईंधन भरी आग वाली (खाइयां) (५) जब वह (ज़ालिम) उन (खाइयों) पर बैठे हुए थे (६) और (उन के कारिन्दे) ईमान वालों के साथ जो कुछ कर रहे थे वह उसे देख रहे थे (७) और उन्होंने

उनसे सिर्फ़ इसी बातपर दुश्मनी ठान रक्खी थी कि वह ख़ुदा पर ईमान ले आये थे जो ज़बर्दस्त और हर तरह की ख़ूबियों वाला है (८) जो आस्मानों और ज़मीन की सल्तनत का मालिक है, और ख़ुदा हरचीज़ से अच्छी तरह वाक़िफ़ है (९ जिन लोगों ने ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों को सताया फिर तौबा भी नहीं की तो उन के लिये जहन्नम का अज़ाब है और (ख़ासकर) उन के लिये जलाने वाला अज़ाब है (१०) बेशक जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये उन के लिये जन्नतें हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, यह (जन्नतों का मिलना) बड़ी कामयाबी है (११) बेशक तेरे पर्वरदिगार की पकड़ बहुत सख्त है (१२) बेशक वही पहली बार पैदा करता है, और वही (क़ियामत) में दोबारा पैदा करेगा (१३) और वह बड़ा बख़्शने वाला बड़ी मुहब्बत वाला (१४) अर्श का मालिक और बड़ी शान वाला है (१५) वह जो कुछ चाहता है कर गुज़रता है (१६) क्या तुमको लशकरों की बात पहुंची ? (१७) फ़िरऔन और समूद १* के लशकरों) की (१८) (इन हालात से नसीहत हासिल नहीं करते) बल्कि जिन लोगोंने कुफ्र का रास्ता इख्तियार किया है वह (क़ुरआनके) झुटलाने में लगे हुए हैं (१९) और अल्लाह है कि उन को हर तरफ़ से घेरे हुए है (२०) (ख़ुदा का कलाम ऐसा नहीं कि उसे झुटलाया जाये) बल्कि वह क़ुरआन बड़ी शान वाला है (२१) और लौहि महफ़ूज़ २* में (लिखा हुआ) है (२२)

१*फ़िरऔन की तरह समूद भी एक ज़ालिम क़ौम थी उसका बयान आगे सूरः फ़ज्र में है। २* लौह तख्ती को कहते हैं इससे मुराद एक ऐसी चीज़ है जिसमें ख़ुदा ने अपनी क़ुद्रत से वह सारी बातें लिख दी हैं जो होने वाली हैं क़ुरआन भी दुन्या में उतरने से पहले उस में लिखा हुआ था उस तख़्ती और उस में लिखने की हक़ीक़त (वास्तविकता) इतनी ऊंची है कि इन्सानी अक़्ल उसको समझ नहीं सकती।

९—सूरः तारिक़

(मक्का में उतरी और इसमें १७ आयतें हैं)

जरूरी तश्रीह

ऊंचे आस्मान और जगमगाते हुए सितारे की क़सम खा कर यक़ीन दिलाया गया है कि ख़ुदा की तरफ़ से हर इन्सान के आमाल की निगरानी हो रही है। जिस ख़ुदा ने एक बूंद से इन्सान को पहली बार पैदा किया है उसको दोबारा पैदा करने की भी क़ुदरत है वह एक दिन इन्सान के आमाल का हिसाब ज़रूर लेगा। फिर आस्मान और ज़मीन की क़सम खा कर कहा गया है कि क़ुर्आन और उसका बताया हुआ आख़िरत का अक़ीदा कोई हंसी दिल्लगी की चीज़ नहीं एक पक्की बात है। मक्का के जो लोग ज़िद और सरकशी से क़ुर्आन और आख़िरत के अक़ीदे को झुठलाने की तद्बीरों में लगे हुए हैं वह ख़ुदा के क़ानून को बदल नहीं सकते वह अपनी तद्बीरों में लगा हुआ है यानी अपना काम कर रहा है। ऐसे लोग ज़िन्दगी के थोड़े दिनों की मुहलत से फ़ाइदा उठालें लेकिन जैसे ही आंखें बन्द होंगी सारी हक़ीक़त खुल जायेगी।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम।

वस्समाइ वत्तारिक़ि (१) वमा अद्राक मत्तारिक़ु (२) नज्मुस्साक़िबु (३) इन् कुल्लु नफ़्सिल्लम्मा अलैहा हाफ़िज़् (४) फ़ल्यन्ज़ुरिल् इन्सानु मिम्म ख़ुलिक़् (५) ख़ुलिक़ मिम्माइन् दाफ़िक़ीं (६) यख़्रुजु मिम्बैनिस्सुल्बि वत्तराइब् (७) इन्नहू अला रज्इही लक़ादिर् (८) यौम तुब्-

लस्सराइरु (९) फ़मा लहू मिन् क़ूवतिंव्वला नासिर् (१०) वस्समाइ ज़ातिर्जइ (११) वल् अर्दि ज़ातिस्सद्इ (१२) इन्नहू लक़ौलुन् फ़स्लूँ (१३) वमा हुव बिल्हज़्ल् (१४) इन्नहुम् यकीदून कैदों (१५) व अकीदु कैदा (१६) फ़महहिलिल् काफ़िरीन अम्हिल् हुम् रुवैदा (१७)

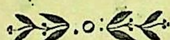
तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ाही मेहरबान बहुत रहम वाला है।

क़सम है आसमान की और क़सम है रात को आनेवाले की (१) और तुमको क्या मालूम कि वह रात को आने वाला क्या है ? (२) वह एक चमकता हुवा सितारा है (३) कोई आदमी ऐसा नहीं जिसपर (ख़ुदा की तरफ़ से) एक निगहबान मुक़र्रर न हो (४) तो इंसान को चाहिये कि वह इसी बात को देख ले कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया है ? (५) एक उछलने वाले पानी (नुत्फ़ा-वीर्य) ही से तो पैदा किया गया है (६) जो (मर्द की) रीढ़ और औरत के) सोने की हड्डियों के बीच से निकलता है (७) बेशक ख़ुदा (इन्सान के मरने के बाद) उसके लौटाने की पूरी क़ुद्रत रखता है (८) जिस दिन छिपी बातों की जांच की जायेगी (९) तो (उसदिन) न इन्सान के पास कोई (अपना) ज़ोर होगा न कोई उसका मददगार ही होगा (१०)

क़सम है मेंह बरसाने वाले आसमान की (११) और क़सम है (बीज के उगते वक़्त) फट जानेवाली ज़मीन की (१२) कि यह क़ुर्आन (हक़ और बातिल—सत्य और असत्य में) फ़ैसला

करदेने वाला कलाम है (१३) और यह कोई हंसी ठठ्ठे की बात नहीं (१४) यह (कुफ्र करने वाले) दांव पर दांव कर रहे हैं (१५) और मैं तदबीर पर तदबीर कर रहा हूँ (१६) तो (ऐ पैग़म्बर!) तुम कुफ्र करने वालों को ढील दो (ज़्यादा नहीं बस) थोड़ी सी ढील दे दो (१७)



१०—सूरः अऽला

(मक्का में उतरी और इस में २६ आयतें हैं)

ज़रूरी तश्रीह

इस सूरह में हज़रत रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम) को तसल्ली दी गई है और समझाया गया है कि ख़ुदा ने जो चीज़ भी पैदा की है उसे पूरे दर्जे तक पहुंचाने का इन्तेज़ाम किया है, इसलिये तुम इसकी फ़िक्र न करो कि क़ुर्आन को भूल जाओगे, उसका पढ़ाना और पूरा करना ख़ुदा का काम है। तुमको मुश्किलों और दुश्वारियों से भी घबराना नहीं चाहिये। नसीहत और हिदायत का सिलसिला जारी रक्खो, जिनलोगों के दिल में ख़ुदा का डर है वह ज़रूर तुम्हारी नसीहत क़बूल करलेंगे, इसका इन्कार तो वह करेंगे जो परले सिरेके बदबख़्त हैं और जिन्हें हमेशा जहन्नम की आग में जलना है।

क़ुर्आन ने जिन सच्चाइयों की तालीम दी है वह कुछ नई नहीं हैं इब्राहीम और हज़रत मूसा (अलैहिमस्सलाम) के पास जो किताबें भेजी गई थीं उनमें भी इन्हीं बातों की तालीम और हिदायत मौजूद है।

हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) बहुत बड़े पैग़म्बर गुज़रे हैं, उनकी औलाद में इतने पैगम्बर हुए कि सारी दुन्या में इस्लाम फैल गया, हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) भी बहुत बड़े पैग़म्बर थे जिनको ख़ुदा की किताब तौरात मिली थी, यहूदी उन्हीं को अपना पैग़म्बर

मानते हैं, हज़रत ईसा, और हज़रत मुहम्मद (अलैहिमस्सलाम,) सब हज़रत इब्राहीम ही की नस्ल से थे।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सब्बिहिस्म रब्बिकल् अऽलल् [१] लज़ी खलक़ फ़सव्वा [२] वल्लज़ी क़द्दर फ़हदा [३] वल्लज़ी अख़्रजल् मर्आ [४] फजअलहू ग़ुसाउअन् अह्वा [५] सनुक़्रिउक फ़ला तन्सा [६] इल्ला माशाउअल्लाह, इन्नहू यऽलमुल् जह्र वमा यख़्फ़ा [७] व नुयस्सिरुक लिल् युस्रा [८] फ़ज़क्किर् इन्न-फ़अतिज़्ज़िकरा [९] सयज़्ज़क्करु मँय्यख़्शा [१०] व यतजन्नबुहल् अश्क़ल् [११] लज़ी यस्लन्नारल् कुब्रा [१२] सुम्म लायमूतु फ़ीहा वला यह्या [१३] क़द् अफ़्लह, मन् तज़क्का [१४] वज़क-रस्म रब्बिही फ़सल्ला [१५] बल् तुऽसिरूनल् ह़यात-दुन्या [१६] वल् आखिरतु खैरूँ व अब्क़ा [१७] इन्न हाज़ा लफ़िस्सुहुफ़िल् ऊला [१८] सुहुफ़ि इब्राहीम व मूसा [१९]

तर्जमा

(ऐ पैग़म्बर !) अपने पर्वरदिगार के नाम की पाकी बयान करो जो सब से ऊंचा है (१) जिसने (हर चीज़ को) बनाया, फिर उसे ठीक किया (२) और वह जिस ने (हर चीज़ का)

अन्दाज़ा ठहरा दिया, फिर (उसे ज़िन्दगी की) राह दिखा दी (३) और वह जिसने (ज़मीन से जानवरों का) चारा निकाला (४) फिर उसको काला कूड़ा करकट बना दिया (५) (ऐ पैग़म्बर !) हम तुम्हें (क़ुर्आन) पढ़ायेंगे, तो तुम (उस में से कुछ) भूलोगे नहीं (६) सिवाय उसके जितना अल्लाह ही (भुलवा देना) चाहे, बेशक वह खुले को भी जानता है और उस बात को भी जो छिपी हुई हो (७) और हम तुम्हें इस आसान (दीन यानी इस्लाम) पर चलने के लिये सुहूलत देंगे (८) तो अगर (तुम देखो कि लोगों को तुम्हारा) समझाना फ़ाएदा पहुंचाता है तो समझाते रहो (९) वह शख़्स जल्दही समझाने को क़बूल कर लेगा जो (अल्लाह से) डरता है (१०) और वह बड़ा बदबख़्त इससे दूरही भागेगा (११) जिसको(दोज़ख़ की) बड़ी आग में जलना है (१२) फिर उसे वहां (तक्लीफ़ों की ज़्यादती के होने पर भी) न मौत ही आयेगी और न वह (चैन से) जी ही सकेगा (१३) बेशक वह शख़्स कामयाब हो गया जो (कुफ़्र और बदअमली से) पाक होगया (१४) और अपने पर्वरदिगार का नाम याद करता रहा और नमाज़ पढ़ता रहा (१५)

(ऐ दुन्या दारो ! तुम आख़िरत की फ़िक्र नहीं करते) बल्कि दुन्या ही की ज़िन्दगी को मुक़द्दम रखते हो (१६) हालां कि आख़िरत ही ज़्यादा बेहतर और ज़्यादा बाक़ी रहने वाली है (१७) बेशक (नेक बख़्ती और बदबख़्ती के) यह उसूल ख़ुदाकी भेजी हुई) अगली किताबों में भी मौजूद हैं (१८) (यानी) इब्राहीम और मूसा की किताबों में (१९)

११----सूरः ग़ाशियः

(मक्के में उतरी और इसमें २६ आयतें हैं)

जरूरी तश्रीह

इस सूरह में पहले क़ियामत की ख़बर देकर यह बात बताई गई है कि नेक और बद ज़िन्दगियों का नतीजा एक सा नहीं हो सकता। आख़िरत में नेकों के लिये ऐश ही ऐश और आराम ही आराम होगा और बदकारों की तक्लीफ़ों और मुसीबतों का कोई ठिकाना न होगा। इसके बाद हज़रत रसूलुल्लाह [सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम] को तसल्ली और आपकी बात न मानने वालों को झिड़की दी गई है, और कहा गया है कि अगर इनमें सोच समझ का माद्दा होता और वह ऊँट, आस्मान, पहाड़ ज़मीन और इनकी हालत पर ग़ौर करते तो यही चीजें उनके ईमान लाने के लिये काफ़ी थीं, बहर हाल आप अपना काम जारी रखिये, अगर वह आप की बात नहीं मानते तो आप पर इसकी ज़िम्मेदारी नहीं। इनको लौट कर आना तो है हमारे ही पास, फिर हम उनसे पूरा पूरा हिसाब चुका लेंगे।

आस्मान, ज़मीन और पहाड़ों के साथ ऊँट का मेल शायद अरब के बाशिन्दों की तरह दूसरे मुल्क के लोगों की समझ में न आये, लेकिन एक अरब जब अपने ऊँट पर सवार होकर अपने मुल्क में सफ़र करता है तो अपनी ज़ात के अलावा उसे चार ही चीजें दिखाई देती हैं, एक उसका ऊँट, दूसरे उसके सर पर ऊँचा आस्मान, तीसरे इर्द गिर्द खड़े हुए पहाड़, चोथे उसके नीचे बिछी हुई ज़मीन। यह मंज़र [दृश्य] ऐसा होता है कि बेइख़्तियार ख़ुदा की क़ुद्रत याद आने लगती है।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम्।

हल् अताक हदीसुल् ग़ाशियः (१) वुजूहुँ य्यौमइज़िन्

ख़ाशिअ़तुन् (२) आमिलतुन् नासिबतुन् (३) तस्ला नारन् हामियतन् (४) तुस्क़ा मिन् ऐ़निन् आनियः (५) लैस लहुम तआ़मुन् इल्ला मिन् दरीइल् (६) लायुस्मिनु वला युग़्नी मिन् जूअ़. (७) वुजूहुंय्योमइज़िन् नाइ़मतुल् (८) लिसअ़्यिहा राद़ियतुन् (९) फ़ी जन्नतिन् आ़लियतिल् (१०) ला तस्मउ फ़ीहा लाग़ियः (११) फ़ीहा ऐ़नुन् जारियः (१२) फ़ीहा सुरु-रुम्मर्फ़ूअ़तूँ (१३) व अक्वाबुम्मौदूअ़तूँ (१४) व नमारिक़ु मस्फ़ूफ़तूँ (१५) व ज़राबीयु मब्सूसः (१६) अफ़ला यन्ज़ु-रून इलल् इबिलि कैफ़ ख़ुलिक़त (१७) व इलस्समाइ कैफ़ रुफ़िअ़त (१८) व इलल् जिबालि कैफ़ नुसिबत् (१९) व इलल् अर्दि कैफ़ सुतिहत् (२०) फ़ज़क्किर, इन्नमा अन्त मुज़क्किर (२१) लस्त अ़लैहिम् बि मुसैतिरिन् (२२) इल्ला मन् तवल्ला व कफ़र (२३) फ़युअ़ज़्ज़िबुहुल्लाहुल् अ़ज़ा-बल् अक्बर (२४) इन्न इलैना इयाबहुम् (२५) सुम्म इन्न अ़लैना हिसाबहुम् (२६)

तर्जमा

(शुरु) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम वाला है।

(ऐ पैग़म्बर !) क्या तुम्हें उस ढांक लेने वाली (यानी क़ियामत) का भी कुछ हाल पहुंचा है ! (१) उस दिन कितने चेहरे ज़िल्लत से लटके हुए होंगे (२) (और उस दिन की मशक़्क़त से थके और मांदे (३) दहकती हुई आग में दाख़िल होंगे (४) उन्हें एक खौलते हुए चशमे का पानी पिलाया जायेगा (५) (वहां)

उनके लिये बदबूदार झाड़ कांटे के सिवा कोई खाना न होगा (६) जो न (बदन को) मोटा ही करेगा, और न भूक ही को दूर करेगा (७) कितने चेहरे उस दिन रौनक़दार होंगे (८) अपने (नेक) आमाल (के अच्छे नतीजे) से राज़ी होंगे (९) आला दर्जे की जन्नत में (१०) वहां वह लोग कोई बेहूदा बात न सुनेंगे (११) उसमें बहता हुआ चश्मा होगा (१२) ऊँचे ऊँचे तख़्त होंगे (१३) ढंग से रखे हुए प्याले होंगे (१४) बराबर बराबर लगे हुए गाव तकिये होंगे (१५) और मख़मल के बढ़िया क़ालीन फैले पड़े होंगे (१६)

तो क्या लोग ऊंट को नहीं देखते कि वह कैसा (अजीब) पैदा किया गया है ? (१७) और आसमान को नहीं देखते कि उसे कैसा ऊंचा बनाया गया है ! (१८ और पहाड़ों को नहीं देखते कि किस तरह खड़े कर दिये गये हैं, (१९) और ज़मीन को नहीं देखते कि कैसी बिछा दी गई है (२०)

तो (ऐ पैग़म्बर !) तुम लोगों को समझाते रहो, क्योंकि तुम तो बस समझा देने वाले हो (२१) तुम उन लोगों पर कुछ दारोग़ा नहीं हो, (कि अपनी बात ज़बर दस्ती मनवालो) (२२) लेकिन (तुम्हारे समझाने पर भी) जो शख़्स मुँह मोड़ेगा, और इन्कार करेगा (२३) तो ख़ुदा (आख़िरत में) उसे बहुत बड़ी सज़ा देगा (२४) बेशक उनको हमारे ही पास लौट कर आना होगा (२५) फिर बेशक हमारे ही जिम्मे उनका हिसाब लेना है (२६)



१२—सूरः फ़ज्र

(मक्का में उतरी और इसमें ३० आयतें हैं)

ज़रूरी तश्रीह

इस सूरह में आद,—समूद,—और फ़िऔंन तीन पुरानी क़ौमों का ज़िक्र आया है। इन तीनों क़ौमों ने अपने अपने ज़माने में बड़ी तरक़्क़ी की थी, और अपनी तरक़्क़ी के घमण्ड में ख़ुदा को भूल गई थीं। फ़िऔंन का हाल सूरह "नाज़िआत" में गुज़र चुका है, वह अपने को सबसे बड़ा ख़ुदा कहता था। आद का भी दावा था कि ज़ोर और क़ूवत में उनसे बढ़ कर कोई नहीं।

फ़िऔंन मिस्र में हुआ था और आद और समूद अरब में गुज़रे थे। अरब में सैकड़ों मील लम्बा एक रेगिस्तानी सहरा (मरु-भूमि) है, जो मुल्क के दक्खिन और उत्तर दोनों तरफ़ फैला हुआ है। इसी सहरा के दक्खिनी हिस्से में आद का वतन था, उनकी सल्तनत फ़ारस की खाड़ी के किनारे किनारे इराक़ के मुल्क तक फैली हुई थी, उस क़ौम को मकानों और महलों के बनाने का बड़ा शौक़ था और इस फ़न (कला) में उसने बड़ी तरक्क़ी की थी। यह लोग जहाँ पहुंचते किसी ऊँची जगह पर अपनी यादगार (स्मारक) के तौर पर एक बड़ी इमारत बना देते, इसी लिये इस सूरह में इस क़ौम को बड़े बड़े सुतूनों वाली क़ौम कहा गया है, यानी जिन्होंने बड़े बड़े खम्बों वाली इमारतें तामीर (निर्माण) की थीं। उस ज़माने में उस क़ौम के टक्कर की दूसरी कोई क़ौम न थी।

कोई क़ौम जब तरक्क़ी की हद को पहुँच जाती है तो वह ख़ुदा को भुला बैठती है। और ख़ुदा को भुला देना ही इन्सान

की सब से बड़ी बदबख़्ती है, जब वह ख़ुदा को भुला देता है तो उसमें हर तरह की ख़राबियां पैदा हो जाती हैं जो किसी तरह दूर नहीं होतीं।

'आद' उन सच्चे मोमिनों की औलाद थे जो हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम) के साथ कश्ती पर सवार होकर तूफ़ान से बच गये थे, लेकिन यह लोग कुफ़्र और शिर्क में फँस गये, जब उन लोगों का फ़साद हद से बढ़ गया तो ख़ुदा ने उन्हीं में से हज़रत हूद (अलैहिस्सलाम) को अपना पैग़म्बर बना कर उनकी हिदायत पर मुक़र्रर (नियुक्त) किया। हज़रत हूद ने उन लोगों को समझाया और उनको ख़ुदा के एहसानात और उसकी मेह्रबानियां याद दिलाईं, पर वह लोग ख़ुदा की नाफ़र्मानी और अपनी शरारत से बाज़ न आये, आख़िर ख़ुदा ने उन पर हवा के तूफ़ान का अज़ाब भेजा, जिसकी कैफ़ियत एक जगह यूं बयान की गई है "ख़ुदा ने उनकी जड़ काट डालने वाली उस हवा को सात रात और आठ दिन तक उन पर चला दिया तो वह उस हवा में इस तरह पड़े हुए थे जैसे खोखले दरख़्तों के तने।"

जिस वक़्त कुर्आन शरीफ़ उतर रहा था अरब के लोग आम तौर पर आद को जानते थे, और उनमें उनकी शान शौकत के बहुत से क़िस्से मशहूर थे, कहीं कहीं उन की इमारतों के खंडर भी पाये जाते थे, लेकिन अब उनके आसार मिट चुके हैं, अरब के दक्खिनी हिस्सों में कुछ खंडर मिलते हैं जो इसी क़ौम के बताये जाते हैं। इसी इलाक़े में एक जगह एक क़ब्र (समाधि) भी है जो हज़रत हूद (अलैहिस्सलाम) की बताई जाती है। उन्नीसवीं सदी में एक अंग्रेज अफ़सर को एक तख़्ती मिली थी जिसकी इबारत (लेख) से पता चलता था कि वह हज़रत हूद के मानने वालों की तख़्ती थी।

२—समूद का वतन अरब के पच्छिम और उत्तर का रेगिस्तान था जिसका नाम उस ज़माने में 'वादियुल क़ुरा' था, उस का यह नाम इसलिये पड़ा कि उस मैदान में बहुत सी छोटी छोटी बस्तियाँ थीं। मदीना और तबूक के बीच एक स्टेशन पड़ता है जिसका नाम 'मदाएने सालिह" है। यही समूद का सद्र मक़ाम (मुख्य स्थान) था, पुराने ज़माने में यह 'हिज्र' कहलाता था। 'समूद' को भी महल और इमारतें बनाने का बड़ा शौक़ था. वह मैदानों में और पहाड़ों को काट काट कर इमारतें बनाते थे, उनकी इमारतें ऐसी ही थीं जैसे हिन्दुस्तान में ऐलोरा और एजन्ता वग़ैरह में पहाड़ों को काट कर बनाई हुई इमारतें हैं।

समूद उन लोगों की औलाद थे जो हज़रत हूद अलैहिस्सलाम पर ईमान लाये थे और इसी वजह से ख़ुदा के अज़ाब से बच गये थे, लेकिन आगे चलकर यह लोग भी कुफ्र और शिर्क में फँस गये और अच्छे कामों की जगह बुरे काम करने लगे, उनकी हिदायत के लिये ख़ुदा ने उन्हीं में से हज़रत सालिह (अलैहिस्सलाम) को पैग़म्बर बनाया, लेकिन वह उन पर ईमान न लाये और उनके दुश्मन हो गये, उन्होंने कहा अगर तुम ख़ुदा के सच्चे पैग़म्बर हो तो अपनी पैग़म्बरी की कोई निशानी दिखाओ, उनकी मांग पर एक ऊँटनी ज़ाहिर हुई जो उनकी तबाही की तम्हीद (भूमिका) थी. हज़रत सालिह ने फ़र्माया—तुम्हारी मांग पर ख़ुदा की तरफ़ से यह ऊँटनी ज़ाहिर हुई है, यह तुम्हारी ज़मीन पर चरेगी और तुम्हारे कुएं से एक दिन सिर्फ़ ऊँटनी पानी पियेगी और एक दिन तुम पियोगे, अगर तुमने ऊँटनी को कोई नुक़सान पहुँचाया तो तुम पर ख़ुदा का अज़ाब आ जायेगा।

कुछ लोग हज़रत सालिह पर ईमान लाये थे उन्होंने आपकी हिदायत की पाबन्दी की, लेकिन जो लोग आपके मुख़ालिफ़ (विरोधी थे उन्होंने आपस में सलाह करके एक शख़्स को मुक़र्रर कर दिया जिसने एक रात हमला करके उस ऊँटनी को मार डाला नतीजा यह हुआ कि समूद भी ख़ुदा के अज़ाब में गिरफ़्तार हो कर तबाह हो गये।

हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के ज़माने तक समूद की बस्तियों के खण्डर मौजूद थे। जो लोग अरब से तिजारत के लिये शाम जाते थे वह उन्हीं खण्डरों से होकर गुज़रते थे, आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तबूक को जाते हुए समूद के खण्डरों से गुज़रे तो एक कुएँ को बताया कि हज़रत सालिह की ऊँटनी इसी से पानी पीती थी, और मुसल्मानों को हिदायत की कि इस कुएं का पानी न पियें। आपने एक पहाड़ी दर्रा भी दिखाया जिसमें हज़रत सालिह की ऊँटनी रहती थी, वह दर्रा अब भी मौजूद है।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

वल्फ़ज्रि (१) व लयालिन् अश्रिंव् (२) वश्श-फ़्इ, वल्वत्रि (३) वल्लैलि इज़ा यस्र (४) हल् फ़ी ज़ालिक क़समुल्लिज़ी हिज्र (५) अलम् तर कैफ़ फ़अल रब्बुक बिआदिन् (६) इरम ज़ातिल् इमादिल् (७) लती लम् युख़लक मिस्लुहा फ़िल् बिलादि (८) व समूदल्लज़ीन जाबुस्सख़्र बिल्वादि (९) व फ़िर्औन ज़िल् औतादिल् (१०) लज़ीन तग़ौ फ़िल् बिलादि

(११) फ़ अक्सरू फ़ीहल्फ़साद (१२) फ़सब्ब अ़लैहिम् रब्बुक सौत़ अ़ज़ाबिन् (१३) इन्न रब्बक लबिल्मिर्साद् (१४) फ़ अम्मल्इन्सानु इज़ा मब्तलाहु रब्बुहू फ़ अक्रमहू व नऽअ़महू, फ़यक़ूलु रब्बी अक्रमन् (१५) व अम्मा२ इज़ा मब्तलाहु फ़क़दर अ़लैहि रिज़्क़हू, फ़यक़ूलु रब्बी२ अहानन् (१६) कल्ला बल्ला तुक्रिमूनल्यतीम (१७) वला तहा२द्दून अ़ला त़आ़मि- ल्मिस्कीनि (१८) व तऽकुलूनत्तुरास अक्लल्लम्मौं (१९) व तुहिब्बूनल्माल हुब्बन् जम्मा ([illegible]) कल्ला२ इज़ा दुक्कातिल् अर्दु दक्कन् दक्कौं (२१) व जा३अ रब्बुक वल्मलकु सफ़्फ़न् सफ़्फ़ा (२२) व जी३अ यौमइज़िम् बिजहन्नम यौमइज़ीं यतज़क्करुल् इन्सानु व अन्ना लहुज़्ज़िक्रा (२३) यक़ूलु या लैतनी क़द्दम्तु लिहयाती (२४) फ़यौम इज़िल्ला युअ़ज़्ज़िबु अ़ज़ाबहू अहदूँ (२५) वला यूसिक़ु वसाक़हू२ अहद् (२६) या२ अय्यतुहन्नफ़्सुल् मुत्मइन्न (२७) तुर्जिइ इला रब्बिकि रादि़यतम्मर्दीयः (२८) फ़द्ख़ुली फ़ी इ़बादी (२९) वद्ख़ुलीजन्नती (३०)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम वाला है।

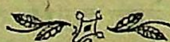
क़सम है सुब्ह की [१] और क़सम है दस रातों की [२]

और क़सम है जोड़े की और ताक़ की [३] और क़सम है रात की जब वह गुज़रने लगे [४] समझ बूझ वालों के लिये इन (चीज़ों) में बड़ी क़सम मौजूद है [५] (ए पैग़म्बर!) क्या तुमने नहीं देखा कि तुम्हारे पर्वरदगार ने आद एरम के साथ कैसा सुलूक किया ? [६] जो ऊँचे ऊँचे सुतूनों (की इमारतों) के मालिक थे [७] मुल्कों में उनकी नज़ीर नहीं पैदा की गई [८] और समूद के साथ क्या किया जो वादी (उलक़ुरा) में (इमारतें बनाने के लिये) पत्थर काटा करते थे [६] और उस मीखों वाले फ़िऔन के साथ (क्या किया ?) [१०] यह (सब) वह थे जिन्होंने शहरों में बड़ा सर उठा रक्खा था [११] और उनमें बहुत ही ज़्यादा ख़राबी फैला दी थी [१२] आख़िर तुम्हारे पर्वरदगार ने उन पर अज़ाब का कोड़ा बरसाया [१३] बेशक तुम्हारा पर्वरदगार (मुजरिमों की) घात में लगा रहता है [१४]

फिर भी इन्सान (की हालत यह है कि) जब उसका पर्वरदगार उसको (इस तरह से) जाँचता है (कि) उसको इज़्ज़त देता है और उसे नेमत अता करता है तो वह (इतरा कर) कहने लगता है—मेरे पर्वरदगार ने मुझे बड़ी इज़्ज़त दी [१५] मगर जब वह (एक दूसरी तरह से) उसकी जाँच करता है और उसकी रोज़ी उसपर तंग कर देता है तो वह (शिकायत के तौर पर) कहने लगता है—मेरे पर्वरदगार ने मुझको बेइज़्ज़त कर दिया [१६] नहीं (तुम्हारे पर्वरदिगार ने तुमसे अपनी दी हुई नेऽमत बे वजह नहीं छीन ली,) बल्कि (तुम्हारा हाल यह है कि) तुम यतीम बच्चे की ख़ातिर नहीं करते [१७] और मुहताज के खाना खिलाने पर एक दूसरे को उकसाते नहीं [१८] और मरे हुए आदमी का माल (उसके

हक़दारों को देने की जगह खुद) समेट समेट कर खा जाते हो [१९] और दौलत से बहुत ज्यादा मुहब्बत करते हो—[२०]

खबरदार ! जब ज़मीन तोड़ कर चकना चूर कर दी जायेगी [२१] और तुम्हारा परवरदिगार आयेगा और उसके साथ फ़रिश्ते भी परा बांधे आ पहुँचेंगे [२२] उस दिन जहन्नम (सब के सामने) ले आई जाएगी, उस दिन इन्सान याद करेगा कि उसने (दुन्या में क्या किया था) लेकिन अब उसको उस याद (से फ़ायदा उठाने) का मौक़ा ही कहां होगा ? [२३] वह (पछता पछता कर) कहेगा—ऐ काश ! मैंने अपनी (इस) ज़िन्दगी के लिये (कुछ नेकियां) आगे भेज दी होतीं [२४] तो उस दिन न खुदा के अज़ाब जैसा कोई अज़ाब देगा [२५] न उसके जकड़ने जैसा कोई जकड़ेगा [२६] (खुदा अपने नेक बन्दे से फ़रमायेगा) ऐ चैन वाली जान ! [२७] अपने पर्वरदिगार की तरफ़ लौट चल, तू उससे खुश वह तुझसे खुश ! [२८] फिर मेरे बन्दों में मिल जा [२९] और मेरी जन्नत में दाख़िल हो जा ! [३०]



१३—सूरः बलद

(मक्के में उतरी और इसमें २० आयतें हैं)

ज़रूरी तशरीह

इस सूरह में शह मक्का और पैदा करने वाले और पैदा होने वाले यानी इन्सान की हालत को गवाह बनाकर यह बात समझाई गई है कि यह दुन्या जिसमें इन्सान पैदा किया गया है और इन्सानी ज़िन्दगी पैदाइश ही के वक्त से तक्लीफ़ों और मशक़्क़तों से भरी हुई है, किसी इन्सान को इन से छुटकारा नहीं ।

इस समझाने में ख़ुदा ने अपने रसूल और मुसलमानों को तसल्ली भी दी है कि वह मक्का में जो रंज और तकलीफ़ उठा रहे हैं उस से घबरायें नहीं, दुन्या में कोई इन्सान नहीं जिसे किसी तरह का ग़म नहीं, जिसे दीन का ग़म नहीं उसे दुन्या का ग़म है,। इसी के साथ इस्लाम के दुश्मनों को भी ख़बरदार किया गया है कि वह जो इस्लाम और मुसलमानों को नुक़्सान पहुंचाने के लिये वे धड़क माल ख़र्च कर रहे हैं और इस से बे पर्वा हैं कि ख़ुदा इनके करतूतों को देख रहा है। एक रोज़ उनको अपने किये का फल भोगना पड़ेगा ख़ुदा ने उनको भलाई बुराई के दोनों रास्ते दिखा दिये और दोनों के नतीजे से आगाह कर दिया। इंसान जिस रंज और मशक़्क़त की हालत में पैदा किया गया है उससे छुटकारा पाने का यही एक तरीक़ा है कि इन्सान ख़ुदा को माने, उसके दिये हुए माल को बुराई के काम में ख़र्च करने की जगह भूकों, मुहताजों और यतीमों को खिलाये और भलाई के दूसरे कामों में ख़र्च करे, यही है घाटी से गुज़रना और सचमुच ज़िन्दगी का मैदान जीतना।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम्

ला उक़्सिमु बिहाज़ल् बलदि (१) वअन्त हिल्लुम् बिहाज़ल् बलदि (२) व वालिदिंव्वमा वलद् (३) लक़द् खलक़्नल इन्सान फ़ीकबद् (४) अयह्सबु अल्लंय्यक़्दिर अलैहि अह़द (५) यक़ूलु अह्लक्तु मालल् लुबदा (६) अयह्सबु अल्लम्यरहू अह़द् (७) अलम् नज्अल्लहू ऐनैनि (८) वलिसानौं व शफ़तैनि (९) व हदैना हुन्नजदैन् (१०) फ़लक़्तहमल् अक़बत (११) वमा अद्राक मल् अक़बः (१२) फ़क्कु

रक़बतिन् (१३) औ इतआ़मुन् फ़ी यौमिनज़ी मसग़बतीं (१४) यतीमन् ज़ामक़ रबतिन् (१५) औ मिस्कीनन् ज़ा मत्र-बः)१६) सुम्म कान मिनल्लज़ीन आमनू वतवासौ बिस्सब्रि वतवासौ बिल् मर्हमः (१७) उलाइक असहाबुल् मैमनः (१८) वल्लज़ीन कफ़रू बिआयातिना हुम् असहाबुल् मश्अमः (१६) अलैहिम् नारुम्मुसदः (२०)।

तर्जमा।

(शुरू) ख़ुदा के नाम से जो बड़ा ही मेहरबान बहुत रहम वाला है

मैं क़सम खाता हूँ इस शहर (मक्का) की [१] और (ऐ पैग़म्बर ! एक दिन तुम इस शहर में (फ़ातिह (विजयी) की हैसियत) से दाखिल होने वाले हो [२] और क़सम खाता हूं बाप और बेटे की (यानी ख़ुद इंसान की हालत की) [३] बेशक हमने इन्सान को मशक़्क़त में (बसर करने वाला) बनाया है [४] क्या वह समझता है कि उस पर कोई क़ाबू न पासकेगा ? [५] वह (बड़े घमण्ड से) कहता है:—मैंने [मुहम्मद की मुख़ालिफ़त में) बहुत सा माल खपा डाला [६] क्या वह समझता है कि उसे किसी ने (यानी ख़ुदा ने) देखा नहीं ? [७] क्या हम ने उस को दो आंखें नहीं दीं ? [८] और एक ज़बान और दो होंट नहीं दिये,[६] और हमने उसे (भलाई और बुराई के) दोनों रास्ते दिखा दिये [१०] फिर भी वह घाटी में से होकर न गुज़रा [११] और तुमने क्या समझा कि वह घाटी क्या है ? [१२] वह घाटी है ग़ुलामी या क़र्ज़ से किसी की) गरदन छुड़ा देना [१३] या फ़ाक़ा के दिन खाना खिला देना [१४] किसी रिश्ता दार यतीम को [१५] या धूल में अटे हुए किसी मुहताज को

(माल खर्च करने की डींग मारने वाले को चाहिये था कि वह नेकी के यह सब काम करता) [१६] फिर वह उन लोगों में से हो जो ईमान लाये और जिन्हों ने एक दूसरे को सब्र की ताकीद की और एक दूसरे को तरस खाने की ताकीद की [१७] यही लोग अच्छे नसीब वाले हैं [१८] और जिन लोगों ने हमारी आयतों का इन्कार किया वही लोग बुरे नसीब वाले हैं [१९] उन पर ऐसी आग मुस्लत होगी, जो ऊपर से बन्द होगी [२०]



१४—सूरः शम्स

(मक्के में उतरी और इसमें १५ आयतें हैं)

ज़रूरी तशरीह

सूरज, चांद, दिन, रात, आस्मान, ज़मीन और आदमी की जान (आत्मा) को गवाह बनाकर दो टुक बात कह दी गई है कि नेकी और बदी एक नहीं हैं और न दोनों का नतीजा बराबर हो सकता है। जिसने ईमान लाकर और भले काम करके अपने को सँवार लिया वह भलाई पा गया, और जिसने बुराई का रास्ता इख़्तियार किया वह तबाह हुआ। मसाल के तौरपर कहा गया है कि क़ौमे समूद का नतीजा देख लो, ख़ुदा से सर्कशी और नाफ़र्मानी करके कोई बच नहीं सकता।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम।

वश्शम्सि व ज़ुहाहा, (१) वल क़मरि इज़ा तलाहा, (२) वन्नहारि इज़ा जल्लाहा, (३) वल्लैलि इज़ा यग़्शाहा, (४) वस्समाइ वमा बनाहा, (५) वल अर्दि वमा तहाहा,

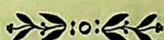
(६) व नफ़्सिँव्वमा सव्वाहा (७) फ़ अल्हमहा फ़ुजूरहा वतक़्वाहा, (८) क़द् अफ़्लह् मन् ज़क्काहा (६) व क़द् ख़ाब मन् दस्साहा (१०) कज़्ज़बत् समूदु बितग़्वाहा, (११) इज़िम्बअ़स अश्क़ाहा, (१२) फ़क़ाल लहुम् रसूलुल्लाहि नाक़तल्लाहि व सुक़्याहा, (१३) फ़कज़्ज़बूहु फ़अ़क़रूहा फ़दम्दम अ़लैहिम् रब्बुहुम् बिज़म्बिहिम् फ़सव्वाहा, (१४) वला यख़ाफ़ु उ़क़्बाहा (१५)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम वाला है।

क़सम है सूरज की और उसकी चढ़ती हुई धूप की (१) और क़सम है चांद की जब वह सूरज के पीछे आये (२) और क़सम है दिन की जब सूरज उसे ख़ूब उजाला कर दे (३) और क़सम है रात की जब वह सूरज को ढांक ले (४) और क़सम है आसमान की और उसकी जिसने उसे बनाया है (५) और क़सम है ज़मीन की और उसको जिसने उसे फैलाया है (६) और क़सम है (आदमी की) जान की और उसकी जिसने उसे ठीक बनाया (७) फिर उसे उसकी बदकारी और परहेज़ गारी की समझ देदी (८) कि बेशक वह शख़्स मुराद को पहुँच गया जिसने अपने नफ़्स को पाक कर लिया (६) और बेशक वह शख़्स ना मुराद हुवा जिसने उसे धूल में मिला दिया (१०) समूद (क़ौम) ने अपनी शरारत से (ख़ुदा के पैग़म्बर को) झुटलाया (११) जब कि उनमें का सब से बड़ा बद बख़्त (पैग़म्बर की मुख़ालिफ़त के लिये) उठ खड़ा हुआ (१२) तो ख़ुदा के पैग़म्बर (सालिह) ने उनसे कहाः—ख़ुदा की (भेजी

हुई) ऊंटनी और उसके पानी पीने की बारी (से ख़बरदार रहना) (१३) फिर भी उन लोगों ने उस (पैग़म्बर) को झुटला दिया और ऊंटनी को मार डाला, आख़िर उनके पर्वरदिगार ने उनके गुनाह की वजह से उन पर तबाही डाल दी, और उस (बस्ती) को बराबर कर दिया (१४) और वह ऐसे मुजरिमों (की तबाही) के नतीजे की कुछ परवा नहीं करता (१५)



१५—सूरः लैल

(मक्का में उतरी और इसमें २१ आयतें हैं)

ज़रूरी तश्रीह

अंधेरी रात, उजियाले दिन, नर और मादा की क़सम खा कर यानी उनकी हालतों को गवाह बनाकर यह हक़ीक़त समझाई गई है कि जिस तरह इन्सानों के रास्ते और उनके काम जुदा जुदा हैं, इसी तरह उनके मामले में ख़ुदा के क़ानून भी अलग अलग हैं। जो लोग भले काम करना चाहते हैं ख़ुदा उनके लिये वह काम आसान कर देता है और जो बुरे काम करते हैं उनके लिये उन कामों को आसान बना देता है, दोनों तरह के लोग अपने अपने रास्ते पर चलते हुए अपनी अपनी मंज़िल पर यानी जन्नत और दोज़ख़ तक पहुंचते हैं।

समाज के ग़रीबों और मुहताजों की मदद पर जगह जगह ज़ोर दिया गया है और माल की बेजा मुहब्बत और इसपर ग़ुरूर करने को बुरा ठहराया गया है। इस सूरः में भी ख़ैरात (दान) की तारीफ़ और कंजूसी की बुराई बयान की गई है। दुन्या और आख़िरत का इख़्तियार ख़ुदा के हाथ में है, नेकी और बदी की जज़ा और सज़ा का उसने जो क़ानून मुक़र्रर कर दिया है उस से कोई बच नहीं सकता।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम् ।

वल्लैलि इज़ा यग़्शा (१) वन्नहारि इज़ा तजल्ला (२) वमा ख़लक़ज़्ज़कर वलउन्सा (३) इन्न सऽ्य-कुम लशत्ता (४) फ़अम्मा मन् अऽ्ता वत्तक़ा (५) व सद्दक़ बिल्हुस्ना (६) फ़सनुयास्सिरुहू लिल्युस्रा (७) व अम्मा मम्बख़िल वस्तग़्ना (८) व कज़्ज़ब बिल्.हुस्ना (९) फ़सनुयस्सिरुहू लिल् उस्रा (१०) वमा युग़्नी अन्हु मालुहू इज़ा तरद्दा (११) इन्न अलैना लल् हुदा (१२) वइन्न लना लल् आख़िरत वल् ऊला (१३) फ़अन्ज़तुकुम् नारन् तलज़्ज़ा (१४) लायस्लाहार इल्लल् अश्क़ल् (१५) लज़ी कज़्ज़ब वतवल्ला (१६) व सयुजन्नबुहल अत्क़ल् (१७) लज़ी युऽ्ती मालहू यतज़क्का (१८) व मा लिअहदिन् इन्दहू मिन् निऽ्मतिन् तुज्ज़ा (१९) इल्लब् तिग़ाउअ वज्हि रब्बिहिल् अऽ्ला (२०) वल-सौफ़ यर्दा (२१)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम वाला है ।

क़सम है रात की जब वह छा जाये (१) और क़सम है दिन की जब वह चमक उठे (२) और क़सम है उसकी जिसने नर और मादा (दो तरह की मख़्लूक़) पैदा की (३) बेशक

तुम्हारी कोशिश तरह तरह की है (४) सो जिसने (ख़ुदा की राह में अपना माल) दिया और (उसका) डर रक्खा (५) और अच्छी बात (यानी इस्लाम) को सच माना (६) तो हम उसे आराम की राह के लिए आसानी देंगे (७) और जिसने कंजूसी की और बे परवाई बरती (८) और अच्छी बात (यानी इस्लाम) को झुटलाया (९) तो हम उसे तकलीफ़ की राह के लिये आसानी देंगे (१०) और उसका माल उसे कुछ फ़ायदा न पहुँचायेगा जब वह तबाही (के गढ़हे) में गिर पड़ेगा (११) बेशक हमारे ही ज़िम्मा राह बताना है (१२) और बेशक आख़िरत और दुन्या (का इख़्तियार) हमीं को हासिल है (१३) सो मैंने तुमको भड़कती हुई आग से ख़बरदार कर दिया (१४) उसमें वही जलेगा जो बड़ा बद बख़्त है (१५) जिसने (हक़ को) झुटलाया और मुँह फेर लिया (१६) और जो बड़ा परहेज़गार है वह उस आग से दूर ही रक्खा जायेगा (१७) (यानी) वह शख़्स जो (गुनाह से) पाक होने के लिये अपना माल (ख़ुदा की राह में) देता है (१८) हालांकि उसके ज़िम्मा किसी का कुछ एहसान नहीं होता जिसका बदला उतारना मक़सूद हो (१९) वह तो सिर्फ़ अपने आलीशान पर्वरदिगार की रज़ामंदी चाहता है (२०) और वह शख़्स जल्द ही (अपने पर्वरदिगार की बख़शिश से ख़ुश हो जायेगा (२१)



९३—सूरः ज़ुहा

(मक्के में उतरी और इसमें ११ आयतें हैं)

ज़रूरी तश्रीह

यह सूरह हज़रत रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बारे में है। कुछ दिनों के लिये आप के पास 'वही' यानी ख़ुदा की तरफ़ से हिदायत का आना बन्द हो गया, इससे आप की तबीअत उदास रहा करती थी आप के दुश्मन भी ताना देने लगे कि आप के ख़ुदा ने आप को छोड़ दिया। यह सूरः इन्हीं तानों के जवाब में उतरी।

दिन रात का आना जाना इस बात का सबूत है कि हालत में हेर फेर क़ुदरत का एक ख़ास क़ानून है, इसी क़ानून के मुताबिक़ यह बात है कि वही आती थी फिर रुक गई, रुकने के बाद फिर आयेगी, ख़ुदा ने अपने रसूल के लिये यतीमी की हालत में पर्वरिश का सामान किया वह अपनी क़ौम की बुरी हालत का सुधार करना चाहते थे लेकिन इस का कोई रास्ता दिखाई न देता था तो ख़ुदा ने आप को अपना पैग़म्बर बना कर सारी दुन्या की इस्लाह और भलाई की राह दिखाई। आप के पास माल न था, ख़ुदा ने अपनी मेहबानी से वह कुछ दिया कि उसके आगे बादशाहों की बादशाही की भी कोई हक़ीक़त न थी। फिर ख़ुदा आप को छोड़ कैसे देगा? और आप से नाराज़ कैसे हो जायेगा? आप के शुरू से आप का आख़िर अच्छा है, दूर दूर के मुल्कों और क़ौमों में आप का ज़िक्र पहुंचेगा और आप की तालीम और हिदायत से इस्लाम ख़ूब तरक्क़ी करेगा और इस के अलावा दुन्या और आख़िरत में ख़ुदा आप को इतना कुछ देगा कि आप ख़ुश हो जायेंगे।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम्

वद्दुहा [१] वल्लैलि इज़ा सजा [२] मा

वद्दअ़क रब्बुक वमा .क़ला [३] वलल् आख़िरतु खै़रुल्लक मिनल् ऊला (४) वलसौफ़ युऽ.तीक रब्बुक फ़तर्ज़ा (५) अलम् यजिद्क यतीमन् फ़आवा, (६) व वजदक ज़ा३-ल्लन् फ़हदा (७) व वजदक आ़इलन फ़अग़्ना (८) फ़अम्मल् यतीम फ़.ला तक़्हर् (९) व अम्मस्सा३इल फ़.ला तन्हर्,(१०) व अम्मा बिनिऽ.मति रब्बिक फ़.हद्दिस् (११)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेह्रबान बहुत रह़्म वाला है।

क़सम है चढ़ते दिन की [१] और क़सम है रात की जब वह अंधेरी हो जाये [२] (कि ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारे पर्वरदिगार ने न तुमको छोड़ा है और न तुमसे नाराज़ हुआ है [३] और बेशक आख़िरत तुम्हारे लिए दुन्या से बेहतर है [४] और यक़ीनन जल्द ही तुम्हारा पर्वरदिगार तुम्हें इतना देगा कि तुम ख़ुश हो जाओगे [५] क्या उसने तुम्हें यतीमी की हालत में न पाया था (जब कि तुम्हारे लिये कोई ठिकाना न था) फिर उसने तुमको ठिकाना दिया [६] और (यही नहीं) उसने तुम्हें भटकता पाया तो तुम्हें राह दिखाई [७] और उसने तुमको मुहताज पाया तो मालदार कर दिया [८] इसलिये यतीम पर सख़्ती न करना [९] और मांगने वाले को झिड़की न देना [१०] और अपने पर्वरदिगार के इह़सान का चर्चा करते रहना [११]



१७—सूरः इंशिराह.

(मक्का में उतरी और इसमें ८ आयतें है)

ज़रूरी तशरीह

इस सूरह में ख़ुदा ने अपने रसूल को तस्कीन दी है और फ़र्माया है कि मुश्किलों से घबराना नहीं चाहिये। नुबूवत और पैग़म्बरी का इल्म और इर्फ़ान (ज्ञान) ऐसा नहीं जिसकी किसी इन्सानी दिल में समाई हो सके, लेकिन ख़ुदा ने अपनी मेहरबानी से इसके लिये आप के दिल को खोल दिया। पैग़म्बरी की ज़िम्मादारियों का बोझ आप की पीठ तोड़े डाल रहा था, इस बोझ को भी अपने फ़ज़्ल (कृपा) से हल्का कर दिया। इस्लाम फैल रहा है और आपके काम के साथ आप का नाम भी ऊंचा होता जा रहा है। इसलिये आप को समझ लेना चाहिये कि कोई मुश्किल नहीं जिसके साथ आसानी न हो, आइन्दा भी ख़ुदा आपकी मुश्किलों को आसान करता रहेगा।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम्।

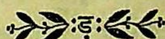
अलम् नश्रह् लक सद्रक (१) व वज़अ्ना अन्क विज़्रकल् (२) लज़ी अन्क़ज़ ज़ह्रक (३) व रफ़अ्ना लक ज़िक्रक् (४) फ़इन्न मअ़ल् उस्रि युस्रन् (५) इन्न मअ़ल् उस्रि युस्रा (६) फ़इज़ा फ़रग़्त फ़न्सब् (७) व इला रब्बिक फ़र्ग़ब्। (८)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम वाला है।

(ऐ पैग़म्बर !) क्या हमने तुम्हारे लिये तुम्हारे सीने को खोल

नहीं दिया [१] और हमने तुमसे तुम्हारा (वह) बोझ उतार दिया [२] जिसने तुम्हारी पीठ तोड़ रक्खी थी [३] और हमने तुम्हारे लिये तुम्हारे ज़िक्र को ऊँचा कर दिया [४] तो बेशक मुश्किल के साथ आसानी है [५] बेशक मुश्किल के साथ आसानी होती है [६] तो जब तुम (दीन की तब्लीग़ के काम से) ख़ाली हो तो (इबादत में) मेहनत करो [७] और अपने पर्वरदिगार की तरफ़ दिल लगाओ [८]



१८—सूरः तीन

(मक्का में उतरी और इस में ८ आयतें हैं)

ज़रूरी तशरीह

इस सूरः के शुरू में 'तूर' पहाड़, और शहर 'मक्का' के साथ 'इन्जीर' और 'ज़ैतून' की क़सम खाई गई है। यह क़सम गवाही और सबूत के मानों में है। आलिमों ने लिखा है कि इन्जीर और ज़ैतून से मुराद (अभिप्राय) यह दोनों फल नहीं बल्कि वह जगहें हैं जहां के यह दोनों फल अरब में मशहूर थे। मुल्क शाम में दो पहाड़ हैं जिन के पास 'बैतुल मुक़द्दस' या 'यरोश्लम' है, इन्हीं दोनों जगहों में यह दोनों चीज़ें ज़्यादा पैदा होती हैं।

'बैतुल मुक़द्दस' जहां हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) पैदा हुए, और जो 'बनी इस्राईल' के तमाम पैग़म्बरों का वतन है, 'तूर' पहाड़ जिस पर हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) को पैग़म्बरी और ख़ुदा की किताब 'तौरात' मिली, शहर मक्का जिसमें हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्स-लाम) ने कअ्बा बनाया और अपनी औलाद को बसाया, और जिसमें हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पैदा हुए, इन सब

की तारीख़ गवाह है कि ख़ुदा ने इन्सान की बनावट में कैसी कैसी ख़ूबियां और सलाहियतें (योग्यताएं) रखी हैं । इन सब ज़मीनों से उठने वाले पाक इन्सानों ने दुन्या में कितनी नेकी फैलाई, इन्सानियत को कितना ऊँचा उठा दिया, कि उनकी तालीम और हिदायत के रौशन चिराग़ों से आज तक दुन्यां जगमगा रही है, इस रोशनी में चलने वाले कभी बुराई के अंधेरों में नहीं भटक सकते । फिर इन्हीं जगहों में वह लोग भी हुए जो ख़ुदा के इन बुज़ुर्ग पैग़म्बरों पर ईमान नहीं लाए, उनको झुटलाया, उनकी तालीम और हिदायत के मानने से इन्कार किया, और वह तबाही और बर्बादी के सब से गहरे गढ़हे में फेंक दिये गये।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम् ।

वत्तीनि वज़्ज़ैतूनि (१) व तूरि सीनीन, (२) व हाज़ल् बलदिल अमीनि (३) लक़द् ख़लक़्नल् इन्सान फ़ीअह्सनि तक़्वीम् (४) सुम्म रदद्नाहु अस्फ़ल साफ़िलीन (५) इल्लल्लज़ीन आमनू व अमिलुस्सालिहाति फलहुम् अज्रुन् ग़ैरु मम्नून् (६) फ़मा युकज़्ज़िबुक बअ्दु बिद्दीन् (७) अलैसल्लाहु बिअह्कमिल् हाकिमीन् (८)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम वाला है ।

क़सम है इंजीर की और ज़ैतून की [१] और तूरे सीना (पहाड़) की [२] और इस अमन वाले शहर (मक्का) की [३] कि बेशक हमने आदमी को बहुत हसीन सांचे में ढाला है [४] फिर हमने उसे सबसे ज़्यादा नीची हालत की तरफ़ लौटा दिया [५] सिवा उन लोगों के जो ईमान लाये और

नेकियां कीं तो उनके लिये कभी ख़त्म न होने वाला सवाब है [६] तो इस (बात के जानने) के बाद भी (ऐ इंसान !) कौन सी चीज़ तुझे जज़ा और सज़ा के झुठलाने पर आमादा करती है [७] क्या अल्लाह सब हाकिमों से बढ़ कर हाकिम नहीं है ? [८]

९६—सूरः अ़लक़

(मक्का में उतरी और इसमें १९ आयतें हैं)

ज़रूरी तशरीह

हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) रसूल होने से पहले जब आप की उम्र ४० बरस की थी, कुछ दाना और सत्तू लेकर पहाड़ के एक ग़ार (खोह) में जिसका नाम 'ह़िरा' था चले जाते, वहां प्यासों को पानी पिलाते, भूले भटकों को रास्ता बताते, और अपनी समझ बूझ के मुताबिक़ ख़ुदा की इबादत करते, खाने पीने का सामान ख़त्म हो जाता तो घर आते और सामान लेकर फिर उसी ग़ार में चले जाते, उसी हालत में एक रोज़ ख़ुदा के फ़रिश्ते हज़रत जिब्रील आप पर ज़ाहिर हुए और कहा कि ख़ुदा ने आप को अपना रसूल बनाया है और आप के पास यह 'वह़ी' (आज्ञा) भेजी है। इसके बाद हज़रत जिब्रील ने आप को इस सूरह की पहली पांच आयतें 'इक़रऽ से 'मालम् यऽलम् तक पढ़ाईं। इन आयतों में आं हज़रत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को बताया गया है कि तुम पढ़ना लिखना नहीं जानते तो क्या हुआ जिसने तुमको अपना रसूल बनाया है वह ख़ुद तुमको सब कुछ पढ़ायेगा और बतायेगा, तुम उस का नाम लेकर पढ़ना शुरू कर दो। इन्सान ही क्या था और वह क्या जानता था, ख़ुदा ने उसे जमे हुए ख़ून की फुटकी से बनाया, उसे अक़्ल और शुऊर दिया, क़लम के ज़रीआ लिखने की समझ

बूझ दी, ख़ुदा तुम्हें भी जिब्रील के ज़रीआ रिसालत और पैग़म्बरी की तालीम देगा।

बाद की आयतों में उन हालतों की तरफ़ इशारा है जिन का रसूल बनने के बाद आं हज़रत को सामना हुआ, । आप ही की क़ौम आप की दुश्मन बन कर खड़ी हो गई, क़ौम में बड़े बड़े सर्दार थे, उन में किसी को माल दौलत और जायदाद जागीर का घमण्ड था, किसी को बेटे पोते और नौकर चाकर का, किसी को अपने गरोह और दल का, उन सब का एक मशविरा घर भी था जिसमें जमा हो कर वह इस्लाम के ख़िलाफ़ मश्विरे किया करते थे। उन में आं हज़रत का सगा चचा अबू लहब, और रिश्ता का चचा अबू जहल आप की दुश्मनी में सब से आगे थे। आप लोगों को इस्लाम की तरफ़ बुलाते तो अबू लहब आप पर धूल फेंकता, आप को पत्थर से मारता, और आप को झुठलाता, । अबू जहल आं हज़रत को नमाज़ पढ़ते देखता तो आप की हंसी उड़ाता, धमकाता और तक्लीफ़ें देता।

इन्हीं बातों की तरफ़ इशारा करके आगे की आयतों में कहा गया है कि मक्का के सर्दारों का लोगों पर असर है, कितना अच्छा होता कि यह लोग ख़ुद भी नेकी के रास्ते पर चलते और दूसरों को भी उसी रास्ते पर चलाने की कोशिश करते लेकिन यह लोग अपनी बड़ाई के घमण्ड में अपने को तबाह कर रहे हैं।

आख़िर में आं हज़रत को हिदायत की गई है कि यह लोग आप पर जो भी ज़ुल्म करें आप बर्दाश्त करें लेकिन इन की बात कभी न मानें आप ख़ुदा ही के सामने झुकें और उसी की नज़्दीकी ढूंढें। आं हज़रत के लिये बड़ी कठिन आज़माइश थी पूरी क़ौम के मुक़ाबले में खड़ा रहना कोई मामूली बात न थी लेकिन आप ख़ुदा के सच्चे पैग़म्बर थे इस लिये आप मुद्दतों ज़ुल्मो सितम सहते रहे लेकिन ख़ुदा के रास्ते से बाल बराबर न हटे, आख़िर में ख़ुदा ने आप को कामयाब

किया। अबू जह्ल 'बद्र' की लड़ाई में बड़ ज़िल्लत के साथ एक मामूली मुसल्मान के हाथ से मारा गया और अबूलहब् घर ही पर कुत्ते की मौत मरा।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम्।

इक्र्ऽ बिस्मि रब्बिकल्लज़ी ख़लक़्(१) ख़लक़ल् इन्सान मिन् अ़लक़् (२) इक्र्ऽ व रब्बुकल् अक्रमुल् (३) लज़ी अ़ल्लम बिल्क़लमि, (४) अ़ल्लमल् इन्सान मालम् यऽ्लम् (५) कल्ला इन्नल् इन्सान लयत् ग़ा (६) अँर्आहुस्तग़्ना, (७) इन्नइला रब्बिकर्रुज्आ़ (८) अरऐतल्लज़ी यन्हा (९) अ़ब्दन् इज़ा स़ल्ला। (१०) अरऐत इन कान अ़लल् हुदा (११) औ अमर बित्तक़्वा। (१२) अरऐत इन् कज़्ज़ब वत-वल्ला। (१३)

अलम् यऽ्लम् बिअन्नल्लाह यरा (१४) कल्ला लइल्लम् यन्तहि नस्फ़अ़म् बिन्नासियति, (१५) नासि-यतिन् काज़िबतिन् ख़ातिअह, (१६) फ़ल् यद्उ नादियहू, (१७) सनद् उज़्ज़बानियत (१८) कल्ला, लातुतिऽ्हु वस्जुद् वक़् तरिब् ❀ (१९)

❀इस आयत को पढ़कर सज्दा करना चाहिये।

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम वाला है।

(ऐ पैग़म्बर!) अपने पर्वरदिगार का नाम लेकर पढ़ो जिसने (सारे जहान को) पैदा किया है (१) जिसने आदमी को ख़ून की फुटकी से पैदा किया है (२) पढ़ो और (जान लो कि) तुम्हारा पर्वरदिगार बड़ा ही करीम है (३) जिसने क़लम के ज़रीआ (लिखना पढ़ना) सिखाया (४) इंसान को वह सब कुछ सिखा दिया जो वह नहीं जानता था (५) हां हां बेशक इंसान (इन्सानियत की) हद से निकल जाता है (६) जब वह अपने को बे पर्वा और ग़नी पाता है (७) हालांकि (बिल् आख़िर) तुम्हारे पर्वरदिगार ही की तरफ़ (उसे) लौटना है (८) क्या तुमने उस शख़्स को देखा जो रोकता है (९) (हमारे) एक बन्दे को जब वह नमाज़ पढ़ने लगता है (१०) भला तुमने ग़ौर किया कि अगर वह (ख़ुद दीन की) सीधी राह पर होता (११) और (दूसरों को भी अल्लाह से) डरने का हुक्म देता (तो उसके लिए क्या ही अच्छा था) (१२) भला देखो तो कि अगर उसने (हक़ को) झुटला दिया और उससे मुँह मोड़ लिया (तो अपना कितना नुक़सान किया) (१३) क्या वह नहीं जानता कि अल्लाह (उस के कर्तूतों को) देख रहा है (१४) हां हां अगर वह बाज़ न आया तो हम ज़रूर उसकी पेशानी के बाल पकड़ कर घसीटेंगे (१५) झूठी और ख़ताकार पेशानी (के बाल) (१६) तो उसे चाहिये कि वह अपने मुसाहिबों को बुला ले (१७) हम भी (अपने दोज़ख़ के) प्यादों को बुलाते हैं (१८) नहीं नहीं (ऐ पैग़म्बर!) तुम उस शख़्स की बात (हर्गिज़) न मानना, नमाज़ पढ़ते रहो और ख़ुदा की नज़्दीकी चाहते रहो (१९)

२०—सूरः क़द्र

(मक्का में उतरी और इसमें ५ आयतें हैं)

ज़रूरी तश्रीह

क़ुर्आन शरीफ़ में एक जगह बताया गया है कि क़ुर्आन रोज़ा के महीने में उतरा है इस सूरह में है, कि क़ुर्आन क़द्र यानी फ़ैसले की रात में उतारा गया, दोनों बातों के मिलाने से साफ़ मालूम होता है कि रोज़े के महीने की एक ख़ास रात में क़ुर्आन उतरना शुरू हुआ, इस एक रात को हज़ार महीनों से अच्छा कहा गया है।

क़ुर्आन शरीफ़ के उतरने से पहले सारी दुन्या में कुफ़्र और शिर्क का दौर दौरा था, हर तरफ़ बेदीनी और गुमराही फैली हुई थी, रूम और ईरान के बादशाह और राजा महाराजा ख़ुदा और ख़ुदा के नाएब बनकर इन्सानों से अपनी पूजा बन्दगी करा रहे थे, अमीर ग़रीब और ऊंच नीच का फ़र्क़, पूरब पच्छिम और आस्मान ज़मीन के फ़र्क़ से भी बढ़ा हुआ था, हिन्दुस्तान में जानवरों तक की पूजा होती थी, वह पाक थे इन्सान अछूत था।

क़ुर्आन मज़हबी, समाजी और सियासी इंक़िलाब का पैग़ाम था, उसका मक़सद था इन्सानी दुखों को दूर करना, इन्सान को इन्सान की ग़ुलामी और बन्दगी से आज़ादी दिलाना, और ऊंच नीच, छूत छात को मिटाकर इन्सानों में भाईचारा और मुसावात (समता) क़ाइम करना। जिस रात में ऐसी आलीशान (महान) किताब उतरी, जिसने क़ौमों और मुल्कों की क़िस्मत और इन्सानियत की तारीख़ बदल दी, ज़मीन को उठाकर आस्मान पर पहुंचा दिया, उस रात के एक हज़ार महीने से बढ़कर होने में किसको शुब्हा हो सकता है ? हदीसों में इस रात की जो फ़ज़ीलत (महिमा) बयान हुई है वह इसके एलावा है।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम् ।

इन्नार अन्ज़ल्नाहु फ़ी लैलतिल् क़द्र, (१) वमार अद्राक मा लैलतुल् क़द्र (२) लैलतुल् क़द्रि खै.रुम्मिन् अल्फ़ि शह्र । (३) तनज़्ज़लुल् मलाइकतु वरूहु फ़ीहा बिइज़्नि रब्बिहिम् मिन् कुल्लि अम्रिन् सलाम् । (४) हिय ह़त्ता मतलइल् फ़ज्र । (५)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम वाला है ।

बेशक हमने इस कु.र्आन को क़द्र की रात में उतारा है (१) और (ऐ पैग़म्बर !) तुमको क्या मालूम कि क़द्र की रात क्या है ? (२) क़द्र की रात हज़ार महीनों से बेहतर है (३) इस रात में फ़रिश्ते और रूह़ (यानी जिबरील) अपने पर्वरदिगार के हुक्म से तमाम कामों के (इंतिज़ाम) के लिये उतरते हैं (४) (यह रात पूरी की पूरी) सलामती है, यह सुब्ह निकलने तक (इसी ख़ैर व बर्कत के साथ) रहती है (५)

—०❀०—

२२—सूरः बय्यिनः

(मक्के में उतरी और इसमें २० आयतें हैं)

ज़रूरी तश्रीह

क़ुर्आन शरीफ़ में "अहले किताब" या किताब वाले यहूदियों और ईसाइयों को कहा गया है, इसलिये कि यहूदियों को .ख़ुदा की किताब तौरात दी गई थी, और ईसाइयों को इन्जील । "मुश्रिक"

मक्का और अरब के उन लोगों को कहा गया है जो हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के बेटे हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) की नस्ल से थे, लेकिन वह हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल (अलैहिमस्स-लाम) के सच्चे दीन यानी एक ख़ुदा की इबादत को छोड़ कर ख़ियाली और अपने हाथ से बनाये हुए अनगिन्त देवी देवताओं को पूजने लगे थे, यानी पूजा और बन्दगी में ख़ुदा के साथ दूसरों को भी शरीक ठहरा लिया था।

"काफ़िर" उन लोगों को कहा गया है जो हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को ख़ुदा का पैग़म्बर और क़ुर्आन शरीफ़ को ख़ुदा की किताब मानने से इन्कार कर रहे थे, वह किताब वालों में से भी थे और मुश्रिकों में से भी, इसी तरह वह लोग भी मुश्रिक और काफ़िर कहे जा सकते हैं जो इबादत और बन्दगी में दूसरों को ख़ुदा का शरीक ठहरायें और हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और क़ुर्आन को न मानें।

मक्का और अरब के मुश्रिकों के पास तो ख़ुदा की कोई किताब थी ही नहीं, वह अपने ख़ियाली और रिवाजी मज़्हब पर चल रहे थे और उस पर बड़ी सख़्ती से क़ायम थे, लेकिन यहूदियों और ईसाइयों के पास भी उन का सच्चा दीन बाक़ी न था, वह बहुत से फ़िर्क़ों (सम्प्रदायों) में बँट गये थे, और सब ने अपनी अपनी ग़रज़ और पसंद के मुताबिक़ अपने मज़हब में मन गढ़त बातें शामिल कर ली थीं, इसी के साथ वह आपस में लड़ते झगड़ते और एक दूसरे को झुटलाते रहते थे।

यह यहूदी ईसाई और मुश्रिक अपने बिगड़े हुए और ग़लत मज़हब पर इस तरह जमे हुए थे कि जब तक ख़ुदा का कोई पैग़म्बर न आए और ख़ुदा की तरफ़ से उसके पास कोई किताब न भेजी जाये उनमें से कोई अपने मज़हब से हटने वाला न था, और यहूदियों और

ईसाइयों का तो यह अक़ीदा भी था कि ख़ुदा का एक पैग़म्बर आयेगा, और वही मज़हबी इख़्तेलाफ़ों (विभेदों) को मिटाएगा। इसी अक़ीदे के मुताबिक़ वह ख़ुदा की तरफ़ से एक रसूल के आने का इन्तेज़ार भी कर रहे थे। लेकिन जब हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को ख़ुदा ने अपना पैग़म्बर बनाया और उनके पास अपनी किताब भेजी तो उन लोगों ने सिर्फ़ इसी वजह से आँ हज़रत पर ईमान लाने और क़ुर्आन के मानने से इन्कार कर दिया, कि आप उनकी क़ोम से न थे क़ुरैश में पैदा हुए थे हालांकि क़ुर्आन भी उसी दीन की तालीम देता था जिस की तालीम हज़रत इब्राहीम, हज़रत मूसा, और हज़रत ईसा (अलैहिमुस्सलाम) ने दी थी, इस तालीम का ख़ुलासा यह था कि दिल की पूरी सच्चाई के साथ सिर्फ़ एक ख़ुदा की इबादत और हुक्म बर्दारी बजा लाओ, नमाज़ क़ायम करो, जो ख़ुदा के मानने का सबूत है, और ज़कात दो जो ग़रीबों की मदद के लिये ज़रूरी है। यहूदी और ईसाई ख़ूब जानते थे कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ख़ुदा के सच्चे रसूल हैं लेकिन महज़ ज़िद और नफ़सानियत की वजह से वह आप पर ईमान नहीं लाए। कितने बुरे थे वह लोग जिन्हों ने ऐसी पाक साफ़ तालीम के मानने से इन्कार कर दिया, और कितने भले थे वह लोग जो इस तालीम को मान कर ख़ुदा के प्यारे हो गये, और ख़ुदा उनका प्यारा हो गया।

बिस्मिल्ला हिर्रह्मा निर्रहीम्

लम् यकुनिल्लज़ीन कफ़रू मिन् अह्लिल् किताबि वल् मुश्रिकीन मुन्फ़क्कीन ह्त्ता तातियहुमुल् बय्यिनतु (१) रसूलुम्मिनल्लाहि यत्लू सुहुफ़म्मुतह्हरतन् (२) फ़ीहा कुतुबुन् क़य्यिमः (३) वमा

तफ़र्रक़ल्लज़ीन ऊतुल् किताब इल्ला मिम्बऽ़दि मा जा३अत् हुमुल् बय्यिनः (४) व मा२ उमिरू२ इल्ला लियऽ़बुदुल्लाह मुख़्लिसीन लहुद्दीन, हुनफ़ा३अ व युक़ीमुस्सलात व युतुज़्ज़कात व ज़ालिक दीनुल् क़य्यिमः (५) इन्नल्लज़ीन कफ़़रू मिन् अह्लिल् किताबि वल् मुश्रिकीन फ़ी नारि जहन्नम ख़ालिदीन फ़ीहा, उला३इक हुम् शर्रुल् बरीयः (६) इन्नल्लज़ीन आमनू व अमिलुस्सालिहाति उला३इक हुम् ख़ैरुल् बरीयः (७) जज़ा३उहुम् इन्द रब्बिहिम् जन्नातु अ़द्निन् तज्री मिन् तह्तिहल् अन्हारु ख़ालिदीन फ़ीहा२ अबदा, रदि़यल्लाहु अ़न्हुम् व रद़ू अ़न्ह, ज़ालिक लिमन् ख़शिय रब्बः (८)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत ही रहम वाला है।

किताब वालों (यानी यहूदियों, ईसाइयों) और मुश्रिकों (मक्का के बुत परस्तों) में से जिन लोगों ने कुफ़्र का रास्ता इख़्तेयार कर रक्खा था वह (कुफ़्र से) बाज़ आने वाले न थे जब तक उनके पास खुली हुई दलील न आ जाती [१] (यानी) अल्लाह की तरफ़ से एक रसूल जो उन्हें पाक वरक़ पढ़ पढ़कर सुनाता [२] जिनमें पक्की बातें लिखी हुई हों [३] और जिन लोगों को किताब दी गई थी (यानी यहूदी और ईसाई) उन्होंने तो इसके बाद ही आपस में फूट डाली जब कि उनके पास खुली हुई दलील पहुँच चुकी थी [४] हालांकि उनको

सिर्फ़ यही हुक्म दिया गया था कि वह दीन को अल्लाह के लिए ख़ालिस करके हर तरफ़ से मुँह मोड़कर उसी की बन्दगी करें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें और यही सीधा दीन है [५] बेशक किताब वालों और मुश्रिकों में से जिन लोगों ने कुफ़् किया वह दोज़ख़ की आग में पड़ेंगे वह हमेशा इसी में रहेंगे, वही लोग तमाम मख़्लूक से बुरे हैं [६] बेशक जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये वही लोग तमाम मख़लूक़ से अच्छे हैं [७] उनका अच्छा बदला उनके पर्वरदिगार के पास सदा बाक़ी रहने वाली जन्नतें हैं जिनके नीचे से नहरें बहती हैं वह लोग सदा उसी में रहेंगे अल्लाह उनसे राज़ी है वह अल्लाह से राज़ी हैं, यह (इन्आम) उसके लिए है जो अपने पर्वरदिगार से डरता है [८]



२२—सूरः ज़िल्ज़ाल

(मक्के में उतरी और इसमें १५ आयतें हैं)

ज़रूरी तशरीह

बाज़ लोग कहते हैं कि जन्नत और दोज़ख़ दुन्या ही में हैं, यानी जो जैसा करता है उसका फल उसे दुन्या ही में मिल जाता है, लेकिन यह बात सहीह नहीं है। यह दुन्या हिसाब और बदले की नहीं इम्तेहान और आज़माइश की जगह है, यहां अगर एक शख़्स को दौलत और ख़ुशहाली मिलती है तो इस का यह मतलब नहीं है कि वह उसके नेक कामों का इन्आम ही है, न वह इस बात का सबूत है कि वह शख़्स जो कुछ करता है वह नेकी का काम है, और ख़ुदा उससे ख़ुश है, क्योंकि एक बुरे आदमी के पास भी यह सब चीज़ें देखी जाती हैं। माल दौलत औलाद, नौकर चाकर, रियासत हुकूमत, और ज़िन्दगी के दूसरे

सामान आदमी को इस लिये दिये जाते हैं कि उनके ज़रीआ़ उसकी आज़माइश की जाये और देखा जाये कि उसको ज़िन्दगी का जो सामान और उसे काम में लाने का जो इख़्तियार दिया गया है वह उसको कहां तक ठीक तौर पर इस्तेमाल करता है। इसी तरह इन्सान को जिन तक्लीफ़ों और मुसीबतों का सामना होता है उनका भी यह मत्लब नहीं होता कि वह उसके बुरे कामों की सज़ा ही हैं, क्योंकि एक अच्छा आदमी भी तक्लीफ़ और मुसीबत में देखा जाता है, यह मुसीबतें कभी तो उस फ़ितरी (प्राकृतिक) क़ानून के मातहत पहुंचती हैं जो दुन्या में काम कर रहा है, और कभी इम्तेहान और आज़माइश के तौर पर मुसीबतें डाली जाती हैं ताकि यह देखा जाये कि यह शख़्स सच्चाई के रास्ते पर क़ायम रहता है या मुसीबतों से घबरा कर उससे हट जाता है, ग़रज़ यहां लोगों की अच्छी और बुरी हालतों को देख कर यह नतीजा निकालना सहीह नहीं कि हर शख़्स अपने अच्छे या बुरे अमल का फल पा रहा है। अगर कभी ऐसा देखने में आ जाता है कि एक शख़्स ने कोई अच्छा काम किया और उसको उसका अच्छा फल मिल गया या किसी ने कोई बुराई की और उसको उसकी सज़ा मिल गई तो यह बात आ़म नहीं है, न सबके साथ ऐसा होता है न सब को पूरा पूरा बदला मिलता है, इसके लिये ख़ुदा ने आख़िरत का दिन मुक़र्रर किया है जिस दिन इन्सान अपने ज़र्रा ज़र्रा भर अच्छे या बुरे काम और उनके पूरे पूरे नतीजे को देख लेगा।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम्।

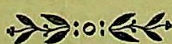
इज़ा ज़ुल्ज़िलतिल् अर्दु ज़िल्ज़ालहा (१) व अख़्रजतिल् अर्दु अस्क़ालहा (२) वक़ालल् इन्सानु मालहा (३) यौमइज़िन् तुहद्दिसु अख़्बारहा (४) बि अन्न रब्बक औह़ालहा (५) यौमइज़ीं यस्‌दु-

ह्न्नासु अश्तातल् लियुरौ अऽ.मालहुम् (६) फ़मंय्यऽ.-मल् मिस्क़ाल ज़र्रतिन् ख़ैरँय्यरः (७) व मंय्यऽ.मल् मिस्क़ाल ज़र्रतिन् शर्रँय्यरः (८)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेह्रबान बहुत रहम वाला है।

जब ज़मीन अपने भौंचाल से कँप कँपा दी जायेगी [१] और जब ज़मीन अपने (अन्दर के) बोझ बाहर निकाल फेंकेगी [२] और आदमी कहने लगेगा (आज) इस ज़मीन को क्या हो गया है ? [३] उस दिन वह अपनी सब ख़बरें बयान कर देगी (कि उसके ऊपर बसने वालों ने क्या क्या अऽ.माल किये) [४] क्योंकि तेरे पर्वरदिगार ने उसको यही हुक्म भेजा होगा [५] उस दिन लोग अलग अलग गरोह होकर निकल पड़ेंगे, ताकि उन्हें उनके अऽ.माल दिखा दिये जायें [६] तो जिस शख़्स ने ज़र्रा भर भी भलाई की होगी वह उसे देख लेगा [७] और जिस शख़्स ने ज़र्रा भर भी बुराई की होगी वह भी उसे देख लेगा [८]



२३—सूरः आदियात

(मक्के में उतरी और इसमें ११ आयतें हैं)

ज़रूरी तश्रीह

इन्सान पर ख़ुदा ने कैसे कैसे एहसान किये, उसको सारी चीज़ों से ज़्यादा ख़ूब सूरत बनाया, सब से ज़्यादा समझ बूझ दी, सब से ज़्यादा ज़िन्दगी का सामान दिया, सूरज चांद और सितारों तक को उसके

काम पर लगा दिया, लेकिन इन्सान कितना नाशुक्रा और ग़द्दार है, इस का सबूत घोड़े की ज़िन्दगी से मिलता है।

इस सूरह के शुरू में इन्सान की नाशुक्री और ग़द्दारी के सबूत के तौर पर घोड़ों की क़सम खाई गई है। घोड़े को ख़ुदा ने पैदा किया, वह उसी का पैदा किया हुआ चारा खाता है, इन्सान घोड़े को सिर्फ़ खिला पिला देता है, घोड़ा इस थोड़े से एहसान का बदला इस तरह चुकाता है कि इन्सान को अपनी पीठ पर सवार करके इस तेज़ी से दौड़ता है कि हांपने लगता है, पथरीली ज़मीन पर इस तरह टाप मारता हुआ चलता है कि चिंगारियां [illegible] ती हैं, सुबह ही सुबह दुश्मन की फ़ौज पर धावा करता है और ग़ुबार उड़ाता हुआ उसके बीच में घुस जाता है, मौत से नहीं डरता।

यह तो है घोड़े की वफ़ादारी का हाल, इसके मुक़ाबिल में इन्सान की नाशुक्री और बेवफ़ाई का हाल यह है कि वह माल की मुहब्बत में पड़ कर ख़ुदा को भूल जाता है और उसके हुक्म की सिरे से कोई पर्वा नहीं करता।

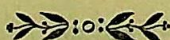
बिस्मिल्लाहिर्रह्.मानिर्रहीम्

वल् आदियाति ज़ब्ह़न्, (१) फ़ल्मूरियाति क़द्-ह़न् (२) फ़ल्मुग़ीराति सुब्ह़न् (३) फ़असर्न बिही नक़-अन् (४) फ़वसत्न बिही जम्अन्, (५) इन्नल् इन्सान लिरब्बिही लकनूद (६) व इन्नहू अ़ला ज़ालिक लश-हीद् (७) व इन्नहू लिहुब्बिल् ख़ैरि लशदीद् (८) अफ़ला यऽलमु इज़ा बुऽसिर माफ़िल् क़ुबूरि (९) व हुस्सिल मा फ़िस्सुदूरि, (१०) इन्न रब्बहुम् बिहिम् यौ-मइज़िल्लख़बीर् (११)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम वाला है।

क़सम है हांपते हुए दौड़ने वाले (घोड़ों) की (१) फिर (पत्थरों पर) टाप मारकर चिंगारियां निकालने वालों की (२) फिर सुब्ह के वक्त (दुश्मनों पर) छापा मारने वालों की (३) फिर उस वक्त (भी अपनी दौड़ से) गर्द उड़ाने वालों की (४) फिर उस वक्त (दुश्मनों की) फ़ौज के बीच घुस पड़ने वालों की (५) कि बेशक इन्सान अपने पर्वरदिगार का बड़ा ही नाशुक्रा है (६) और वह इस बात पर ख़ुद ही गवाह है (७) और बेशक वह माल की मुहब्बत में बड़ा ही कट्टर है (८) तो क्या वह (उस वक्त को) नहीं जानता जब वह सब (लोग) उठा दिये जायेंगे जो क़ब्रों में हैं (९) और (लोगों के) दिलों में जो कुछ (बातें छिपी) होंगी ज़ाहिर कर दी जायेंगी (१०) बेशक उनका पर्वरदिगार उस दिन उनके हाल से पूरी तरह ख़बरदार होगा (११)



२४—सूरः क़ारिअः

(मक्का में उतरी और इसमें ११ आयतें है)

ज़रूरी तशरीह

क़ियामत का नक़शा खींच कर बताया गया है कि ख़ुदा के सामने तोल में जिसकी नेकियों का पल्ला भारी हुआ उसके लिये आराम ही आराम है और जिसकी नेकियों का पल्ला हलका हो गया, वह जहन्नम के गड्ढे में जा गिरा, उसके दुखों का ठिकाना नहीं। इस लिये इन्सान को चाहिये कि हमेशा नेकी की कोशिश में लगा रहे।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ।

अल् क़ारिअ़तु (१) मल् क़ारिअ़: (२) व मा२अ-द्राक मल् क़ारिअ़: (३) यौम यकूनुन्नासु कल् फ़राशिल् मब्सूसि (४) व तकूनुल् जिबालु कल् इह्निल्मनूफ़ूश् (५) फ़अम्मा मन् सक़ुलत् मवाज़ीनुहू (६) फ़हुव फ़ी ईशतिर्राज़ियः (७) व अम्मा मन् ख़फ़्फ़त् मवाज़ीनुहू (८) फ़उम्मुहू हावियः (९) व मा२ अद्राक माहियः (१०) नारुन् हामियः (११)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम वाला है।

वह (हर चीज़ को) खड़खड़ा डालने वाली (१) वह खड़-खड़ा डालने वाली क्या है ? (२) और तुमको क्या मालूम कि वह खड़खड़ा डालने वाली क्या है ? (३) (वह क़ियामत है) जिस दिन सारे इन्सान बिखरे हुए पतंगों जैसे हो जायेंगे (४) और पहाड़ धुनी हुई रंगीन ऊन की तरह हो जायेंगे (५) सो (उस दिन) जिस (के नेक अमल) का पल्ला भारी ठहरेगा (६) वह मन माने ऐश में होगा (७) और जिस (के अमल) का पल्ला हल्का हो जायेगा (८) तो उसका ठिकाना हावियः होगा (९) और तुमको क्या मालूम कि वह हावियः क्या चीज़ है (१०) वह एक दहकती हुई आग है ? (११)



२५—सूरः तकासुर

(मक्का में उतरी और इसमें ८ आयतें हैं)

ज़रूरी तश्रीह—

क़ुर्आन माल और औलाद को बुरा नहीं ठहराता लेकिन उसके नज़्दीक यह सहीह नहीं है कि आदमी माल और औलाद की ज़ियादती ही को अपनी ज़िन्दगी का मक़्सद बना ले और उसकी फ़िक्र में ऐसा डूब जाए कि उसको न हक़ का ख़्याल रहे न नाहक़ का, और न इस का कि उसकी आख़िरत बन रही है या बर्बाद हो रही है। क़ुर्आन इन्सान को इस हालत से ख़बर दार करते हुए कहता है—तुम मौत को भूल कर माल और औलाद के बढ़ाने में इस तरह लगे रहते हो जैसे तुम्हें कभी मरना ही नहीं है, यहां तक कि क़ब्र के किनारे पहुंच जाते हो, अब तुम को पता चलता है कि तुम्हें क्या करना चाहिये था और तुम क्या करते रहे, फिर आख़िरत में जब तुम दोज़ख़ को अपनी आंखों से देख लोगे तो तुम्हें मालूम होगा कि जिस दोज़ख़ को तुम ढकोसला समझते थे वह तो सच मुच सामने भड़क रही है। उस दिन तुम से पूछा जाएगा कि ख़ुदा ने तुम को जो नेमतें दी थीं बताओ तुमने उनका क्या हक़ अदा किया ? उनको काम में लाने में तुमने ख़ुदा की मर्ज़ी को कहां तक पूरा किया ?

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम्।

अल्हाकुमुत्तकासुरु (१) .हत्ता ज़ुर्तुमुल् मक़ाबिर् (२) कल्ला सौफ़ तऽ.लमून (३) सुम्म कल्ला सौफ़ तऽ.लमून् (४) कल्ला लौ तऽ.लमून .इल्मल् यक़ीन् (५) लतर वुन्नल् जहीम (६) सुम्म लतरवुन्नहा .ऐनल्

यक़ीन (७) सुम्म लतुस्अलुन्न यौमइज़िन् अ़नि-न्नई़म् (८)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रह्म वाला है।

(लोगो ! माल और औलाद की) बहुतात की चाह तुमको ग़फ़लत में डाले रखती है (१) यहाँ तक कि (एक दिन) तुम क़ब्रों में जा पहुँचते हो (२) (तुम्हारा यह तरीक़ा) हर्गिज़ (दुरुस्त) नहीं, तुम बहुत जल्द (क़ब्र में पहुंचते ही) जान लोगे (३) फिर (समझ लो कि तुम्हारा यह तरीक़ा) हर्गिज़ (दुरुस्त) नहीं, तुम जल्द ही जान लोगे (४) हां, हां, अगर तुम इस बात को यक़ीन का जानना जान लेते (तो कभी ऐसा न करते) (५) तुम ज़रूर दोज़ख़ को देख लोगे (६) फिर (हम कहते हैं) कि तुम उसे ज़रूर देख लोगे, यक़ीन की आंखों से (७) फिर उस रोज़ तुमसे (दुन्या की) नेमतों के बारे में ज़रूर पूछ होगी (८)

—०❀०—

२६—सूरः अ़स्र

(मक्का में उतरी और इसमें ३ आयतें हैं)

ज़रूरी तश्रीह

यह सूरः देखने में जितनी छोटी है हिदायत और तालीम में उतनी ही बड़ी है। हज़रत इमाम शाफ़िई फ़र्माते हैं कि अगर क़ुर्आन में कुछ न होता यही एक सूरः होती तो इन्सान की हिदायत के लिये काफ़ी थी।

इन्सान की निजात और फ़लाह् (कल्याण और मुक्ति) के लिये

चार बातें ज़रूरी ठहराई गई हैं।

१—ख़ुदा और रसूल पर ईमान

२—वह अच्छे काम करना जिनका ख़ुदा और रसूल ने हुक्म दिया है। और जिनकी अच्छाई से किसी को इन्कार नहीं।

३—अपनी ही नेक अमली, सच्चाई, और इस्लाह को काफ़ी न समझना बल्कि पूरे समाज को सच्चाई और नेकी की तालीम और हिदायत करते रहना,

४—नेकी और सच्चाई फैलाने में जिन मुसीबतों का सामना हो उसे बर्दाश्त कर के उस काम को जारी रखना और दूसरों को भी इस की हिदायत करते रहना।

यह कभी न बदलने वाले सच्चे और पक्के उसूल हैं। दुन्या में बेशुमार क़ौमें हो चुकी हैं जो अपने अपने वक़्त पर बनी और बिगड़ीं, ज़माना गवाह है कि सारी क़ौमों के बनाव और बिगाड़ की जड़ में एक ही सच्चाई काम करती रही, किसी क़ौम का जब तक ख़ुदा पर ईमान रहा, वह नेकी और सच्चाई की ज़िन्दगी गुज़ारती रही और दुसरों को भी इसकी हिदायत करती रही, वह सच्ची इन्सानियत अम्न, और सलामती का नमूना रही,। और जब वह भलाई के रास्ते से हट कर बुराई के रास्ते पर पड़ गई तो धीरे धारे तबाही के गड्हे में जा गिरी। आज दुन्या की तमाम बड़ी बड़ी क़ौमों का क्या हाल है? उनका ख़ुदा पर ईमान नहीं रहा तो उनकी ऊपरी बातें तो बड़ी पाक और पवित्र होती हैं लेकिन काम देखिये तो बिल्कुल शैतानों की तरह-दिन रात दूसरी क़ौमों को ग़ुलाम बनाने और उनको लूटने के मन्सूबे बनाती रहती हैं। इस का नतीजा यह है कि इन्सानियत मिट चुकी है और दुन्या तबाही के गड्हे के किनारे खड़ी है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम्।

वल् अस्रि (१) इन्नल् इन्सान लफ़ी ख़ुस्रिन्

(२) इल्लल्लज़ीन आमनू व अमिलुस्सालिहाति वतवासौ बिल्हक़्क़ि वतवासौ बिस्सब्र (३)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम वाला है।

क़सम है ज़माना की (१) कि बेशक आदमी घाटे में है (२) मगर वह लोग (घाटे में नहीं) जो ईमान लाये और अच्छे काम किये और एक दूसरे को हक़ की ताकीद करते रहे और एक दूसरे को सब्र की ताकीद करते रहे (३)



२७—सूरः हुमज़ः

(मक्के में उतरी और इसमें ९ आयतें हैं)

ज़रूरी तशरीह

क़ुर्आन अख़्लाक़ (नैतिकता) का सब से बड़ा मुअल्लिम और मुस्लेह (शिक्षक और सुधारक) है। जितनी चीज़ें इंसानी अख़्लाक़ को बर्बाद करने वाली हैं उन पर क़ुर्आन बराबर नज़र रखता है और पहलू बदल बदल कर बार बार उन पर चोट लगाता रहता है। इन्सानी फ़ित्रत की यह बड़ी कम्ज़ोरी है कि वह माल की हद से ज़्यादा मुहब्बत करता है और उसे सीने से लगाये रहना चाहता है। क़ुर्आन कहता है कि माल का सब से बड़ा मक़्सद यह है कि उससे अपनी भी जायज़ ज़रूरतें पूरी की जायें और ग़रीबों और नेक कामों की भी मदद की जाये, लेकिन जिन लोगों के दिल में ख़ुदा का डर और आख़िरत का खटका नहीं होता वह ग़रीबों का हक़ मार कर और बेईमानी से दौलत कमा कर मालदार बन जाते हैं और समझते यह हैं कि उन से बढ़ कर

कोई शरीफ़ और इज़्ज़त दार इन्सान नहीं। वह इस धोके में पड़ जाते हैं कि उनको कभी मरना नहीं है, वह इसी तरह ग़रीबों का ख़ून चूसते और हमेशा जीते रहेंगे।

ऐसे लोगों की नज़रों में ख़ुदा से डरने वाले और ईमान दार आदमियों की कोई क़द्र और इज़्ज़त नहीं होती, वहउन के मुंह पर उनकी ग़रीबी और बेइज़्ज़ती के ताने देते हैं क्यों कि उनको इसकी पर्वा नहीं होती कि उनका दिल दुखेगा और जब अपने जी हुज़ूरियों की मज्लिस जमा कर बैठते हैं तो पीठ पीछे भी नेकी की ज़िन्दगी गुज़ारने वाले ग़रीब लोगों को बुरा भला कहते हैं।

इस तरह के लोग इस्लाम के शुरू में मक्के में भी थे और हर ज़माने में हर जगह होते हैं। ऐसे दौलत मन्दों के दिल इन्सानी हमदर्दी और नेकी से बिल्कुल ख़ाली होते हैं, इस लिये उनको जो अज़ाब दिया जाएगा उसका सीधा हमला ख़ास तौर पर उनके दिल ही पर होगा। दुन्या में यह ग़रीबों का दिल जलाते रहते हैं आख़िरत का अज़ाब इन का दिल जलाएगा।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम्।

वैलुल्लि कुल्लि हुमज़तिल्लुमज़ति (१) निलल्ज़ी जमअ़ मालौं व अ़द्दहू (२) यह़सबु अन्न मालहू अख़्लदः (३) कल्ला ल युम्बज़न्न फ़िल् हुतमति (४) वमा २ अद्राक मल् हुतमः (५) नारुल्लाहिल् मूक़दतुल् (६) लती तत्तलिउ अ़लल् अफ़्इदः (७) इन्नहा अ़लैहिम् मुऽसदतुन् (८) फ़ी अ़मदिम् मुमद्दः (९)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम वाला है।

ख़राबी है हर उस शख़्स के लिये जो मुंह पर ताना देता और पीठ पीछे ऐब निकालता है (१) जिसने माल इकट्ठा किया और उसे गिन गिन कर रक्खा (२) वह समझता है कि उसका माल उसे (दुन्या में) हमेशा ज़िन्दा रक्खेगा (३) हर्गिज़ नहीं, वह शख़्स ज़रूर रौंद डालने वाली (आग) में फेंक दिया जायेगा (४) और तुमको क्या मालूम कि वह रौंद डालने वाली (आग) क्या है ? (५) वह अल्लाह की जलाई हुई आग है (६) जो (बदन से लगते ही) दिलों तक चढ़ जाती है (७) और वह आग उन पर (इस तरह) बन्द कर दी जाएगी (८) कि वह उस के लम्बे लम्बे खम्बों में घिरे हुए होंगे (९)



२८—सूरः फ़ील

(मक्का में उतरी और इसमें ५ आयतें हैं)

ज़रूरी तश्रीह

मक्का की जिस कौम से हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) थे उसका नाम क़ुरैश था। यही क़ौम काबा शरीफ़ की मुतवल्ली (प्रबंधक) थी। इस लिये सारे अरब में इज़्ज़त और एहतेराम की नज़र से देखी जाती थी ख़ुदा ने इस सूरह में एक वाक़ेआ की तरफ़ इशारा कर के क़ुरैश को अपने एक ख़ास एहसान की तरफ़ ध्यान दिलाया है।

वाक़ेआ यह है कि हबशा के बादशाह की तरफ़ से यमन में जो अरब का हिस्सा है अब्रहा अश्रम गवर्नर था। वह धीरे २ यमन का ख़ुद मुख़्तार हाकिम बन गया, इस तरह उसको असर और इख़्तियार

(प्रभावऔरसत्ता) कीचाटपड़ गई, उसने चाहा किअपनेपायएतख्त (राजधानी) "सुनआ" में एक खूब सूरत और शानदार गिर्जा बनवाए और ऐसी कोशिश करे कि अ़रब के लोग काबा की ज़ियारत के लिये मक्का जाने की जगह 'सुनआ' आया करें और काबा की जगह उसको ज़ियारत किया करें, ताकि अरब में मक्का और काबा को जो इज़्ज़त हासिल है वह सुनआ औरउसके गिर्जा को हासिलहो जाए। इसग़रज़ से अब्रहा ने सुनआ में क़लीस के नाम से एक गिर्जा बनवाया लेकिन काबा को ख़ुदा के एक बहुत बड़े पैग़म्बर हज़रत इब्राहीम ने बनाया था और मक्का को अपनी औलाद से बसाया था ख़ुदा ने ख़ुद काबा को सारी दुन्या के लिये मज़्हबी मर्कज़ (धार्मिक केन्द्र) बनाने का फ़ैसला कर दिया था, और मक्का में ख़ुदा के आख़िरी रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) पैदा होने वाले थे, इस लिये अब्रहा अपने इरादे में कैसे कामयाब हो सकता था ?

अब्रहा की तबाही की सूरत यह पैदा हुई कि मक्का का कोई रहने वाला सुनआ गया और उससे क़लीस को कुछ नुक़्सान पहुंच गया। अब्रहा को हीला मिल गया और उसने काबा को ढाने के लिये मक्का पर चढ़ाई कर दी। उसकी फ़ौज में बड़े बड़े तेरह हाथी थे जो उस ज़माने की लड़ाई के सामान में बहुत ख़ास चीज़ समझे जाते थे।

अभी अब्रहा की फ़ौज मक्का से कुछ दूर ही पर एक मैदान में थी कि छोटी २ चिड़यों के ग़ोल समुन्दर की तरफ़ से आए और अब्रहा की फ़ौजपरछा गए। हरचिड़याकी चोंच और उसके पंजों मेंछोटी२ कंकरियां थीं, इन चिड़यों ने अब्रहा की फ़ौज पर कंकरियों की गोलियां बरसानी शुरू कीं। इन कंकरियों में ऐसा असर था कि आदमी या जानवर जिस के बदन पर गिरतीं आर पार हो जातीं और घाव में एक ज़हर पैदा हो जाता। इस तरह अब्रहा की पूरी फ़ौज तबाह हो गई, जो सिपाही या

जानवर कंकरियों की चोट खा कर भागे वह भी मर गए।

यह वाक़ेआ ५७० ई० में हुवा; उसके ५० दिनों के बाद हज़रत रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पैदा हुए, हुज़ूर के वक़्त में ऐसे बहुत से लोग ज़िन्दा थे जिन्हों ने अपनी आँखों से यह वाक़िआ देखा था।

इस वाक़िआ को बयान करने के दो पहलू हो सकते हैं, एक पहलू तो यह कि इस वाक़िआ को याद दिला कर मक्का के लोगों को झिड़का गया है कि जिस ख़ुदा ने तुम पर यह एहसान किया कि तुम अब्रहा का मुक़ाबला न कर सकते थे उसने अपनी क़ुद्रत से उनको बर्बाद कर दिया, उसकी इबादत और बन्दगी छोड़ कर तुम अपने हाथ से गढ़े हुए देवी देवताओं को क्यों पूजते हो ? और ख़ुदा के पैग़म्बर और उनके साथी मुसलमानों को काबा में ख़ुदा की इबादत क्यों नहीं करने देते ? हालांकि वह इसी के लिये बनाया गया है।

और दूसरा पहलू इस वाक़िआ के बयान करने का यह है कि हज़रत मुहम्मद (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को तसल्ली दी गई है कि जिस तरह मक्का के लोग कमज़ोर और बेसरोसामान थे, ख़ुदा ने काबा की हिफ़ाजत की इसी तरह कमज़ोरी और बेसरोसामानी के बावजूद तुम्हारी भी हिफ़ाज़त करेगा।

मक्का में जब आं हज़रत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और मुसलमानों पर दुश्मनों की तरफ़ से बड़े बड़े ज़ुल्म हो रहे थे और देखने में हिफ़ाज़त और कामयाबी की कोई सूरत मौजूद न थी ख़ुदा की तरफ़ से उनको तसल्ली दी जाती थी और कामयाबी की उम्मीद दिलाई जाती थी। क़ुर्आन शरीफ़ में ऐसी बातें बहुत आई हैं जो मदीने पहुंचने पर सब पूरी हो गईं। ग़ौर करने वालों के लिये यह क़ुर्आन के ख़ुदाई किताब और इस्लाम के ख़ुदाई दीन होने का एक बहुत बड़ा सुबूत है।

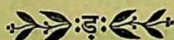
बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम् ।

अलम् तर कैफ़ फ़अ़ल रब्बुक बिअसहा़बिल् फ़ील् (१) अलम् यज्अ़ल् कैदहुम् फी तद्लीलिंव् (२) व अर्सल अ़लैहिम् .तैरन् अबाबील (३) तर्मीहिम् बिहि़जारतिम् मिन् सिज्जीलिन् (४) फ़जअ़लहुम् कअ़सफ़िम्माकूल् (५)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम वाला है।

(ऐ पैग़म्बर !) क्या तुमने नहीं देखा कि तुम्हारे पर्वरदिगार ने हाथी वालों के साथ (जो काबा को ढाने आये थे) कैसा सुलूक किया ! (१) क्या उसने उनके दांव को ग़लत नहीं कर दिया ? (२) और उन पर झुण्ड के झुण्ड परिन्द भेजे (३) जो उन पर कंकरीले पत्थर फेंकते थे (४) सो ख़ुदा ने उनको (जानवरों के) खाये हुवे भूसे की तरह कर डाला (५)।



२६—सूरः .कुरैश

(मक्का में उतरी और इस में ४ आयतें हैं)

ज़रूरी तशरीह

मक्का में ग़ल्ला और ज़रूरत की दूसरी चीज़ें पैदा नहीं होती थीं इसलिये क़ुरैश को बाहर जाना पड़ता था । यमन गर्म मुल्क था और शाम (सीरिया) ठण्डा, इसलिये क़ुरैश जाड़े में यमन जाते और गर्मियों में शाम का सफ़र करते, अपने मुल्क की पैदावार खजूर और चमड़ा

इन मुल्कों में ले जाते और अपनी ज़रूरत की चीज़ें वहां से ले आते ।

अरब में हमेशा चारों तरफ़ लूट मार होती रहती थी, जो लोग सफ़र करते लूट लिये जाते, डाकुवों के जत्थे बस्तियों को भी लूट लेते लेकिन क़ुरैश काबा के मुतवल्ली (प्रबन्धक) थे, इसलिये न कोई सफ़र में इनको नुक़सान पहुंचाता और न मक्के पर हमला करता ।

क़ुरैश ख़ुदा के इन एहसानों को भुला कर दूसरी दूसरी चीज़ों की इबादत और बन्दगी कर रहे थे, और ख़ुदा के रसूल को जो उनको ख़ुदा की इबादत और बन्दगी की हिदायत कर रहे थे सता रहे थे। ख़ुदा ने इस सूरः में क़ुरैश को याद दिलाया है कि तुम्हारे वतन में खाने को न था, ख़ुदा ने तुम्हारे दिलों में तिजारती सफ़र की रग़बत (इच्छा) पैदा कर दी, तुम्हारे सफ़र के रास्ते लूटमार के डर से भरे हुए थे, इस डर से ख़ुदा ने तुम्हें अम्न दे दिया। अब्रहा के हमले से तुम्हारे शहर को बचा लिया। यह सब कुछ इस काबे की बर्कत से हुआ तो तुम्हें चाहिये कि तुम झूटे ख़ुदाओं की पूजा बन्दगी छोड़कर इस घर के ख़ुदा की जो सारे जहान का पर्वरदिगार है इबादत और बन्दगी करो और उसके रसूल की दुश्मनी से बाज़ आ जाओ।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम्

लिईलाफ़ि क़ुरैशिन् (१) ईलाफ़िहिम् रिह्‌लतश्शिताइ वस्सैफ़् (२) फ़ल्‌यऽबुदू रब्ब हाज़ल्‌ बैतिल् (३) लज़ी अत्‌अमहुम् मिन् जूइ़ व्व आमन हुम् मिन् ख़ौफ़् (४)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम वाला है।

चूंकि (ख़ुदा ने) क़ुरैश को रग़बत दिलाई (१) (यानी)

उनको रग़बत दिलाई जाड़े और गर्मी के (तिजारती) सफ़र को (२) तो उन्हें चाहिये कि वह इस घर (काबा) के पर्वरदिगार ही की इबादत करें (३) जिसने उनको भूक में खाने को दिया और उन्हें खौफ़ से अम्न बख्शा (४)



३०—सूरः माऊन

(मक्का में उतरी और इसमें ७ आयतं हैं)

ज़रूरी तश्रीह

क़ियामत का अक़ीदा नेकी और भलाई का सर चश्मा (स्रोत) है। इसी लिये क़ुर्आन ने बार बार इस अक़ीदे पर ज़ोर दिया है। जो आदमी क़ियामत पर यक़ीन नहीं रखता वह बड़ा मत्लबी और दिल का सख़्त होता है। यतीमों से हम्दर्दी करने की जगह उसे धुत्कार देता है, मुहताजों को न ख़ुद खिलाता है न दूसरों को इसके लिये उभारता है, जैसे उसके दिल में इन्सानी हम्दर्दी के लिये कोई जगह ही नहीं, इसी तरह उन लोगों का हाल भी अफ़सोस के लाएक़ है जो आख़िरत पर सच्चा यक़ीन न रखने ही की वजह से नमाज़ की तरफ़ से बे पर्वाई करते हैं, वक़्त बे वक़्त उल्टी सीधी नमाज़ पढ़ लेते हैं, वह भी ख़ुदा के लिये नहीं दिखावे के लिये, इसी तरह उनका जो काम भी होता है दिखावे ही के लिये होता है।

उनकी तंग दिली और ख़ुद ग़र्ज़ी का हाल यह होता है कि पास पड़ोस के लोगों को ऐसी छोटी मोटी चीज़ें भी मंगनी नहीं देते जिन के लेने देने का आम रिवाज है, एक शख़्स अपने को मुसलमान कहता है और नमाज़ भी पढ़ता है लेकिन ख़ुदा के साथ इख़्लास और मख़्लूक़ से हम्दर्दी नहीं रखता तो वह इस्लाम के दावा में सच्चा नहीं, यह दिखावे की इबादत और मख़्लूक़ के साथ कंजूसी तो उन लोगों का तरीक़ा है जो इस्लाम और क़ियामत पर यक़ीन नहीं रखते।

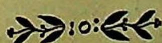
बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ।

अरऐतल्लज़ी युकज़्ज़िबु बिद्दीन् (१) फ़ज़ालिकल्लज़ी यदुऽ. उ.ल्यतीम (२) वला यहुद्दु अ.ला तुआमिल् मिस्कीन् (३) फ़वैलुल्लिल मुसल्लीनल् (४) लज़ीन हुम अ.न् सलातिहिम् साहूनल् (५) लज़ीन हुम युराउ.न (६) व यम्नउ.नल् माउ.न् (७)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम वाला है।

(ऐ पैग़म्बर !) क्या तुमने उस शख्स को देखा जो (क़ियामत की जज़ा व सज़ा को झुटलाता है (१ तो (देखो) यही वह शख्स है जो यतीम को धक्के देता है (२) और (आप तो आप दूसरों को भी) मुहताज के खाना खिलाने पर नहीं उभारता (३) सो, ख़राबी है उन नमाज़ियों की (४) जो अपनी नमाज़ों से ग़ाफ़िल हैं (५) और जो (अपनी नमाज़ों का) दिखावा करते हैं (६) और ज़रूरत की मामूली चीज़ें भी मांगे से नहीं देते (७)



३१—सूरः कौसर

(मक्के में उतरी और इसमें ३ आयतें हैं)

जरूरी तशरीह

इस सूरह का तअ़ल्लुक़ हज़रत पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से है। इसमें "कौसर" और "अब्तर" दो लफ़्ज़ ऐसे हैं जिन का मतलब

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम वाला है।

(ऐ पैग़म्बर !) बेशक हमने तुमको बे इन्तेहा ख़ैर व बर्कत अता की है (१) सो (इसके शुक्रिया में) अपने रब के लिये नमाज़ पढ़ो और क़ुर्बानी करो (२) बेशक जो तुम्हारा दुश्मन है वही बे नस्ल (यानी बे नामो निशान और हर भलाई से महरूम) है (३)



३२—सूरः काफ़िरून

(मक्का में उतरी और इसमें ६ आयतें हैं)

ज़रूरी तशरीह

मक्का में हज़रत रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को इस्लाम की तरफ़ बुलाते हुए दस बरस से ऊपर हो चुके थे, वहां के लोग मुसल्मानों को और .ख़ुद आँ हज़रत को हद से ज़्यादा सता रहे थे, बहुत से मुसल्मान मक्का छोड़कर हब्शा (अबीसीनिया) चले गए थे, जो मुसल्मान रह गए थे वह ज़ुल्म सहे बग़ैर आज़ादी से अपना मज़्हबी फ़र्ज़ अदा नहीं कर सकते थे। अब आँ हज़रत को .ख़ुदा का हुक्म होने ही वाला था कि आप मुसल्मानों को लेकर मक्के से मदीने चले जाएं, ऐसे नाज़ुक ज़माने में यह सूरः उतरी।

यह एक छोटी सी सूरः है और थोड़े से अल्फ़ाज़ हैं जो हेर फेर के साथ आए हैं लेकिन इस्लाम की यह सबसे बड़ी और सबसे सच्ची बात पूरी सफ़ाई के साथ दो टूक कह दी गई है कि हालात चाहे कैसे ही नाज़ुक और मुश्किल हों, इस्लाम किसी ऐसे मज़्हब के साथ एक क़दम भी नहीं चल सकता जिसमें ख़ुदा के सिवा किसी और की भी

पूजा बन्दगी होती हो, ऐसे मज़्हब से इस्लाम का रास्ता बिल्कुल अलग है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम् ।

क़ुल् या१ अय्युहल् काफ़िरून (१) ला१ अऽ्बुदु मा तऽ्बुदून (२) वला१ अन्तुम् आबिदून मा१ अऽ्बुद् (३) वला१ अना आबिदुम् मा अबत्तुम् (४) वला१ अन्तुम् आबिदून मा१ अऽ्बुद् (५) लकुम् दीनुकुम् वलिय दीन् (६)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेह्रबान बहुत रहम वाला है।

(ऐ पैग़म्बर !) कह दो कि ऐ कुफ्र करने वालो ! (१) मैं उनकी पूजा नहीं करता जिनकी तुम पूजा करते हो (२) और न तुम उसकी इबादत करने वाले हो जिसकी मैं इबादत करता हूँ (३) और न मैं उन चीज़ों को पूजूंगा जिनको तुम पूजते हो (४) और न तुम उसकी इबादत करोगे जिसकी मैं इबादत करता हूँ (५) तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन है और मेरे लिये मेरा दीन (दीन में हम तुम एक नहीं हो सकते) (६)



३३—सूरः नस्र

(मक्के में उतरी और इसमें ३ आयतें हैं)

जरूरी तशरीह

यह सूरह हज़रत पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बारे में है, यह आप की वफ़ात (स्वर्गवास) से कुछ महीने पहले उतरी।

इस छोटी सी सूरह से आं हज़रत की नुबूवत और पैग़म्बरी और इस्लाम की दावत व तब्लीग़ (निमंत्रण और प्रचार) की पूरी तारीख लिपटी हुई है।

सूरः अलक़ की तश्रीह में बताया जा चुका है कि जब ख़ुदा ने आं हज़रत को अपना रसूल बनाया और आपने इस्लाम की दावत व तब्लीग़ का काम शुरू किया तो आपकी क़ौम आप की दुश्मन हो गई। यह क़ौम काबा की मुतवल्ली (प्रबन्धक) और हज का इन्तेज़ाम करने वाली थी, इसलिये उसके साथ सारा मुल्क आपका दुश्मन हो गया गिने चुने आदमी आप पर ईमान लाए, जो बड़े दिल गुर्दे वाला होता वही इस्लाम क़बूल करता था, क्योंकि मुसल्मान होना सारी क़ौम के ज़ुल्मो सितम का निशाना बनना था ।

क़ाबा इसीलिये बनाया गया था कि उसमें एक ख़ुदा की इबादत की जाये, लेकिन उसमें तीन सौ साठ बुतों (मूर्तियों) की पूजा होती थी, और जो मुसल्मान उसमें एक ख़ुदा का नाम पुकारता या उसकी इबादत करता वह इतना पीटा जाता कि उसकी जान पर बन जाती, ख़ुद आं हज़रत उसमें आज़ादी से नमाज़ न पढ़ सकते थे, कभी कोई बदमाश आप पर ऊंट की ओझड़ी डाल देता, कभी कोई शरारती आप के गले में मोटी चादर डाल कर इस तरह ऐंठता कि आप का दम घुटने लगता, मुसल्मान मर्दों और औरतों की एक जमा-अत इसलिये मक्का छोड़कर हब्शा चली गई कि वह मक्का में आज़ादी से इस्लाम पर अमल न कर सकती थी, जो मुसल्मान मक्का में रह गये थे उनका और आं हज़रत का बाईकाट कर दिया गया, आपको तीन साल तक मुसल्मानों के साथ नज़र बन्दों की तरह एक पहाड़ की घाटी में गुज़ारना पड़ा।

जब आप मक्का वालों से नाउम्मीद हो गये तो उस इलाक़े के दूसरे बड़े शहर 'ताएफ़' गये, और वहां के रईसों को इस्लाम की

दावत दी और उनसे मदद चाही, उन्होंने आप के साथ बहुत बुरे सुलूक किये, गुण्डों और बद मआशों को मुक़र्रर कर दिया, जिन्होंने आप की फबती उड़ाई, और पथराव करके आपको लुहू लुहान कर दिया। आप वहां से मक्का चले आये। इतना होने पर भी आप अपना काम करते ही रहे, अरब में जहां सालाना मेले लगते और हज के दिनों में जब सारे अरब के लोग मक्का आते, आप उनको इस्लाम की दावत देते, अबू जहल और अबू लहब वग़ैरह लोगों को बहकाते, कहते—"लोगो! इस शख़्स की बात न मानना, यह अपने बाप दादा के दीन से फिर गया है," और आपको ढेले पत्थर भी मारते।

एक साल हज के मौक़ा पर मदीना के कुछ लोगों को आप ने इस्लाम की दावत दी और वह मुसल्मान हो गए। दूसरे साल मदीना के कुछ और लोग भी हज को आये, और मुसल्मान हुए। मक्का के लोगों का ज़ुल्म बढ़ता ही जा रहा था, मदीने के लोगों से बात चीत हुई, और यह तय हो गया कि आँ हज़रत मुसल्मानों को लेकर मदीना चले जायें, ख़ुदा की भी यही मर्ज़ी थी। तेरह बरस की लम्बी मुद्दत तक मक्का वालों को समझाने और उनके हाथ से हर तरह की मुसीबतें उठाने के बाद आप मक्का से मदीना चले गये, इसी को हिज्रत कहते हैं, यानी दीन की की राह में वतन छोड़ कर दूसरी जगह चले जाना।

मदीना में पूरी एक क़ौम इस्लाम की मदद के लिये मिल गई, जो 'अन्सार' यानी इस्लाम की मददगार कहलाई। मक्के के लोगों ने मदीना पर चढ़ाई की, मुसल्मानों को भी ख़ुदा की तरफ़ से मुक़ाबले और हिफ़ाज़त की इजाज़त मिल चुकी थी, 'बद्र' नामी मक़ाम पर मुसल्मानों में और मक्का के लोगों में जंग हुई, मुसल्मानों की तादाद भी कम थी और उनके पास लड़ाई और रसद का सामान भी पूरा न था, फिर भी ख़ुदा की तरफ़ से मदद का जो वादा होता आ रहा था वह पूरा हुवा, मक्का के बहुत से लोग मारे गए, और गिरफ़्तार हुए,

मरने और गिरफ़्तार होने वालों में बड़े बड़े सर्दार भी थे, अबू जहल भी इसी लड़ाई में मारा गया। दूसरे साल फिर मुसल्मानों और मक्का वालों में एक बड़ी लड़ाई हुई जो 'उहुद' की लड़ाई क नाम से मश्हूर है। हिज्रत के पाँचवें साल मक्का के लोगों ने अरबों का बहुत बड़ा लश्कर जमा करके, जिन में मदीना के यहूदी भी शामिल थे, इस हौस्ले से मदीने पर हमला किया कि वह इस्लाम और मुसल्मानों को मिटा कर रहेंगे, लेकिन इस हमले में भी उनको कामयाबी नहीं हुई और वह नुक़सान उठा कर वापस चले गये।

दूसरे साल आँ हज़रत ने सहाबा को लेकर 'उमरा' (छोटे हज) के लिये मक्का का सफ़र किया, लेकिन मक्का के लोगों ने आगे बढ़ कर एक मक़ाम पर जो 'हुदैबिया' कहलाता है आप को रोक दिया। बहुत सी बात चीत के बाद दोनों फ़रीक़ में सुल्ह हुई, और तय पाया कि इस साल आँ हज़रत मदीना लौट जायें, आइन्दा साल आ कर उमरा करेंगे। इस सुल्ह नामा के मुताबिक़ आँ हज़रत वापस लौट गए।

अपनी क़ौम की तरफ़ से कुछ मुहलत मिली तो आँ हज़रत ने रूम, ईरान मिस्र हब्शा वग़ैरह के बादशाहों के पास इस्लाम की दावत के ख़त भेजे, ख़तों को लेकर उन बड़े बड़े देर्बारों में जाने वाले वह मुसल्मान थे जिन क बदन पर साबित कपड़े भी न थे, लेकिन ख़ुदा के उन सच्चे बन्दों ने बे झिझक जाकर ख़ुदा के रसूल का पैग़ाम पहुंचाया।

मक्का के लोगों ने हुदैबिया की सुल्ह को तोड़ डाला, आं हज़रत को इसकी ख़बर मिली तो आपने मक्का पर चढ़ाई की, यह हिज्रत का आठवां साल था, ख़ुदा ने अपने पैग़म्बर से दुश्मनों पर फ़त्ह देने का जो वादा किया था उसके पूरा होने का वक़्त आ चुका था, मक्का पर आं हज़रत का क़ब्ज़ा हो गया, मक्का के बड़े बड़े सर्दार जो बीस बरस से आप के साथ दुश्मनी कर रहे थे और जिन्होंने आप के और इस्लाम के मिटाने में कोई कसर उठा न रखी थी, हारे हुए दुश्मन

की हैसियत से आप के सामने हाज़िर हुए, लेकिन आं हज़रत इतने रहम दिल और दरगुज़र (क्षमा) करने वाले थे कि आपने उनसे किसी तरह का बदला नहीं लिया, कोई सख़्त बात भी नहीं कही, सबको बिल्कुल मुआफ़ कर दिया।

मक्का के बाद ताएफ़ रह गया, वहां के लोग बड़े दावे के साथ लड़ने पर तय्यार हुए, लेकिन वह भी हार गए, पूरे अरब की आंखें मक्का वालों पर लगी हुई थीं, उनके हार मान लेने के बाद पूरे अरब को यक़ीन हो गया कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह के सच्चे रसूल हैं इस्लाम ख़ुदा का सच्चा दीन और क़ुर्आन ख़ुदा की सच्ची किताब है, ख़ुदा ने अपने पैग़म्बर की मदद और इस्लाम की फ़त्ह का जो वादा किया था वह पूरा हो गया, इसलिए अरब के कोने कोने से गरोह के गरोह मदीना आने और मुसल्मान होने लगे।

इस सूरह में इन्हीं हालात की तरफ़ इशारा करके आं हज़रत से फ़र्माया गया है कि आप जिस काम पर मुक़र्रर हुए थे वह पूरा हो गया, ख़ुदा की मदद आ गई, मक्का फ़तह हो गया, लोग आ आ कर मुसल्मान हो रहे हैं, अब वह दिन क़रीब है कि ख़ुदा आपको अपने पास बुलाले, इसलिये अब आप ख़ुदा के एहसानों का शुक्र अदा करने के लिये तारीफ़ और पाकी के साथ उसको याद कीजिये और मुसल्मानों से दीन की ख़िदमत और ख़ुदा की हुक्म बर्दारी में जो कमी और कसर रह गई हो उसके बारे में ख़ुदा से बख़्शिश की दुआ कीजिये, ख़ुदा और बन्दे का तअल्लुक किस क़िस्म का है और इस्लाम ने उसको क्या अहमियत दी है इसका अन्दाज़ा इससे हो सकता है कि आं हज़रत और आप के सहाबा की बीस साल की लगातार क़ुर्बानियों और जां निसारियों पर भी यह हिदायत की जा रही है कि आप ख़ुदा से मुआफ़ी और बख़्शाइश मांगिये, बन्दा सब कुछ करने के

बाद भी ख़ुदा की बन्दगी का हक़ अदा नहीं कर सकता, वह अपनी बन्दगी की क़बूलियत के लिये भी उसका मुहताज ही रहेगा।

कुछ लोगों के दिलों में एक खटक पैदा हो सकती है, उसका दूर कर देना भी ज़रूरी है। यह ख़ियाल गुज़र सकता है कि जब आँ हज़रत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ख़ुदा के सच्चे रसूल थे तो ख़ुदा ने शुरू ही से आप की और आप के सहाबा की मदद क्यों नहीं की जो बीस बरस तक आप को तक्लीफ़ें और मुसीबतें न उठानी पड़तीं। बात यह है कि ख़ुदा ने दुन्या को इम्तेहान की जगह बनाया है, यहां अच्छे और बुरे दोनों रास्ते इन्सान को दिखा दिये गये हैं, और इन्सान को आज़ादी देदी गई है कि वह जिस नतीजे को पसंद कर के जो रास्ता चाहे इख़्तियार करे। अगर ख़ुदा अपने पैग़म्बरों और उनके मानने वालों की बेग़ैर किसी आज़माइश ही के मदद कर दिया करता और उनके दुश्मनों को सज़ा दे दिया करता तो फिर आज़माइश आज़माइश न रह जाती, खुला हुआ फ़ैस्ला हो जाता, फिर हर शख़्स मजबूर हो जाता कि वह सर झुका कर पैग़म्बरों के पीछे होले, और यह बात उस मस्लहत के ख़िलाफ़ थी जिसके मुताबिक़ यह दुन्या बनाई गई है, यहां ख़ुदा के पैग़बरों और उनके साथियों ही की ज़िन्दगी तो इस बात के लिये नमूना होती है कि किस तरह हर क़िस्म की तक्लीफ़ों और मुसीबतों को बर्दाश्त करके हक़ और सच्चाई पर क़ाएम रहना चाहिये, और ख़ुदा के हां जो दर्जे और इनूआम हैं वह हक़ और सच्चाई के लिये तक्लीफ़ और मुसीबत उठाने ही पर मिलते हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

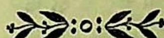
इज़ा जाअ नसरुल्लाहि वल्फ़तहु. (१) व रऐ तन्नास यद्ख़ुलून फ़ी दीनिल्लाहि अफ़्वाजन् (२) फ़सब्बिह् बिहम्दि रब्बिक वस्तग़फ़िर्हु इन्नहू कान

तव्वाबा (३)

तर्जुमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेह्रबान बहुत रह्म वाला है।

(ऐ पैग़म्बर) जब अल्लाह की मदद आ गई और फ़त्ह (हासिल हो गई) [१] और तुमने लोगों को देख लिया कि वह ग़ोल के ग़ोल अल्लाह के दीन (इस्लाम) में दाख़िल हो रहे हैं [२] तो अपने पर्वरदिगार की तारीफ़ के साथ उसकी पाकी बयान करो और उससे माफ़ी मांगो, बेशक वह बड़ा माफ़ करने वाला है [३]



३४—सूरः लहब

(मक्के में उतरी और इसमें ५ आयतें हैं)

ज़रूरी तशरीह

सूरह 'अलक़' में बताया जा चुका है कि अबू लहब हज़रत पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का चचा था मगर आप से सख़्त दुश्मनी रखता था। जब आप लोगों को ख़ुदा का पैग़ाम सुनाते तो आप पर पत्थर फेंकता, कहता लोगो! इस शख़्स की बात न सुनो, यह झूटा बेदीन है।

एक बार आं हज़रत ने सफ़ा पहाड़ पर चढ़ कर मक्का के लोगों को पुकारा, लोग जमा हो गए, तो आपने लोगों को ख़ुदा की इबादत व बन्दगी की दावत दी और उनको क़ियामत के अज़ाब से डराया। लोगों में अबू लहब भी था, आपकी बात सुनकर बोला—"तुम बर्बाद हो जाओ" क्या तुमने हमको इसीलिये बुलाया था!

जब उस को ख़ुदा के अज़ाब से डराया जाता तो कहता अगर आख़िरत का अज़ाब सच है तो भी कुछ पर्वा नहीं, मेरे पास बहुत माल औलाद है इन सबको बदले में देकर अज़ाब से छूट जाऊंगा ।"

अबू लहब की बीबी का नाम 'उम्मे जमील' था, मालो दौलत होने पर भी वह जंगल जाती और लकड़ियां चुन लाती, अबू लहब को तरह वह भी आं हज़रत की बड़ी दुश्मन थी, जंगल से कांटे लाकर आं हज़रत के रास्ते में डाल देती ताकि आते जाते आपको तक्लीफ़ पहुंचे ।

इस सूरह में इन्हीं बीबी शौहर की ख़राबी की ख़बर दी गई है । ख़ुदा ने फ़रमाया कि अबू लहब के हाथ टूट गए यानी उसकी बर्बादीय क़ोनी है उसको अपने माल पर बड़ा ग़ुरुर है लेकिन उसका माल उसे बर्बादी से बचा नहीं सकता । चुनांचि दुन्या में तो वह इस तरह बर्बाद हुआ कि बद्र की लड़ाई के सातवें रोज़ उसके बदन पर एक ज़हरीला दाना निकला, बीमारी की छूत के डर से घर वालो ने उसे अलग डाल दिया वह उसी हालत में मर गया, तीन रोज़ तक उसकी लाश सड़ती रही इसके बाद घर वालों के हुक्म से हब्शी ग़ुलामों ने गड़हा खोद कर उसमें लकड़ी से लाश ढकेल दी और उसे पत्थर से भर दिया, अबू लहब की बीबी भी इस तरह मरी कि जिस रस्सो से वह जंगल से लकड़ी बांधकर लाया करती थी, एक रोज़ वही उसके गले का फन्दा साबित हुई उसीसे उसका दम निकल गया. यह सज़ा तो दोनों को दुन्या में मिली, हो सकता है कि दोज़ख में भी उस औरत के गले में आग की रस्सी लिपटी हुई हो ।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम् ।

तब्बत् यदा२ अबी लहबिंव्व तब्ब् (१) मा२ अग़्ना अन्हु मालुहू व मा कसब् (२) सयस्ला नारन् जात लहबिंव् (३) वम्रअतुहू हम्मालतल् हतब् (४)

फ़ी जीदिहा ह़ब्लुम् मिम्मसद् (५)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत ही रहम वाला है।

अबू लहब के हाथ टूटें (यानी वह बर्बाद हो) और (समझलो) वह बर्बाद हो गया [१] न उसके माल ही ने उसे कुछ फ़ायदा पहुँचाया न उसी चीज़ ने जो उसने कमाई [२] वह जल्द ही लपटें मारने वाली आग में दाख़िल होगा [३] और उसके साथ उसकी बीवी भी जो ईंधन ढोने वाली है [४] उसकी गर्दन में खजूर की बटी हुई रस्सी होगी [५]



३५—सूरः इख़्लास

(मक्का में उतरी और इसमें ४ आयतें हैं)

ज़रूरी तशरीह

इस सूरह के बहुत से नाम हैं, जिसमें से कुछ यह हैं— सूरः तौहीद, सूरः निजात, सूरः म.अरिफ़त, सूरः समद, सूरः बरअ़त, सूरः नूर, लेकिन सब से मशहूर नाम सूरः इख़्लास है, इख़्लास के म.अनी हैं ख़ालिस करना, और ख़ालिस ऐसी चीज़ को कहते हैं जिसमें कोई खोट और मिलावट न हो। इस सूरह के सूरः इख़्लास कहने की वजह यह है कि यह सूरह ख़ुदा के बारे में ऐसे ख़ालिस और पाक साफ़ अक़ीदे की तालीम देती है जिसमें किसी क़िस्म की बद अक़ीदगी की आमेज़िश और मिलावट नहीं है, जो शख़्स इस सूरह के मुताबिक़ ख़ुदा को मानता है उसका अक़ीदा हर क़िस्म के ग़लत और बुरे अक़ीदे की आमेज़िश और मिलावट से पाक हो जाता है।

दीन की सब से बड़ी बुन्याद ख़ुदा की ज़ात और उसकी सिफ़ात (अस्तित्व और गुणों) के बारे में ठीक ठीक अक़ीदा है। इस्लाम और दूसरे मज़हबों में एक बुनयादी फ़र्क़ यह है कि ख़ुदा के बारे में जैसे साफ़ और बे लाग अक़ीदे की तालीम इस्लाम देता है दूसरे मज़हब नहीं देते, जो लोग भी ख़ुदा को मानते हैं वह किसी न किसी सूरत में इस बात को ज़रूर मानते हैं कि ख़ुदा अकेला है, उसी ने सब को पैदा किया है, कोई उसकी बराबरी का नहीं है, लेकिन इन्सानी समझ बूझ का यह कितना अजूबा पन है कि इस्लाम के सिवा कोई ऐसा मज़हब नहीं जिस ने इस सब से सीधी सादी और सब की मानी हुई बात में गड़ बड़ न कर दिया हो, और घुमा फिरा कर दूसरों को ख़ुदा का शरीक न बना दिया हो, इस्लाम से दूसरे मज़हबों की लड़ाई की सब से बड़ी बुन्याद यही है कि इस्लाम ख़ुदा ही को क्यों मानता है? जिन को वह ख़ुदा या ख़ुदा का शरीक मानते हैं उनको भी क्यों नहीं मानता? हिन्दोस्तान में अज़ान और नमाज़ पर सैकड़ों फ़साद हो चुके हैं, अज़ान क्या है? एक ख़ुदा की इबादत का बुलावा, नमाज़ क्या है? एक ख़ुदा की इबादत, और एक ख़ुदा को सब मानते हैं, और एक ख़ुदा की इबादत करने पर लड़ते भी हैं, इससे ज़्यादा तअज्जुब और अफ़सोस की बात और क्या हो सकती है!

अरब के लोगों का भी इसी बात पर झगड़ा था कि इस्लाम यह क्यों कहता है कि देवी देवताओं को न पूजो, ख़ुदा ही की इबादत करो, आख़िर वह ख़ुदा है कैसा? उसकी सिफ़ात (गुण) क्या हैं! आँ हज़रत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से बड़े दावे के साथ यह सवाल किया गया था, उन्हीं के जवाब में यह सूरह उतरी।

इस सूरह में अल्लाह का नाम लेकर उसके बारे में पांच बातें बताई गई हैं, अल्लाह के मानी माबूद (पूज्य) के हैं, और जो माबूद है उसी के लिए सारी बड़ाइयां हैं, वही सब से बड़ा हाकिम है और उसी का हुक्म सब हुक्मों के ऊपर है।

अल्लाह के बारे में जो पांच बातें ऊपर बताई गई हैं वह यह हैं—

१—वह सबसे निराला और अकेला है, उसके सिवा और कोई ख़ुदा नहीं है, वह अपनी ज़ात (व्यक्तित्व) के लिये किसी का मुहताज नहीं, जब कुछ न था जब भी वह मौजूद था, और जब कुछ न होगा तब भी वह मौजूद रहेगा।

२—वह सब का मक़सूद (उद्देश्य) सबका सहारा और सबका ठिकाना है और ख़ुद वह सबसे बेपर्वा है, उसको किसी के सहारे की ज़रूरत नहीं।

३—ख़ुदा किसी का बाप नहीं, लेकिन अल्लाह का जो मफ़्हूम है वह बाप से भी बढ़ कर है।

४—वह किसी का बेटा नहीं है क्योंकि जो सबका ख़ालिक़ और सबका बनाने वाला है वह किसी का बेटा कैसे हो सकता है, यह उसकी शान के ख़िलाफ़ है।

५—कोई उसकी बराबरी का नहीं, वह ज़ात बिरादरी के झगड़े से पाक है, सब मख़्लूक़ हैं वही ख़ालिक़ है, सब मुहताज हैं वही ग़नी है, सब आबिद हैं, वही माबूद है, सब मर मिट जाने वाले हैं, वही बाक़ी रहने वाला है, कोई उसके जोड़ का कैसे हो सकता है ?

बिस्मिल्ला हिर्रह्मा निर्रहीम्

क़ुल् हुवल्लाहु अहद् (१) अल्लाहुस्समद् (२) लम् यलिद् वलम् यूलद् (३) वलम् यकुल्लहू कुफ़ुवन् अहद् (४)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम वाला है।

(ऐ पैग़म्बर !) कह दो कि वह अल्लाह एक है [१]

अल्लाह बे पर्वा है [२] न कोई उसकी औलाद है और न वह किसी की औलाद है [३] और न कोई उसकी बराबरी का है [४]



३६—सूरः फ़लक़

(मदीना में उतरी और इसमें ५ आयतें हैं ।)

ज़रूरी तश्रीह

बहुत सी चीज़ें ऐसी हैं जिनमें अच्छाइयों के साथ बुराइयां भी होती हैं। और उनसे आदमी को नफ़ा और आराम के साथ नुक़सान और तक्लीफ़ भी पहुँचती रहती हैं। उनमें से कितनी चीज़ें ऐसी हैं जिनको आदमी देखता है और उनसे बच जाता है, कितनी चीज़ों का उसे पता नहीं चलता और उनकी बुराइयों से उसे नुक़सान और तकलीफ़ पहुंच जाती है, सारी चीज़ें ख़ुदा की पैदा की हुई हैं और उसी के अख़्तियार में हैं, इस लिये इन्सान को तालीम दी गई है कि वह सारी बुरी चीज़ों की बुराई से ख़ुदा की पनाह (श्रण) मांगता रहे।

हर चीज़ अपना एक असर रखती है, हर्फ़ों और लफ़्ज़ों में भी असर होता है, हर्फ़ों और लफ़्ज़ों के बुरे असरात का नाम जादू और सिहर है। हसद (ईर्षा) कहने को मामूली चीज़ है, लेकिन जब किसी शख़्स, समाज या क़ौम में हसद की आग भड़क उठती है, तो अम्न, इत्तिहाद, मुहब्बत और दोस्ती सबको जलाकर रख देती है। इसलिये इन दोनों चीज़ों से ख़ासतौर पर पनाह मांगना सिखाया गया है।

इस तालीम से एक खास बात यह मालूम हुई कि इन्सान ख़ुदा की मदद और हिफ़ाज़त से बेपर्वा होकर अम्न और सलामती से नहीं रह सकता।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम् ।

क़ुल् अऊज़ु बि रब्बिल् फ़लक़ि (१) मिन् शर्रि मा ख़लक़ (२) वमिन्शर्रि ग़ासिक़िन् इज़ा वक़ब् (३) वमिन् शर्रिन्नफ़्फ़ासाति फ़िल् उक़द् (४) व मिन् शर्रि हासिदिन् इज़ा हसद् (५)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम वाला है।

(ऐ पैग़म्बर !) कह दो कि मैं सुब्ह के पर्वरदिगार की पनाह मांगता हूँ [१] उन सारी चीज़ों की बुराई से जो उसने पैदा की हैं [२] और अँधेरी रात की बुराई से जब वह आ जाये [३] और (गंडे की) गिरहों पर (मंतर पढ़ कर) फूंकने वाली औरतों की बुराई से [४] और हसद करने वाले की बुराई से जब वह हसद करे [५]



३८—सूरः नास

(मदीना में उतरी और इसमें ६ आयतें हैं)

ज़रूरी तश्रीह

सूरह फ़लक़ में जिन चीज़ों की बुराई से पनाह मांगने की तालीम दी गई है उन सब की बुराईयों से बढ़ी हुई शैतान की बुराइयां हैं। इसी ख़ुसूसियत (विशेषता) की बिना पर उसकी बुराइयों से ख़ास तौर पर पनाह मांगने की तालीम दी गई है।

क़ुर्आन शरीफ़ में बताया गया है कि इन्सानी ज़िन्दगी आज़माइश (परीक्षा) और जांच की ज़िन्दगी है, उसके चारों तरफ़ अच्छाइयां भी हैं और बुराइयां भी, उसके सामने ख़ुदा की तालीम और हिदायत भी है और शैतान का मक्र और फ़रेब भी। इन्सान बहुत से कामों का इख़्तियार भी रखता है और बहुत से कामों में बेबस भी है, क़ुर्आन में बार बार ख़बर्दार किया गया है कि शैतान इन्सान का दुश्मन है, अगर इन्सान ख़ुदा के कहने पर चलेगा तो निजात और भलाई पाएगा, और शैतान की बात मानेगा तो तबाह और बर्बाद हो जायेगा, इन्सान की शख़्सी (व्यक्तिगत) ज़िन्दगी को देखिए या इज्तेमाई (समाजी) ज़िन्दगी, को वह नेकी और बदी की एक कश्मकश और जंग है। इस जंग को जीतने के लिये ज़रूरी है कि आदमी शैतान की बुराइयों से ख़ुदा की पनाह (शरण) मांगता रहे।

वह इन्सान भी शैतान ही हैं जो रिश्ते नाते के नाम पर, मज़्हब और फ़िर्क़ें के नाम पर, मुल्क और क़ौम के नाम पर इन्सानों को नेकी, इन्सानियत और ख़ुदा परस्ती के रास्ते से हटा कर बेईमानी, बेइन्साफ़ी, ज़ुल्म, फ़साद, कुफ़्र और शिर्क की तरफ़ बुलाते हैं।

यह क़ुर्आन शरीफ़ की आख़िरी सूरह है, इसमें यह मार्के की बात बताते हुए इस्लाम की सब से बड़ी बुन्यादी बात बता दी है, वह यह कि ख़ुदा इन्सान का रब (पालन कर्त्ता) और माबूद (पूज्य) ही नहीं है वह इन्सानों का बादशाह भी है, यानी इन्सान ख़ुद मुख़्तार नहीं है वह ख़ुदा का नाएब (प्रति निधि) है, इस लिये जिस इन्सान के हाथ में भी हुकूमत का इख़्तियार आए, उसका फ़र्ज़ है कि वह अपना हुक्म न चलाये, ख़ुदा का हुक्म चलाये और ख़ुद भी ख़ुदा ही का हुक्म माने।

कोई बादशाह हो या पार्लीमेन्ट, कोई सद्र (राष्ट्र पति) हो या डिक्टेटर (अधिनायक) अगर वह ख़ुदा के हुक्म की जगह अपना

हुक्म चलाता है तो क़ुर्आन के नज़दीक वह ख़ुदा से बग़ावत करता है, चाहे वह ख़ुदा के मानने का कितना ही दावा करता हो, नमाज़ पढ़ता हो, पूजा करता हो, और ख़ुदा के नाम का वज़ीफ़ा (स्मरण) करता हो।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम।

क़ुल् अऊज़ु बिरब्बिन्नासि (१) मलिकिन्नासि, (२) इलाहिन्नासि (३) मिन् शर्रिल् वस्वासिल् ख़न्नासिल् (४) लज़ी युवस्विसु फ़ी सुदूरिन्नासि (५) मिनल् जिन्नति वन्नास् (६)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रह्म वाला है।

(ऐ पैग़म्बर !) कह दो कि मैं पनाह मांगता हूँ इंसानों के पर्वरदिगार की (१) इंसानों के बादशाह की (२) इन्सानों के मऽबूद (पूज्य) की (३) (दिलों में) बुरा ख़्याल डालने वाले, छिप जानेवाले (शैतान) की बुराई से (४) जो लोगों के दिलों में (बुरे) ख़्याल डालता है (५) (चाहे वह) जिनों में से हो या इन्सानों में से (६)



सूरः फ़ातिहा

(मक्का में उतरी और इसमें ७ आयतें हैं)

यह सूरह अम पारे की नहीं पहले पारे की है, इसी से क़ुर्आन शरीफ़ शुरू होता है, यह तमाम नमाज़ों में बार बार पढ़ी जाती है,

इसके पढ़े बग़ैर नमाज़ नहीं होती। इसलिये अमपारे के साथ इसका देना बहुत ज़रूरी है।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम्

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन् (१) अर्रहमानिर्रहीम (२) मालिकि यौमिद्दीन् (३) ईयाक नऽबुदु व ईयाक नस्तईन् (४) इह्दिनस्सिरातल् मुस्तक़ीम (५) सिरातल्लज़ीन अन्अम्त अलैहिम् (६) ग़ैरिल् मग़्दूबि अलैहिम् वलद्दाऽल्लीन् (७)

तर्जमा

सब तारीफ़ अल्लाह ही के लिये है जो तमाम जहान वालों का परवर्दिगार है (१) बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है (२) जज़ा और सज़ा के दिन का हाकिम है (३) (ऐ अल्लाह !) हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझी से मदद मांगते हैं (४) हमें सीधा रास्ता दिखा (५) उन लोगों का रास्ता जिन पर तूने इनआम फ़र्माया, (६) उन का (रास्ता) नहीं जो तेरे ग़ज़ब में आगये, और न उनका जो सीधे रास्ते से भटक गये (७)

ज़रूरी तशरीह

हदीसों में इस सूरह की बहुत फ़ज़ीलत और बुज़ुर्गी बयान की गई है। इसके बहुत से नाम हैं जैसे असासुल क़ुर्आन सूरह दुआ, सूरह मुनाजात, सूरह सलात; यानी क़ुर्आन की बुन्याद दुआ, प्रार्थना और नमाज़ की सूरह। इसका सबसे मश्हूर नाम फ़ातिहा यानी क़ुर्आन को खोलने वाली या उसका दीबाचा (भूमिका) है, यह सूरह पूरे

क़ुर्आन का निचोड़ है, देखिये—

१—ख़ुदा का अक़ीदा (धारणा)—सारी तारीफ़ें और ख़ूबियां ख़ुदा ही के लिये हैं, वह तमाम जहान वालों का पालने वाला है और मालिक और निहायत रहमोकरम वाला है।

२—क़ियामत और आख़िरत का अक़ीदा-यानी ख़ुदा क़ियामत के दिन का हाकिम है, वह उस रोज़ हर इन्सान को उसके अच्छे और बुरे काम के मुताबिक़ जज़ा और सज़ा देगा।

३—हर तरह के शिर्क का रद, यानी वही इस लायक़ है कि उसकी इबादत और हुक्म बर्दारी की जाये, हर मुसीबत और ज़रूरत में उसी से मदद मांगी जाये, ज़िन्दगी के तमाम सामान और वसीले उसी के इख़्तियार, में हैं।

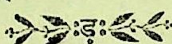
४—'वही' और रिसालत का अक़ीदा, यानी ज़िन्दगी गुज़ारने का सहीह रास्ता ख़ुदा ही के पास है, उसी के बताये हुए रास्ते पर चलने से इन्सान सच्ची राहत और ख़ुशी और सच्चा आराम और इत्मीनान पा सकता है, यही सच्चा दीन और धर्म है।

५—ख़ुदा के बताए हुए ज़िन्दगी के रास्ते पर चलने वाले ख़ुदा के रसूल और उनके पैरव (अनुयायी) जिन पर ख़ुदा का फ़ज़्लो करम हुआ।

६—ख़ुदा की बताई हुई राह के छोड़ देने वाले और और अपनी नादानी से उससे भटक जाने वाले जो ख़ुदा के ग़ज़ब (कोप) में पड़े और उसके फ़ज़्लो करम से महरूम (वंचित) हो गये।

कुछ ग़ैर मुस्लिमों ने सूरह फ़ातिहा को देखकर यह लिख दिया कि यह ख़ुदा का नहीं, आदमी का कलाम है। उनको यह बात मालूम नहीं कि दूसरी चीज़ों की तरह ख़ुदा ने दुआ (प्रार्थना) की भी तालीम दी है, यह सूरह नमाज़ में बार बार पढ़ी जाती है। दुआ के ढंग में होने की वजह से आदमी के दिल पर इसका ख़ास असर

होता है, और ख़ुदा की बड़ाई और बुज़ुर्गी के एहसास (भावना) और उसकी इबादत और बन्दगी के जज़्बे से उसका दिल लबरेज़ हो जाता है।



ख़ात्मा

आप ने पूरा अम पारा पढ़ लिया, हमने दीबाचे में जो बातें लिखी हैं वह पूरे क़ुर्आन शरीफ़ के बारे में हैं और अम पारा क़ुर्आन शरीफ़ का सिर्फ़ एक पारा है, लेकिन आपने देख लिया कि पूरे क़ुर्आन शरीफ़ के बारे में जो बातें लिखी गई हैं वह सब अमपारे में भी मौजूद हैं, क़ुर्आन शरीफ़ की मिसाल एक दरख़्त की सी है, दरख़्त जहां तक भी बढ़ता और फैलता चला जाता है, उसकी डालियां, पत्ते, फूल और फल एक ही तरह के होते हैं, उसकी किसी भी डाली को देख कर आदमी पहचान ले सकता है कि वह किस दरख़्त की है, इसी तरह क़ुर्आन शरीफ़ के किसी हिस्से को भी देखा जाये साफ़ मालूम हो जायेगा कि यह क़ुर्आन शरीफ़ है।

क़ुर्आन शरीफ़ की तालीम से आप को यह बात अच्छी तरह मालूम हो गई कि क़ुर्आन किसी ख़ास नस्ल, किसी ख़ास क़ौम, किसी ख़ास मुल्क, या किसी ख़ास ज़माने के लिये नहीं है, बल्कि सूरज और चांद की रोशनी की तरह यह सारी दुन्या और तमाम ज़माने के इन्सानों के लिये है। हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अरब में पैदा हुए, और क़ुर्आन शरीफ़ वहीं उतरा और वहीं के लोगों ने इसे पहले क़ुबूल किया, इन बातों की बिना पर क़ुर्आन शरीफ़ को ख़ास अरब के लिये या उस ज़माने के लिये जब वह उतरा ख़ास नहीं ठहराया जा सकता, यह जब भी उतरता और जहां भी उतरता एक ही ज़माने और एक ही मुल्क में उतर सकता था, इस लिये देखने की चीज़ यह

नहीं है कि वह कब उतरा और कहां उतरा ? देखना यह चाहिये कि उसकी तालीम क्या है । क़ुर्आन नस्ल, ख़ान्दान, मुल्क और वतन की बिना पर इन्सानीयत की तक़्सीम का जाएज़ नहीं ठहराता, वह अक़ीदा और अमल के एतिबार से इन्सान की दो क़िस्में क़रार देता है, एक क़िस्म नेक इन्सानों की जो ख़ुदा और उसके भेजे हुए तरीक़े के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुजारने वाले हैं दूसरी क़िस्म उन बदकार लोगों की जो ख़ुदा का इन्कार करने वाले हैं और ख़ुदा के बताये हुए तरीक़े पर चलने की जगह अपनी ख़्वाहिशों के पीछे चलने वाले और दुन्या में बद अम्नी और फ़साद फैलाने वाले हैं ।

क़ुर्आन की तालीम का ख़ुलासा है—

(१) सारी काएनात (ब्रह्माण्ड) का एक ख़ुदा और एक हाकिम है ।

(२) इन्सानी ज़िन्दगी का एक क़ानून जिसे लेकर क़ुर्आन आया है, और जो बुन्यादी तौर पर तमाम दुन्या की ख़ुदाई किताबों के मुताबिक़ है ।

(३) एक इन्सानियत जिस में नस्ल, क़ौम, मुल्क और वतन की बिना पर कोई तक़्सीम नहीं ।



हिन्दी में इस्लामी किताबें

(१) अम पारा (मानीदार) (२) पंज सूरह (मानीदार) (३) मुनाजात मक़्बूल (४) तालीमाते इस्लाम (५) पैग़म्बरी दुआयें (६) अक़ायद नामा (७) इस्लाम की बुन्यादी तालीम (८) हमारे रसूल (९) रसूलुल्लाह का दीदार (१०) मुअजज़ाते रसूल (११) प्यारे नबी की प्यारी बातें (१२) रसूल के सहाबा (१३) चार यार (१४) खातूने जन्नत (१५) क़ससुल् अंबिया (२३) तज़्केरतुल् औलिया।

ऊपर की सारी किताबों की ज़बान 'क़ुआन का परिचय' से भी ज़्यादा सादा और आसान है। मगर नीचे लिखी हुई किताबें मुसल्मानों और ग़ैर मुस्लिमों सब के लिये लिखी गई हैं इसलिये इनकी ज़बान हिन्दी रखी गई।

इस्लाम का परिचय १॥) इस्लाम और ग़ैर मुस्लिम विद्वान ३) रसूल का परिचय २।) रसूलुल्लाह का जीवन चरित्र ५) रहमतुल् लिल् आलमीन ४) सलामती का रास्ता ।-) नबूवते मुहम्मदी का अक़्ली सबूत ।-) दोनें हक़ ।=) इस्लाम में ज़बरदस्ती नहीं ।-) शान्ति पथ प्रदर्शन ॥) इस्लाम प्रबोधनी २)

नीचे की सात किताबें "इस्लाम और ग़ैर मुस्लिम विद्वान" और "इस्लाम का परिचय" के अलग अलग हिस्से हैं।

(१) पैग़म्बरे इस्लाम की अज़्मत ॥।) (२) पैग़म्बरे इस्लाम की सदाक़त ।-) (३) इस्लामी तालीमात की सदाक़त ॥) (४) इस्लाम के आलमगीर असरात ।-) (५) इस्लाम के बुन्यादी अक़ायद ॥।) (६) इस्लामी अक़ीदों के असरात ।-) (७) क़ुआन और सीरत यूरुप में ।)

इस्लामी साहित्य सदन, रामनगर, (बनारस स्टेट)

मुद्रक—काशी राज मुद्रणालय, रामनगर (बनारस)।
प्रकाशक—इस्लामी साहित्य सदन, रामनगर बनारस स्टेट।

بغیر اُستاد ہندی سیکھنے کا سب سے بہتر نصاب

مرتبہ :- مولانا ابو محمد امام الدین رام نگری

ہندی ماشٹر حصہ اول ۴؍ حصہ دوم نثر ۹؍ حصہ دوم نظم ۶؍ حصہ سوم ۱۲؍ گرامر اور نثر
و نظم مضامین مع حل لغات، ہندی اُردو لغت جدید ایڈیشن مجلد ... تین روپیہ
اُردو ہندی لغت ... دفتری مراسلات و کاغذات سرکاری دفتروں اور کچہریوں
کے حکام اور محرروں کیلئے اصول اور قواعد اردو میں نمونے ہندی میں مع حل لغات دو روپیہ
انگریزی ہندی اُردو لغت ... اسلام کا پریچیہ یعنی تعارف ... اسلام اور غیر مسلم
ودوان (اسلام کے متعلق غیر مسلم علمائے عالم کے افکار و خیالات) مجلد ... ستیہ دھرم
(دین حق) ... شانتی مارگ ...

اس نصاب کے ذریعہ اُردو داں بغیر اُستاد دو تین ہفتے میں ہندی سیکھ لیتے ہیں ہر حصہ ملک کے
سرکاری حکام و کلاء، اساتذہ، مدیران جرائد، ملازمین دفاتر، طلبہ اور عوام فائدہ اٹھا رہے ہیں۔

ادارہ اسلامی ساہتیہ رام نگر بنارس